Presented by: https://jafrilibrary.com

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

इस्लाम से जुड़े सवाल

लेखक

मोहम्मद जवाद चिर्री

अनुवाद (उर्दू)

प्रोफ़ेसर शाह मोहम्मद वसीम

अनुवाद (हिन्दी)

मु० र० आबिद

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

जुमला हुक़ूक़ बिहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़

नाम किताबः इस्लाम से जुड़े सवाल

मुसन्निफ़ः मोहम्मद जवाद चिर्री

अनुवाद (उर्दू): प्रोफ़ेसर शाह मोहम्मद वसीम, अलीगढ़, हिन्दुस्तान

अनुवाद (हिन्दी): मु० र० आबिद

प्रकाशन वर्षः 2017

संख्याः 1000

कम्पोज़िंगः आइडियल कम्प्युटर्स प्वाइंट, चौक, लखनऊ (+91-9935025599)

प्रकाशकः

क़ीमतः

मिलने के पते

1-

2-

3-

4-

5-

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सूची

1- दीबाचा 5

2- पेशे गुफ़्तार 8

3- पेश लफ़्ज़..... डॉक्टर विल्सन एच ग्योरटन 11

4- मुक़द्दमा..... अज़ मुसन्निफ़ 14

5- इस्लाम में बहस-मुबाहिसे की आज़ादी 18

6- इस्लाम क्या है? 29

7- इस्लाम इतना मक़बूल क्यों है? 37

8- इस्लाम दुनिया की तख़्लीक़ को कैसे देखता है? 54

9- दुनिया का सिरजनहार (ख़ालिक़) 63

10- एक ही पैदा करने वाला 74

11- ईसा[अ०] पर इस्लाम और ईसाई मज़हब में कहाँ-कहाँ इख़्तेलाफ़ है? 83

12- ख़ुदा का न्याय (अद्ल) 97

13- आज़ादी बनाम मजबूरी 109

14- पैग़म्बर[स०]: इतिहास (History) में 123

15- हमें पैग़म्बरों की ज़रूरत क्यों है? 137

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

16- पैग़म्बर मोहम्मद[स०] 153

17- कुछ और सुबूत उन (मोहम्मद[स०]) की पैग़म्बरी के और क़ुरआन की मुस्तक़बिल (Future) के बारे में ख़बर 162

18- और गवाहियाँः इस्लाम के आने वाले दिनों की बात 172

19- पैग़म्बर[स०] और (उनकी) पैग़म्बरी की पेशीनगोई 179

20- ईसाई मज़हब की फ़तह की पेशीनगोई 193

21- कुछ और गवाहियाँः नामालूम सच्चाईयों का खुलना 198

22- इंजील (बाइबिल) मोहम्मद[स०] की तस्दीक़ करती है 203

23- इस (ज़िन्दगी) के बाद 211

24- इस्लाम में पाक अहकामात (Commandments) 229

25- मुसलमानों के माबैन तफ़रक़ा 241

26- इस्लामी मेल के लिए लेखक की कोशिश 278

27- एलामिया (Declaration) 284

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

दीबाचा

अगर सिर्फ़ एक दयानतदार शख़्स, जो अपनी नज़रिये से आज़ाद होकर इस्लाम को तलाश करता है, जो कि ख़ुदा के दीन में आख़िरी पैग़ाम है, जिसके लिए सारे संसारों के जान वालों को मालिक अल्लाह के आगे जवाब देना हैं, और वह (इंसान, जो) खुली आँखों से और खुले ज़ेहन से (दीन के बारे में) देखता (और समझता है), तो उसे उसका मक़सद हासिल हो जाएगा।

इस्लाम, जो अक़्ल व समझबूझ से मेल खाता है, इसके ज़रिये से इंसान अपनी रूहानी और जिस्मानी तकलीफ़ों से छुटकारा पा सकता है और इसी के ज़रिये (उसे) ख़ुशहाली और रूहानी सुकून हासिल हो सकता है, लिहाज़ा इंसान को (दीन के बारे में) स्टडी करना चाहिए, ख़ासकर उसे इसके उसूलों के बारे में पढ़ना चाहिए, इसी तरह उसकी शाख़ों के बारे में भी, यह जानने के लिए मुसलमानों को क्या करना चाहिए, क्योंकि इस्लाम की रू से पैदा की हुई चीज़ों में इंसान सबसे श्रेष्ठ है। इन्हीं बातों से इंसान के पैदा करने वाले ने उसे इज़्ज़त दी और हर चीज़ को उसके नीचे और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसके कहे पर चलने वाला बना दिया। मगर अल्लाह ने इंसान की इस दुनिया की ज़िन्दगी में अच्छे और बुरे कामों को बता भी दिया, ताकि वह नेक और अच्छे कामों को करे, और उसने इंसान को नुक़सानदेह और हराम कामों से मना किया है। और पैदा करने वाले ने इन सब बातों को फ़रिश्तों और नबियों की ज़बान पर जारी किया, जो अच्छी सुहावनी ख़बरों को बताने वाले हैं और ग़लत बातों से आगाह करने और मना करने वाले हैं। ताकि इंसान को जन्नत मिले, अल्लाह के रास्ते पर चलने और उसके हुक्मों को मानने और उन पर अमल करने की वजह से। लेकिन अगर इसके ख़िलाफ़ अक़ीदा (विश्वास) और काम अपनाया गया और अल्लाह के हुक्मों के ख़िलाफ़ चला गया और मनमानी की गयी, तो फिर जहन्नम की आग है। बेशक! (अल्लाह के बताए हुए) नेक रास्ते पर चलकर आसानी, सुकून और ख़ुशी मिलती है और सलाहियतें और ताक़त ज़ाहिर होने के (साथ-साथ) इंसान की ख़िदमत होती है, सब को बेइन्तेहा फ़ायदा हासिल होता है। और अच्छे काम होते हैं, जो इंसानियत का मंशा है। इस तरह हर इंसान समाज में बेहतरीन बन जाता है।

यह किताब शेख़ मोहम्मद जवाद चिर्री की लिखी है, जो अमेरिका में रहते हैं। जिन्होंने नजफ़े अशरफ़ में तालीम ली, और इस्लाम और ईमानी भाइयों की ख़िदमत का बेड़ा उठाया है, ताकि वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस्लाम को अक़्ल की रौशनी में समझ सकें। इस किताब में उनकी डॉक्टर विल्सन से क़ुरआन की आयात की रौशनी में गुफ़्तुगू शामिल है।

लिहाज़ा क़ारेईन! आपके हाथ में यह किताब एक मशहूर व अहम किताब है, जिस से अमेरिका, यूरोप और दूसरे मुमालिक में रहने वाले फ़ैज़याब हुए हैं और जिसकी माँग है। इसको इमाम अली फ़ाउण्डेशन की शाख़ क़ुम (ईरान) ने शाया किया है।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि चिर्री पर बरकतें नाज़िल करे और उनकी इस काविश को क़ुबूल फ़रमाए।

इमाम अली फ़ाउण्डेशन

क़ुम, इस्लामी जमहूरिया ईरान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

पेशे गुफ़्तार

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला मोहम्मदिव् व आलिही

मुख़्तलिफ़ वजहों से बहुत से मुसलमानोंयूरोप, अमेरिका और दूसरे मुल्कों में, जो बुनियादी तौर से ग़ैर मुस्लिम मुल्क हैं, बसते हैं या रहने लगे हैं। इस से मुसलमानों की ग़ैर मुस्लिम लोगों से काम-काज के इदारों, इबादतगाहों और समाजी इदारों में मुलाक़ात होती रहती है। इनके रूबरू होने की वजह से मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर गुफ़्तुगू भी होती है, जैसे कि मज़हबी मामलात पर। इसमें मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम दोनों अपने-अपने अक़ीदे की रू से एक-दूसरे पर सबक़त ले जाना चाहते हैं।

चूँकि बहुत से लोग अस्लन हक़ सत्य तलाश करना चाहते हैं, ख़ुसूसन रूहानी पाकीज़गी और अक़ीदे के मामले में, लिहाज़ा वह अपने ज़माने के लोगों पर अपना असर छोड़ना चाहते हैं। हालांकि वह लोग जो हक़ को गले लगाते हैं, जिनको इंसान को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जानना-पहचानना चाहिए, वही होते हैं, जो छुपा जाते हैं।

शेख़ मोहम्मद जवाद चिर्री उन लोगों में से हैं, जिन्होंने इंसान के बीच बातचीत और तालमेल के मामले में असर छोड़ा है जो भुलाया नहीं जा सकता।

शेख़ चिर्री, जिन्होंने इस्लामी हौज़ा इल्मिया, क़ुम, ईरान में तालीम हासिल की थी, 1950ई० की दहाई में लन्दन से अमेरिका की तरफ़ चले गये और डेटरॉएट (Detroit) में बस गये। इस नये माहौल और नये घर में वह इस्लाम और ईसाइयत की बहस में -डॉक्टर विल्सन एच. ग्योरटेन के साथ- जुड़ गये। 'तसावुलात हौलल इस्लाम' में इन दोनों के बीच होने वाली बहस को क़लमबन्द किया गया है। इस बहस में, जो कुछ हुआ, उसे इस किताब में दयानतदारी और सच्चाई के साथ दर्ज कर दिया गया है, ताकि यह किताब हर हक़ के खोजी और असल अक़ीदे के लिए बेहतरीन हवाले का काम अंजाम दे।

बहुत से मुसलमानों ने और ख़ासकर नौजवानों ने इमाम अली फ़ाउण्डेशन, लन्दन से रुजू किया कि उन्हें मैटर मिल जाए, जिसकी बुनियाद पर वह मुफ़ीद बहसों को कर सकें। फ़ाउण्डेशन ने इस सरज़मीन में कई माहिरों से रुजू किया, उन्होंने बताया कि वह यह किताब, जो चिर्री की लिखी है, बड़े काम की है और मैटर के लिहाज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

से और सबसे अच्छी है। यह किताब अपनी तरह और सीधी गुफ़्तुगू की वजह से बेहतरीन किताब है।

इसलिए हम ने इस्लामिक सेंटर, डेटरॉएट, अमेरिका से इजाज़त तलब की कि इसे दोबारा शाया कर दिया जाए, इजाज़त के लिए उनका शुक्रिया।

आख़िर में हम अल्लाह तआला से दुआगो हैं कि चिर्री पर वह अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाए और उन्हें ख़ुल्दे बरीं में जगह भी! और उनके (क़ाबिले तारीफ़) काम का अज्र भी अता फ़रमाए। आमीन

इमाम अली फ़ाउण्डेशन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बिस्मिल्लाहिर् र्हमानिर रहीम

पेश लफ़्ज़

सदियों पहले, जब कैथोलिक चर्च की ख़िदमत अंजाम देने वाले लोगों ने मुसलमानों को यूरोप से निकाल बाहर किया, तो मोहम्मद[स०] का पैग़ाम भी मग़रिबी दुनिया से (तक़रीबन) मिट गया। अगर ताक़त की यह खींचातानी न हुई होती, तो अरब के Intellectuals और आलिमों जैसे कि हज़रत जवाद चिर्री को मग़रिबी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने की ज़रूरत ज़रा कम होती। इस तरह के लोग वह होते हैं, जो अपने अहले ख़ानदान और दोस्तों को छोड़कर (हिजरत करते हैं), क्योंकि अमेरिका जैसे मुमालिक में उनकी नज़र में इलाहियात के ज़िम्न में सदियों से जो चीज़ें चली आ रही हैं, जिसको वह वाज़ेह तौर पर बताएं कि जिसे अल्लाह ने इंसान के लिए ज़रूरी क़रार दिया है।

मैं उन बहुत से लोगों में से एक हूँ जिन्होंने जनाब मोहम्मद जवाद चिर्री के दर्स से फ़ायदा उठाया है। मैं मज़हब बदलने वालों में पहला था, हालांकि मैं अक़ीदे वाला ईसाई नहीं था, बल्कि यह कहना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़्यादा सही होगा कि मैं अल्लाह पर ईमान पहली बार लाया इस्लाम क़ुबूल करने के बाद, और मेरे रहबर (चिर्री) ने मुझे रास्ता दिखाया।

अगर आप मुसलमान हैं, तो इस किताब को पढ़ें, इल्म हासिल करने की इस ज़िम्मेदारी को समझकर! अगर आप यहूदी या ईसाई हैं, तो भी आप इसे लगन के साथ पढ़ें। मज़ाहिब की Complarative Study जानिबदार होती है, अगरचे आप का अल्लाह में ईमान बे सूझबूझ वाला होता है, मगर (फिर भी) अक़ीदे को मज़बूती देता है। अल्लाह में अक़ीदा, जैसा कि हमारे मक़सद से ज़ाहिर होता है, मंज़िल के तौर पर होना चाहिए, जिसके लिए हमारे मज़हबी मुबल्लिग़ काम करते हैं। फ़िरक़े की मदद से हासिल होने वाला फ़ायदा दरअस्ल सानवी बन जाता है।

अगर आप यह नहीं कहते हैं कि आप अल्लाह को मानते हैं, तो भी मज़हब का मुताला मायनी रखता है। आने वाले सफ़्हों में आप इंसानियत से मुताल्लिक़ कुछ बहुत ज़रूरी बातों का मुताला करेंगे, जिनके ज़रिये से आप लिखी शुरुआती तारीख़ में इंसान के शुरुआती मक़सद को समझेंगे। ख़यालों और तारीख़ी वाक़िए अपने आप में ख़ुद अहमियत रखते हैं। शायद आप भी मेरी तरह इनके तवस्सुत से अल्लाह पर ईमान ले आएं।

इंग्लैन्ड के मुक़ाबला अमेरिका में रहने के मैं ज़्यादा ख़ुशनसीब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

था, इस्लामी तारीख़ और इसके सबक़ तक पहुँचने में। यह कोई हादसा नहीं है कि जबकि अमेरिका की किसी बड़ी शख़्सियत ने इस्लाम अहमियत और मूल्य पर कुछ नहीं किया, इंग्लैंन्ड के माने जाने तीन लेखकों ने इस्लाम की अहमियत व क़द्र को पूरी तरह सराहा है। इनमें शामिल हैं ऑरनॉल्ड टान पी, बरट्रेण्ड रसल और ड्रामा लेखक बरनार्ड शाह। इन तीन शख़्सियतों की इज़्ज़त के लिए हम और भी जानना चाहेंगे कि उन्होंने (इस्लाम की) किस बात को (पढ़ा, सराहा और) और (दिल से) अहमियत दी।

विल्सन एच. ग्योरटेन,

पीएच.डी.

फ़्लोरिडा युनिवर्सिटी, अमेरिका

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुक़द्दमा

डॉक्टर विल्सन एच. ग्योरटेन एक माहिर साइंसदाँ हैं और एक आला दर्जे के साइकालोजिस्ट भी। इसके साथ ही वह मज़हब के तईं बहुत ही (अक़ीदत रखते हैं और इसे) इज़्ज़त देने वाले हैं, और इलाहियात में इनकी मालूमात भी बड़ी हैं।

मज़हब में इनकी दिलचस्पी एक माहिर साइंसदाँ की तरह है कि वह सोचते हैं कि मज़हब आमतौर से किसी न किसी सच (व हक़) का हामिल है, हालांकि इस पर इंसान की ग़लतफ़हमी और ग़लत समझाने के पर्दे पड़े हुए हैं।

हम एक माहिर साइंसदाँ से, जो मौजूदा हक़ीक़त पर रिसर्च करे और नेचर और ज़िन्दगी के छुपे राज़ों को खोले, यह उम्मीद ज़रा कम ही कर सकते हैं कि वह इस मज़हबी बयान पर यक़ीन कर ले, जो नेचर की खुली सच्चाइयों से मेल न खाये और उस से भी, जो एक तस्लीमशुदा साइंसी इल्म बन चुका हो। एक माहिर साइंसदाँ, जिसका साबिक़ा किसी ऐसी (नाम निहाद) मज़हबी तालीम से हो, जो नेचर की वाज़ेह हक़ीक़त या किसी तय साइंसी ज्ञार के मुख़ालिफ़ हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

वह इन में से कोई एक रास्ता अपनायेगाः

A: वह अपना रवैय्या इख़्तियार करते हुए मज़हब को उसकी किसी भी सूरत में दरकिनार कर देगा।

B: वह यह कोशिश करेगा कि मज़हबी ख़यालों को साइंस से इस तरह मिला दे कि उन दोनों में कोई टकराव बाक़ी न रहे।

C: किसी ऐसे मज़हब का पता लगाने के लिए, जो मंतिक़ और नेचर की सच्चाइयों से टकराता न हो, वह दूसरे मज़हबों को पढ़ेगा, समझेगा।

डॉक्टर ग्योरटन ने तीसरा रास्ता अपनाया और उन्होंने मुख़्तलिफ़ मज़हबों का तहक़ीक़ी मुताला करके हक़ की खोज की। उनकी तहक़ीक़ गहरी थी, उन्होंने तरह-तरह की मज़हबी तालीमात का तजज़िया किया और आख़िर में इस्लामी तालीमात को परखा।

''मैं पैदाइशी तौर पर ईसाई हूँ'' उन्होंने मुझे बताया। ''लेकिन ऐन उठती जवानी से मैं अपनी गहरी साइंसी ट्रेनिंग की वजह से शक-शुब्हों से दोचार था। साइंस के स्कालर की तरह मैं कोई भी नज़रिया, जो साइंस से मेल खाता न हो, मेरे लिए नाक़ाबिले क़ुबूल था। एक चाह और लगन रखने वाले की तरह मैंने अपने शक-शुब्हों को मज़हबी तालीमात की रू से परखा, लेकिन मैं अपने मज़हबी शुब्हों को दूर न कर सका।''

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

“आख़िर में मैंने ख़ुद अपने मज़हबी तालीमात के अलावा दूसरों की कुछ इस्लामी किताबों को पढ़ा। इसने मुझ में दिलचस्पी पैदा की कि मैं इस्लाम के बारे में और मालूमात हासिल करूँ। अब मुझे, जैसा कि मैं आपके सामने हूँ, उम्मीद है कि मैं आपके अक़ीदे के बारे में एक अच्छी मालूमात हासिल कर सकूँगा। मैं समझता हूँ कि इस्लाम के बारे में आपकी मालूमात गहरी हैं, और यह कि आप इस मैदान में स्पेश्यलिस्ट हैं। मैं आपके साथ मिलकर इस्लाम पर रिसर्च करना चाहूँगा, और मुझे उम्मीद है कि आप मेरे सवालों का जवाब दे सकेंगे।”

उन्होंने मुझ से जो सवाल किये, वह हर उस शख़्स के ज़ेहन में आ सकते हैं, जो इस्लाम (में दिलचस्पी रखता हो) और इस्लाम में हक़ को जानना चाहता हो। इसलिए मैंने ख़याल किया कि इन्हें रिकार्ड कर लिया जाए और फिर छाप दिया जाए, और यह इसलिए भी कि हमारे बहस-मुबाहिसे की यह किताब किसी भी ऐसे शख़्स के लिए कारआमद साबित होगी, जिसको शक हों और वह इस से जुड़े सवालों का जवाब चाहता हो।

मुझे मालूम है कि बहुत से ऐसे लोग हैं, जिनके पास ऐसे सवाल हैं, मगर वह उजाटपन पर अमल करते हैं। वह अपने शक-शुब्हों को अपने पास रखते हैं, और कभी हिदायत के तलबगार

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नहीं होते। उनमें से कुछ तो मज़हबी बातों की तरफ़ अपनी पीठ फेर लेते हैं और कुछ ख़ुद अपने मज़हबी गिरोह में रहते हुए सच को तलाश करने की सच्ची चाह नहीं रखते हैं।

नुमायाँ तो हक़ीक़त में वह लोग हैं, जो मज़हबी इल्म के प्यासे हैं, और अपनी इस प्यास को बुझाने पर तुले हैं। इस किताब का मक़सद यह ही हक़ के खोजी हैं, और इसके अलावा उन लोगों के हक़ की तलाश में मदद करने का, जो इसे पढ़ेंगे। अगर यह किताब पढ़ने वालों के मज़हबी अक़ीदों को वाज़ेह करने में मददगार साबित होती है, अगर यह इस्लाम को ज़्यादा अच्छी तरह समझा सकती है और अगर यह बड़े मज़हबों के बीच क़रीबी तालमेल पैदा कर सकती है, तो लेखक शुक्रगुज़ार होगा और समझेगा कि उसे इसका इनाम मिल गया।

मोहम्मद जवाद चिर्री

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–1

इस्लाम में बहस–मुबाहिसे की आज़ादी

विल्सनः कुछ मज़हबों में उनकी तालीमों के सही होने और मान लेने के बारे में सवाल करने से रोका जाता है। वह अपने मानने वालों से मज़हब की बातों की पाबन्दी बिला किसी सवाल के करने को कहते हैं। वह (अपने मज़हब) पर भरोसा रखने, दूसरों के मज़हब के मुताल्लिक़ जानने से मना करते हैं, क्योंकि इस से शक पैदा होते हैं। इस्लाम का इसकी तालीमात पर सवालात करने और इसका मवाज़ना दूसरो मज़ाहिब से करने के मुताल्लिक़ क्या रवैय्या है?

चिर्रीः इस मामले में इस्लाम बड़े खुले दिल का है। यह हर एक से उसूलों पर एतेक़ाद रखने का कहता है, मगर इसके साथ ही यह राय भी देता है कि वह अपने अक़ीदे को दलीलों की रू से इख़्तियार करे। वह उसे आज़ादी देता है कि वह कोई भी सवाल कर सकता है, और उसे शक होने की सूरत में बुरा नहीं कहता, अलबत्ता यह ज़रूरी है कि वह अपने शक के दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करे, ताकि उस पर सच खुल जाए। अगर कोई मज़हब यह राय देता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

है कि अपने (मज़हब के) उसूलों को छोड़कर दूसरे मज़हबों के उसूलों पर गुफ़्तुगू न करो, और अगर करोगे तो अल्लाह के ग़ज़ब के निशाने पर होगे। इस (नज़रिये) के ख़िलाफ़ अगर कोई हक़ की तलाश में ऐसा करता है तो इस्लाम अल्लाह के अज़ाब से महफ़ूज़ रहने की बात करता है।

सच यह है कि इस्लाम किसी से कभी भी यह नहीं कहता कि बातचीत और बहस न करो, क्योंकि यही नये मालूमात और हक़ को खोल देता है। ख़ौफ़ न करो, कि इस्लाम किसी भी मज़हबी उसूल पर सोच-विचार की लेनदेन की राय देता है, चाहे यह उसूल इस्लामी या ग़ैर इस्लामी हों। न तो कभी घबराना चाहिए और न ख़ौफ़ करना चाहिए और न नाराज़ होना चाहिए। नाराज़गी तो अल्लाह के लिए होना चाहिए, क्योंकि (वह) अल्लाह बरहक़ है, वह किसी शख़्स को, जो हक़ तलाश करता है, बुरा नहीं समझता, बल्कि जो कोई भी जितना ज़्यादा हक़ तलाश करता है और उसके लिए गहरी तहक़ीक़ करता है, इस्लामी नज़र से वह उतना ही ज़्यादा ख़ुदा के इनाम का हक़दार होता है।

इस्लाम की नज़र में सबसे ज़्यादा इनाम के क़ाबिल और इस्तेदाद वाला वह तरीक़ा और आदमी है, जो मज़हबी मामलात पर एक साइंसदाँ की तरह नज़र रखता है, जो उन निशानियों और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

Evidences को ख़ुश आमदीद (Welcome) कहता है, जो उसके नज़रिये को साबित करता है या उसके ग़लत नज़रिये की नही करता है (या किसी ऐसे नज़रिये की तहक़ीक़ करता है, जिसको वह मानता है)।

विल्सनः क्या इस्लाम में तहक़ीक़ का कोई ख़ास उसूल या मज़हबी मालूमात पर नज़रिया मौजूद है?

चिर्रीः क़ुरआन मजीद में कुछ उसूल (बयान हुए) हैं, नतीजे तक पहुँचने के लिए जिन पर अमल करना चाहिएः

1- कभी भी किसी ऐसे इल्मी उसूल को न अपनाना चाहिए, जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हो, और न तो किसी ऐसे उसूल पर अमल करना चाहिए, जिसके लिए दलील मौजूद न होंः

अगर अल्लाह चाहता है कि कोई शख़्स किसी उसूल पर यक़ीन रखे, तो उसे अल्लाह को साफ़ व वाज़ेह तौर पर (बयान) करना चाहिए, क्योंकि वह सब से ऊँचा, आदिल और सही है। उसे मालूम है कि अक़ीदा अज़ख़ुद नहीं है, यानी उसका ताल्लुक़ एक फ़र्द से नहीं है; एक फ़र्द उसका मजाज़ नहीं है कि वह अक़ीदा रखो या न रखे किसी ऐसी चीज़ पर, जिसे वह मुन्तख़ब करता है, क्योंकि इंसान का बदन तो उसके क़ब्ज़े में है, मगर उसका ज़ेहन नहीं। मैं इस सिगनल को तो मान सकता हूँ, जो मुझे बताता है कि अपना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हाथ ऊपर की तरफ़ कर लो या उसे नीचे ले आओ, या यह कि चलो या बैठ जाओ, हालांकि मुमकिन है कि यह कमाण्ड दानिश्वराना न हो। लेकिन मिसाल के तौर पर मैं एक कमाण्ड (हुक्म) को मानने के क़ाबिल नहीं हूँ, जो मुझे यह बतलाए कि दो और दो पाँच होते हैं या कि तीन एक अदद है या यह कि आग ठन्डी होती है और बर्फ़ गर्म।

इंसानी इल्म सीधे या बेवास्ता देखने (Observation) से हासिल होता है, और यह हमारे बेजा ख़यालों और इरादे का फिर नहीं देता। एक क़ाबिले क़ुबूल मज़हबी अक़ीदे की बुनियाद इल्म पर होनी चाहिए। जब अल्लाह चाहता कि मुझे कोई बात मालूम हो जाए, तो उसे उसका इल्म उसके सुबूत को पैदा करके करवाना चाहिए। क्या उसे हम से वह सब कुछ तलब करना चाहिए, जिसकी मुख़ालिफ़त में शवाहिद मौजूद हों? अगर हाँ! तो (मआज़ल्लाह) वह हम से किसी नामुमकिन को कर गुज़रने के लिए कह रहा है, जो उसके अद्ल के ख़िलाफ़ है।

इस्लाम कभी भी किसी एक की मज़म्मत नहीं करता अगर वह किसी ऐसे उसूल में यक़ीन नहीं रखता, जिसका कोई सुबूत मौजूद नहीं है। उसके ख़िलाफ़ इस्लाम उस शख़्स की मज़म्मत करता है, जो किसी (ऐसे) उसूल पर चलता है, कि वह अंधेरे में बग़ैर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

किसी वाज़ेह दलील के हाथ-पैर मारता है, या यह भी कि उसका उसूल (जिस पर वह चलता है) किसी सच और हक़ से मुताबिक़ नहीं होता।

बग़ैर किसी सुबूत के या उसके अधूरे होने के बावजूद अगर कोई किसी उसूल पर है, तो यह ऐसा ही है कि किसी मुद्दा अलैह (प्रतिवादी) के ख़िलाफ़ अदालत में बग़ैर सुबूत के फ़ैसला सुना दिया जाए। ऐसे रवैय्ये की किसी तरह तारीफ़ नहीं की जा सकती। क़ुरआन का एलान हैः

तर्जुमाः ''और जिस चीज़ का तुम्हें इल्म नहीं है उसके पीछे मत जाना कि (क़यामत के दिन) कान, आँख और दिल सबके बारे में पूछगछ की जाएगी।'' (सूरए असरा, 17/36)

2- शोहरत को उसकी ज़ाहिरी अहमियत पर नहीं लेना चाहिएः एक मज़हबी रिसर्चर को किसी दीन के उसूल को समाज में उसकी शोहरत की वजह से हक़ का सुबूत न समझना चाहिए, कि कई आम शोहरत वाले तसव्वुर ग़लत साबित हो चुके हैं। एक ज़माना था कि यह समझा जाता था कि ज़मीन चपटी है और यह कि सूरज ज़मीन के इर्दगिर्द घूमता है। लोगों ने उसे ऐसा ही हज़ारों साल समझा, मगर आज हम जान गये हैं कि इनमें से कोई भी सही नहीं है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

फिर यह कि जो बात एक समाज में आम होती है, दूसरे समाज में वहीं बात अच्छी नहीं समझी जाती है। इसके ख़िलाफ़ भी सही होता है। अगर शोहरत अच्छाई की दलील है, तो फिर इन सब मशहूर तसव्वुरों और ख़यालों को, जो एक-दूसरे की नहीं करते हैं, सही होना चाहिए। मगर (ऐसा नहीं है क्योंकि) सच और हक़ एक-दूसरे की नहीं नहीं करते।

जब पहले नबी (आदम[अ०]) ने अल्लाह के एक होने का एलान किया, तो उनका यह पैग़ाम किसी समाज में आमतौर से मशहूर न हुआ, क्योंकि उस वक़्त दुनिया के लोग या तो मूर्ति पूजा करने वाले थे, या किसी भी अक़ीदे के मानने वाले न थे। लेकिन इस ख़ुदाई पैग़ाम के शोहरत न पाने का यह तो मतलब नहीं है कि वह सच्चा पैग़ाम न था। दरहक़ीक़त सभी नबियुल्लाह अपने-अपने मुआश्रे में 'नापसन्द' (पैग़ाम) वाले समझे जाते थे। उनका मक़सद था आम पसन्द ग़लत को नापसन्द सच से बदलने का, कि क़ुरआन का एलान हैः

तर्जुमाः ''और दुनिया में बहुतेरे लोग ऐसे हैं कि अगर तुम उनके कहने पर चलो, तो तुमको अल्लाह की राह से बहका देंगे। यह सिर्फ़ अपने मन के कहने पर चलते हैं और यह लोग तो बस अटकल-पच्चू बातें किया करते हैं।'' (सूरए अनआम, 6/116)

3- पीढ़ी-पीढ़ी चलने वाले मज़हबी उसूलों को परखना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चाहिएः इस्लाम हर बालिग़ को सलाह देता है कि वह वरसे में मिलने वाले मज़हब के उसूलों को देखे (और) उन्हें परखे। वरसे में मिलने वाला मज़हब, हर मज़हब की तरह सुबूत चाहता है।

जब तक कोई कमसिन बच्चा है, वह अपने माँ–बाप के फ़ैसले पर भरोसा कर सकता है, क्योंकि वह ख़ुद फ़ैसला करने के क़ाबिल नहीं होता, मगर जब वह बालिग़ होने के सिन को पहुँच जाए, तो उसका मज़हब ख़ुद उसकी ज़िम्मेदारी बन जाता है। वालदैन की इज़्ज़त व बड़ाई इस्लामी उसूलों में शामिल है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अहम मामलों जैसे मज़हब के मामले में, जबकि उनकी राय ग़लत हो, इसका मानना ज़रूरी है।

दरअस्ल हक़ीक़त तो यह है कि जब माँ–बाप किसी ग़लत असत्य मज़हब के उसूलों को ख़ुद भी मान रहे हों और अपनी औलादों से भी इसकी माँग कर रहे हों कि वह भी इसी मज़हब को मानें, तो उनका कहना नहीं मानना चाहिए, क्योंकि ऐसा करना अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होगा, यानी अगर कोई अपने माँ–बाप का कहना माने, जबकि वह ग़लती पर हों, तो वह अल्लाह की नाफ़रमानी होगी।

क़ुरआन कहता हैः

तर्जुमाः ‘‘और हम ने इंसान को माँ–बाप के बारे में वसीयत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(कड़ी नसीहत) की है कि उसकी माँ ने दुख पर दुख सह कर उसे पेट में रखा और दो बरस में (जा के) उसकी दूध बढ़ाई की- कि मेरा और (अपने और) उसके माँ-बाप के बारे में ताकीद की कि मेरा भी शुक्रिया अदा करो और अपने माँ-बाप का भी और आख़िर (सबको) मेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है। और अगर तेरे माँ-बाप तुझे इस बात पर मजबूर करें कि ऐसी चीज़ को मेरा शरीक बनाओ, जिसका तुझे इल्म भी नहीं, तो तू इसमें उनकी बात पर न चल (मगर तकलीफ़ न पहुँचा) दुनिया के कामों में उनका अच्छी तरह साथ दे और उन लोगों के रास्ते पर चल, जो (हर बात में) मेरी ही तरफ़ तवज्जह रखें। फिर तो (आख़िर) तुम सबकी वापसी मेरी ही तरफ़ है तब (दुनिया में) जो कुछ तुम करते थे (उस वक़्त) उसका नतीजा बता दूँगा?'' (सूरए लुक़मान, 31/14-15)

इस्लाम हुक्म देता है कि उसकी और दूसरी तालीमों दोनों देखो-जाँचो। इस तरह से वह इस्लाम की अहमियत को ऐसा समझेगा कि इस से क़ब्ल न समझा होगा।

4- शक करने वालों के लिए माफ़ी नहीं हैः जब कोई शख़्स किसी मज़हब को नहीं मानता और सारे मज़हबों को नहीं मानता और सभी मज़हबी ख़यालों और तालीम को ग़लत समझता है, तो उसे अपने 'शक' पर संतोष नहीं करना चाहिए। यह उसकी अहम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़िम्मेदारी है कि उसे ख़ुद अपने को और अपने हितों को इस दुनिया में हर तरह के नुक़सान और घाटे से बचाना चाहिए। इसका संजीदगी के साथ पता लगाना कि वह क्या चीज़ है, जो उसकी रूहानी ज़िन्दगी पर असर करेगी? यह इतना ही अहम है, जितना कि यह पता लगाना कि वह क्या चीज़ है जो उसकी माद्दी (मेटिरियल) ज़िन्दगी पर असर करेगी? अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए यह ज़रूरी है कि वह अपने मज़हबी शक शुब्हे के बारे में पता लगाये और वह भी संजीदगी के साथ। शक होने में बहुत सच्चाइयाँ हो सकती हैं जिनकी पकड़ हो सकती है। इसलिए उसे चाहिए कि वह उनकी पहचान करे। जब वह तहक़ीक़ कर ले और सारे ज़रिये इस्तेमाल कर ले और फिर भी हक़ को न पा सके, तो अल्लाह की माफ़ी उसके लिए होगी। अल्लाह तो इन्सान से कहता है कि अमल करो, जितना तुम कर सकते हो।

तर्जुमाः ''अल्लाह किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता (ज़िम्मेदारियाँ नहीं डालता)। उसने अच्छा काम किया तो अपने फ़ायदे के लिए और बुरा काम किया तो (उसका वबाल) उस पर पड़ेगा। ऐ हमारे पालनहार! अगर हम भूल जाएं या ग़लती करें तो हमारी पकड़ न कर। (ऐ) हमारे रब! हम पर वैसा बोझ न डाल, जैसा हमसे अगले लोगों पर डाला था और ऐ हमारे पालने वाले!

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

उतना बोझ, जिसके उठाने की हमें ताक़त न हो हम से न उठवा। और हमारी कमियों को माफ़ कर, और हमारे गुनाहों को बख़्श दे (ढाँप दे) और हम पर रहम कर। तू ही हमारा मालिक और मालिक है, तू ही काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।'' (सूरए बक़रा, 2/286)

5- जब कोई मज़हबी सच का पता लगाने में लगा हो, तो उसके लिए किसी दूसरे को कोई फ़ैसला न करना चाहिए। उसे किसी दूसरे के फ़ैसले पर भरोसा नहीं करना चाहिए, चाहे वह कितना ही सच्चे मन का और तेज़ समझ वाला क्यों न हो?

हर अक़ीदे वाले लोग सच्चे मन और तेज़ समझ के होते हैं। अगर कोई उन्हें मज़हबी मामलात में उसकी तरफ़ से फ़ैसला करने की इजाज़त दे दे, तो वह गुम हो जाएगा, क्योंकि समझ वाले एक दूसरे की नहीं ज़रूर करेंगे। अगर वह किसी एक अक़ीदे के उस्ताद पर भरोसा करता है और किसी दूसरे अक़ीदे के उस्ताद से मुँह मोड़ लेता है, तो वह तरफ़दारी (Bias) का शिकार होगा। एक सच्चे मन वाला और ऊँचे दर्जे का समझदार उस्ताद भी ग़लत हो सकता है, और वह जो इस उस्ताद के फ़ैसलों पर चलता है, उसे माफ़ नहीं किया जाएगा। किसी मज़हब के मानने वाले की ख़ुद अपनी ज़िम्मेदारी होती है। वह ख़ुद हक़ का पता लगाता है और बड़ी ज़िम्मेदारी से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

भी, तो अब वह ख़ुद फ़ैसला करता है और हक़ तक पहुँचता है। क़ुरआन का एलान हैः

तर्जुमाः ''और कोई शख़्स किसी दूसरे (के गुनाहों) का बोझ नहीं उठाएगा और अगर कोई (अपने गुनाहों का) भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए (किसी को) बुलाएगा, तो उसके बोझ में से कुछ भी न उठाया जाएगा, चाहे कोई किसी का क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो, (ऐ रसूल) आप[स०] तो बस उन्हीं लोगों को डरा सकते हैं, जो बे देखे भाले अपने पालनहार का डर रखते हैं और नमाज़ क़ायम (स्थापित) करते हैं, और जो भी पाक साफ़ रहता है वह अपने ही फ़ायदे के लिए पाक साफ़ रहता है और (आख़िरकार सबको हिरफिर के) अल्लाह ही की तरफ़ जाना है।'' (सूरए फ़ातिर, 35/18)

तर्जुमाः ''कोई शख़्स (दूसरे के गुनाह का) बोझ नहीं उठायेगा।'' (सूरए नज्म, 53/38)

इस तरह ऊपर वाली क़ुरआन की 5 आयतों से हम यह समझ सकते हैं कि इस्लाम सवालों और तजज़िये देखने परखने का मुख़ालिफ़ नहीं है और न उस से घबराता है। घबराते तो वह लोग हैं, जो डरे होते हैं, और अपने मज़हब के उसूलों पर बहस करने और उच का पता लगाने पर रोक लगा देते हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-2

इस्लाम क्या है

विल्सनः किसी भी बहस की अहम बातों में टापिक की परिभाषा (Definition) भी शामिल होती है। जैसे-जैसे हम इस्लाम पर चर्चा को आगे बढ़ाएंगे, मैं ''इस्लाम'' के मायनी और इसकी तारीफ़ (Definition) को जानना चाहूँगा, क्योंकि यह अरबी का लफ़्ज़ है। मुझे इस लफ़्ज़ की एक से ज़्यादा तारीफ़ बताई गई है, लिहाज़ा मैं इस लफ़्ज़ की तारीफ़ आप से सुनना चाहूँगा। ''मुस्लिम'' भी अरबी का एक ऐसा लफ़्ज़ है, जिसकी तारीफ़ ग़ैर अरब लोगों के फ़ायदे के लिए कर देना चाहिए, जो इसको अकसर पढ़ते हैं, लेकिन इसके पूरे मायनी जाने बग़ैर, और इसको लफ़्ज़ 'इस्लाम' से मिला लेते हैं, यानी मायनी में उन्हें एक जैसा समझते हैं।

चिर्रीः इस्लाम के असल मायनी हैं एक नज़रिये को क़ुबूल करना (मानना) या एक शर्त, जिसे पहले क़ुबूल न किया था। क़ुरआन पाक की ज़बान में इस्लाम की मायनी हैं किसी शख़्स का अल्लाह से हुक्म लेने और मानने पर झुकाव के। लफ़्ज़ ''मुस्लिम''

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस्लाम से बना है। इसके मायनी हैं शख़्स का मन से अल्लाह के हुक्म को मानने और उस पर चलने के।

तर्जुमाः इब्राहीम[अ०] न तो यहूदी थे और न ईसाई। वह निरे खरे हक़ पर थे (और) आज्ञाकारी (बन्दे) थे और वह मुश्रिकों में से भी नहीं थे।'' (सूरए आले इमरान, 3/67)

बहरहाल इन दो लफ़्ज़ों (इस्लाम और मुस्लिम) ने, पैग़म्बर मोहम्मद[स०] के पैग़ाम को बताने के बाद, मख़्सूस मायनी निकाल लिये। वह पैग़ाम जो मोहम्मद[स०] पर उतारा गया, वह इस्लाम के लिए था, और इसलिए भी कि उनके पैग़ाम पर चला जाए (ईमान के साथ-साथ)। इसलिए मुसलमान के मायनी हैं वह शख़्स कि जो मोहम्मद[स०] की सच्चाई और दयानतदारी में यक़ीन रखे और उनके पैग़ाम (इस्लाम) पर अमल करे।

विल्सनः इस्लाम के हक़ीक़ी मायनी और इस मायनी में, जो इस लफ़्ज़ (इस्लाम) ने पैग़म्बर मोहम्मद[स०] के ज़ाहिर होकर तबलीग़ (संचार) शुरु करने के बाद निकले?

चिर्रीः लफ़्ज़ 'इस्लाम' के नये मायनी इसके असल मायनी से काफ़ी जुड़े हैं, क्योंकि मोहम्मद[स०] ने इरशाद फ़रमाया है कि उनके शिक्षाएं (तालीमात) पहले के नबियों के सभी तालीम को और तमाम ख़ुदाई हुक्मों को समोए हुए हैं। जब कोई शख़्स मोहम्मद[स०] की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सच्चाई में यक़ीन रखता है और उनके पैग़ाम पर चलता रहता है, तो दरअस्ल वह यह कहता है कि वह अल्लाह के सारे हुक्मों पर आनाकानी किये बग़ैर चलेगा।

विल्सनः कुछ ज़ाब्ते नियम मुक़र्रर कर दिये गये हैं, जैसा कि ईसाइयत में है कि अगर कोई ईसाई मज़हब अपनाना चाहे, (तो कुछ रस्में की जाएंगी), जैसे कि उनमें से, जिन्हें ज़्यादातर ईसाई फ़िरक़ों में मज़हब बदलने वाले को ईसाइ बनने के लिए करना पड़ता है। क्या इस्लाम में भी इस तरह का कोई तरीक़ा है, जिसे इस्लाम क़ुबूल करने वाले को करना पड़ता है?

चिर्रीः इस्लाम क़ुबूल करने वाले के लिए कोई ऐसी बात या तरीक़ा तय नहीं किया गया है, जिस से उसे गुज़रना पड़ता है। उसे इस्लाम में दाख़िल होते वक़्त सिर्फ़ इसका एलान करना पड़ता है कि वह अक़ीदे के एलान में अपने अक़ीदे और अमल का एलान करता है इस तरहः

''मैं गवाही देता हूँ कि कोई ख़ुदा नहीं है सिवाए अल्लाह के और मोहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल (भेजे हुए/दूत) हैं।''

विल्सनः किसी शख़्स के इस्लाम में दाख़िल होने के लिए इस तरह के एलान की क्या ज़रूरत है?

चिर्रीः जब कोई शख़्स यह कहता है कि वह मोहम्मद[स०] के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हक़ (सत्य) पर होने की बात में यक़ीन रखता है, तो दरअस्ल वह यह कहता है कि वह हर बात पर ईमान लाता (दिल से मान लेता) है, जिसे मोहम्मद[स०] ने बताया है और आप[स०] की सारी तालीमात पर भी, उनमें क़ुरआन की सारी तालीमात शामिल हैंः क़ुरआन के सबक़, आँहज़रत (मोहम्मद[स०]) की सब तालीमात और अमल (सुन्नत) पर, चाहे वह अक़ीदों (विश्वासों) से मुताल्लिक़ हों या अमल (सुन्नत) से।

जब कोई अक़ीदे के एलान में मौजूद बातों को (दिल से) मानने लगता है, तो उसका एलान दूसरे मुसलमानों के लिए यह सुबूत है कि वह इस्लाम में अक़ीदा रखता है। इसकी वजह से अब कोई मुसलमान उसे इस अक़ीदे में दाख़िल होने से नहीं रोक सकता, क्योंकि वह अब इस्लाम को मानने वाला (मुसलमान) है, और अब इसके बाद उसे किसी (सुबूत) की ज़रूरत नहीं है।

विल्सनः क्या एक नये-नये मुस्लिम को क़ुरआन की रू से दूसरें मुसलमानों के बराबर समझा जाता है। इसके अलावा एक नये-नये मुस्लिम दूसरे मुसलमानों से दो वजहों से ज़्यादा फ़ायदे में होता है।

1- एक नया-नया मुस्लिम दूसरे (ईमान रखने वाले) मुसलमानों के मुक़ाबले में अल्लाह के यहाँ ज़्यादा इनाम का हक़दार होता है, क्योंकि एक नया-नया मुसलमान (मज़हब बदलने के लिए)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सच की काफ़ी खोज करता है और साइकालोजिकल कशकमश में पड़ा होता है, कि मज़हब बदलना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए नये-नये मुस्लिम को हिम्मत के साथ बहुत जतन करना पड़ते हैं, जबकि एक पैदाइशी मुसलमान को दीन वरसे में मिलता है।

2- मज़हब बदल कर इस्लाम क़बूल कर एक नौ मुस्लिम पिछले गुनाहों के धुल जाने की वजह से पाक और आज़ाद हो जाता है। उसके तमाम पिछले गुनाह धुल जाते हैं। उसे सिर्फ़ उन गुनाहों के लिए जवाब देना होगा, जो उसने मुसलमान होने के बाद किये होंगे। इस तरह अगर कोई (किसी दिन) सुबह-सुबह सूरज के निकलने के बाद मुसलमान हो जाए, और फिर वह दोपहर से पहले मर जाए, तो बग़ैर किसी इबादत की ज़िम्मेदारी को पूरा किये हुए, जिसको एक मुसलमान को करना होता है, कि उसको सुबह की नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत न थी, क्योंकि उसने इस्लाम को सूरज निकलने से पहले क़ुबूल न किया था, और न तो नमाज़ ज़ोहरैन, क्योंकि वह दोपहर तक ज़िन्दा न रहा, जो ज़ोहरैन की नमाज़ का वक़्त है।

विल्सनः कभी तो यह पाते हैं कि इस्लाम को ''तौहीद वाला मज़हब'' कहा जाता है, और कभी यह कि इस्लाम नेचर (Nature) का मज़हब है। चूँकि यह दोनों शब्द अरबी ज़बान के हैं, इसलिए ग़ैर अरब लोागें के फ़ायदे के लिए इनके (वाज़ेह) मायनी बयान कर देना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चाहिए, और इस वजह को भी साफ़ कर देना चाहिए कि इस्लाम नेचर का मज़हब और ''तौहीद का मज़हब'' क्यों है?

चिर्रीः ''तौहीद के मज़हब'' के मायनी हैं, अल्लाह एक होने पर यक़ीन रखने वाला मज़हब, और ''नेचर के मज़हब'' के मायनी हैं इंसान की नेचर से मेल रखने वाला दीन, जो उसके नेचर से मेल खाता है।

अल्लाह के एक मानने के मज़हब को इस्लाम दीन कहा जाता है, क्योंकि उसकी ख़ास बात एकेश्वरवाद (ख़ुदा का एक होना) है। इसका ज़िक्र क़ुरआन में ख़ास कर ज़ोर देकर बार-बार हुआ है। जब दुनिया को इस्लाम से आगाह किया गया, तो उस वक़्त ज़्यादा तर लोग मूर्ति की पूजा करते थे। इसलिए कुछ मज़हबों ने अल्लाह के एक होने की बात पहुँचाई, मगर धुन्धले अन्दाज़ से। उनमें से कुछ ने (अपने ख़याल में) अल्लाह को इंसान का रूप दे दिया। इस आसमानी पैग़ाम (इस्लाम) में मूर्ति की पूजा करने वालों का सुधार और अल्लाह के मुताल्लिक़ छाये हुए ग़लत तसव्वुरों को ठीक करना शामिल था।

इस्लाम को फ़ितरत नेचर का मज़हब कहा जाता है, क्योंकि इसकी शिक्षाएं इंसानी ज़ेहन के लिए क़ाबिले क़ुबूल हैं, जिसकी वजह से इंसान का ज़ेहन तर्क से परे ख़यालों और अक़्ल से दूर अन्धविश्वासों से आज़ाद हो जाता है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नबी करीम मोहम्मद[स०] ने फ़रमाया हैः

"हर इंसान पाकीज़ा नेचर के साथ पैदा होता है, लेकिन वह अपने माँ-बाप के (ग़लत) असरात की वजह से ग़ैर मुस्लिम बन सकता है।"

जब कोई शख़्स तर्क से परे ख़यालात से आज़ाद होता है, तो सिर्फ़ दुनिया के सिस्टम पर नज़र करके आसानी के साथ इस नतीजे पर पहुँच सकता है कि उसका पैदा करने वाला सिर्फ़ एक (अल्लाह) है। इस बात को मान लेना बहुत आसान है, जो यह बताती है कि चार अरब साल से भी ज़्यादा पहले इस दुनिया को एक हमेशा से मौजूद पैदा करने वाले ने पैदा किया है, लेकिन इस पैदा करने वाले को एक मिट जाने वाला, जो दुनिया के सिरजन के चार अरब साल के बाद पैदा हुआ हो, कैसे पहचान सकता है?

यह बताना बिल्कुल नेचुरल बात है कि दुनिया का पैदा करने वाला सबसे बड़ा न्याय करने वाला बहुत रहम करने वाला बड़ा मेहरबान है, जो किसी के किये गुनाहों को किसी दूसरे पर नहीं डालता है, और न किसी दूसरे के गुनाहों की सज़ा के लिए किसी और को ज़िम्मेदार बनाता है।

इस्लामी तालीमात को इंसान का ज़ेहन क़ुबूल करता है, मगर उस वक़्त जबकि इंसान का ज़ेहन तर्क और समझ से खोखली

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

शिक्षाओं तालीमात के रूबरू न हो। इसी वजह से इस्लाम को नेचार का दीन कहा जाता है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–3

इस्लाम इतना मक़्बूल क्यों है?

विल्सनः हिस्ट्री हमें बताती है कि शुरु में इस्लाम बहुत तेज़ी के साथ एशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोप में फैला। शायद दुनिया का कोई मज़हब इतनी तेज़ी के साथ नहीं फैला, जैसा कि इस्लाम फैला और बढ़ा। इस्लाम में कुछ उजागर ख़ास बातें होंगी, जिनकी वजह से वह फैला। मैं उन बातों को जानना चाहूँगा, जो इस्लाम के फैलने में काम की साबित हुईं।

चिर्रीः बहुत सी बातें हैं, जिन्होंने इस्लाम के फैलने में मदद की और आज भी कर रहे हैं। उनमें ये बातें शामिल हैंः

1– क़ुरआन पाक

इस सच से कोई इनकार नहीं कर सकता कि क़ुरआन एक ज़िन्दा व रहने वाली किताब है, जिसने अपने अन्दाज़ और ख़ूबसूरती (मायने व बयान) की वजह से करोड़ों लोगों पर असर किया है। क़ुरआन बिल्कुल से चैलेंज के अन्दाज़ में था और है। क़ुरआन ख़ुद अपने न मानने वालों से उसके बराबर या उस से अच्छा बयान (व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तालीमात) को लाने की बात करता है।

क़ुरआन में बार-बार इसका तज़किरा है कि अगर उसके मुख़ालिफ़ कभी उसके बयानों के बराबर बयान लाएंगे, तो इस्लाम के अक़ीदे को ग़लत साबित कर देंगे। लेकिन सातवीं सदी ईस्वीं में अपने नाज़िल होने (उतरने) से अब तक क़ुरआन सारे अरबी साहित्य में ऊँचा और उनकी पहुँच से परे आज भी बना हुआ और टिका हुआ है। इसी लिए पाक क़ुरआन सातवीं सदी में अपने नाज़िल होने से लेकर आज तक इस्लामी अक़ीदे के अहम सोर्स की तरह बना हुआ है।

2- इस्लाम के नबी[स०] की शख़्सियत

तारीख़ के एक नुमायाँ ज़माने में मोहम्मद[स०] की विलादत हुई थी। उनकी विलादत, उनके वुजूद और लोगों के दरमियान उनकी ज़िन्दगी और कारनामों के मुताल्लिक़ किसी तरह का धुन्धलापन या सन्देह नहीं है। अगर किसी दूसरे नबी को मज़हबी हिस्ट्री का (एक अहम) किरदार समझा जाता है, तो मोहम्मद[स०] मज़हब और दुनिया दोनों का (अहम) हिस्सा हैं।

मोहम्मद[स०] की विलादत एक मशहूर (इज़्ज़त वाले) माँ और बाप से हुई। आप[स०] ने अल्लाह की तरफ़ से नुबुव्वत (नबी होना) का ज़ाहिर करने से पहले चालीस साल की ज़िन्दगी मक्का वालों के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

साथ गुज़ारी थी। आप[स०] को लोगों ने आप[स०] के बचपन और जवानी में देखा था। आप[स०] के जिन लोगों से मेलजोल थे, उन्होंन आप[स०] की ईमानदारी और दयानतदारी को देखा था। लोगों को आप[स०] में कोई कमी नज़र न आयी। उन्होंने आप[स०] को ईमानदार और भरोसे क़ाबिले पाया।

मोहम्मद[स०] ने कभी भी लोगों से दूरी न बनायी, बल्कि इसके ख़िलाफ़ वह हमेशा लोगों से राब्ते में रहे। एक व्यौपारी की तरह आप[स०] सफ़र करते और हर तरह के लोगों से मिलते-जुलते रहते थे, लेकिन आप[स०] उनके नीच ख़याल या दुनिया की लालच के असर में नहीं आए। आप[स०] एक मूर्तिपूजा करने वाले समाज में रहते थे, मगर आप[स०] ने उनके ख़यालों की कभी हामी न भरी, न उनके अक़ीदे में उनका साथ दिया। आप[स०] इस तरह दुनिया में ख़ुद अपनी दुनिया आप बनकर रहे। आप[स०] की इज़्ज़त आप[स०] के दुश्मन भी करते थे, और आप[स०] के दोस्त आप[स०] की तारीफ़ करते थे। तारीख़ में किसी को भी अपने साथियों से खुले दिल से इतनी वफ़ादारी न मिली, जितनी कि मोहम्मद[स०] को मिली।

3- पहले के मुसलमानों के पक्के अक़ीदे

मोहम्मद[स०] की भरपूर दयानतदारी और उनकी मोहनी शख़्सियत की अपील की वजह से, उनके साथियों का उनकी ज़ात में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

भरोसा और विश्वास आमतौर से पक्का था। दरअस्ल इसकी बुनियाद आप[स०] की मिसाली ज़िन्दगी के उनके सीधे देखने समझने की वजह से थी।

हमें मिलता है कि हज़रत मूसा[अ०] के मानने वालों ने यरोश्लम में दाख़िल होने से मना कर दिया था, जबकि उसका हुक्म अल्लाह ने मूसा[अ०] को दिया था कि वह सब मूसा के साथ मिलकर दुश्मनों से जिहाद करें। हमें यह भी मिलता है कि ईसा[अ०] के इर्दगिर्द जमा होने वाली भीड़ ने आप[अ०] को मुसीबत में अकेला छोड़ दिया, यहाँ तक कि उनके हवारियों (साथियों) ने भी ऐसा ही किया। उनके सबसे बड़े हवारी ने भी आप[अ०] को उस फ़ैसले की रात में तीन बार झुठला दिया। इसी तरह के वाक़िये मुख़्तलिफ़ नबियों के साथ हुए। उनमें से किसी को भी अपने मानने वालों से मुसीबत के वक़्त असल और सच्ची मदद न मिली।

बहरहाल मोहम्मद[स०] के सहाबा इन से मुख़्तलिफ़ थे। जब आप[स०] मक्का में थे, तो आप[स०] और आप[स०] के सैकड़ों मानने वाले कमज़ोर थे, उन्हें कोई क़ानूनी इमदाद भी हासिल न थी। आप[स०] सब परेशानियों से गुज़र रहे थे, लेकिन किसी ने भी न तो अपना अक़ीदा बदला और न नबी[स०] को अकेला छोड़ा। इन मुसलमानों के इक़दामात ने इस्लाम और नबी[स०] में उनके अक़ीदे को साबित कर दिया। सब ने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस्लाम की तबलीग़ (प्रचार) की, और जिसकी तबलीग़ की उस पर सब ने ख़ुद भी अमल किया, हर अच्छे मुसलमान ने अपने ज़बान और अमल से अच्छे अक़ीदे की अच्छी तबलीग़ की।

4- इस्लामी उसूलों की ओर खिंचवा उनके अक़्ली और सुलझे होने की वजह सेः

सुलझे ख़यालों की वजह से कोई भी शख़्स उन मज़हबी शिक्षाओं को पा सकता है, जो इन बातों को बताती हैंः कोई ख़ुदा/भगवान नहीं है, मगर सिवाए क़ुदरत/शक्ति वाले अल्लाह के, जिसने सारे संसारों का सिरजन किया है, कोई इबादत/भक्ति के क़ाबिल नहीं है, मगर वही और वही एक और मालिक, जिसका न तो कोई साझी साथी है, न जुड़ा और न तो उसका कोई बेटा है और न तो वह किसी का बाप है (कि वह अल्लाह है) और न कोई उस जैसा है, वह न्याय इंसाफ़ वाला है, बड़ा मेहरबान और बहुत रहम करने वाला है, वही परम सब कुछ कर सकने वाला है, और न वह इंसान जैसा है (कि वह इंसान का पैदा करने वाला है), और न उसका कोई रूप और शरीर है। उसकी क़ुदरत सारी काएनात पर मुहीत है।

सादा व साफ़ और बिला किसी बहस के इस तरह की तौहीद (एकेश्वरवाद) इंसानी ज़ेहन को, जो दुनिया के वुजूद की व्याख्या

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चाहता है, के लिए फ़ौरन क़ुबूल करने के क़ाबिल है। इस कहने से कि अल्लाह एक अकेला है जिसका कोई साझी नहीं है, इससे इंसान के ज़ेहन में किसी तरह का भुलावा नहीं पैदा होता है, और न यह बताता है कि अल्लाह किसी इंसान से पैदा हुआ है (मआज़ल्लाह)।

5- इस्लामी उसूल टिकाऊ और मिलेजुले हैंः

वह उसूल एक-दूसरे से टकराते नहीं, और न पक्के उसूलों की नहीं करते हैं। ईसाइय यहूदी और इस्लाम धर्म सब अल्लाह के अद्ल इंसाफ़ और सच्चाई की सीख देते हैं। इस्लाम इस बुनियादी उसूल पर पूरी तरह चलता है, इसकी बुनियाद पर और दूसरे दीनी उसूलों को मुरत्तब करता है, जो मिलजुल कर न्याय के उसूल पर चलते हैं। अल्लाह इंसाफ़ करने वाला और सत्य (हक़) है, वह किसी ज़ी रूह पर कोई ऐसी ज़िम्मेदारी नहीं डालता, जो उसकी सकत से बाहर हो। इस्लाम हमें यह भी बताता है कि वह महान इंसाफ़ अल्लाह किसी एक को ज़िम्मेदारी नहीं क़रार देता, मगर इस बात के लिए, जिसे उसने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से किया हो, वह किसी को उसके माँ-बाप के गुनाहों के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहराता, क्योंकि उसका कन्ट्रोल उन पर नहीं होता।

इस्लाम हमें बताता है कि कोई अपने बाप के किये गये काम के लिए ज़िम्मेदार नहीं है। इसलिए वह (अल्लाह) सारी इंसान जाति

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पर उस गुनाह के लिए इल्ज़ाम नहीं लगाता, जो इंसान जाति के वुजूद से पहले हुआ हो, क्योंकि इस तरह की मज़म्मत उलूही अद्ल के ख़िलाफ़ है। बजाए तमाम इंसान जाति पर पहले गुनाह के बोझ को लादने के, इस्लाम हमें यह बताता है कि हर इंसान गुनाह से पाक व साफ़ पैदा हुआ है, और वह इसी हालत में रहता है, जब तक कि वह बालिग़ हो और गुनाह कर बैठे।

6- इस्लामी उसूल का इंसानी ज़िन्दगी के हर पहलू के लिए पाज़िटिव निज़ामः

दूसरे मज़हबों के ख़िलाफ़ इस्लाम इंसानी ज़िन्दगी में रूहानी और माद्दी (मेटिरियल) दोनों सतहों की अहमियत पर ज़ोर देता है। इस्लाम की रू से अल्लाह इंसान को अपनी जिस्मानी ज़रूरतों को नज़र अन्दाज़ करने को नहीं कहता, क्योंकि इन की तरफ़ मुतवज्जह होने में और रूहानी तरक़्क़ी में किसी तरह का कोई बुनियादी टकराव नहीं है। बरख़िलाफ़ इसके दोनों अलग-अलग अपना वुजूद रखते हैं। यह एक-दूसरे से आन मिलते हैं और इनको ज़्यादा तर इंसानी कामों में मिलाया जा सकता है। कोई शख़्स, जिसके पास ज़रूरी खाना, कपड़ा और रहने को घर न हो, ज़रा मुश्किल ही से इबादत कर सकता है, और न वह बन्दा होने की ज़िम्मेदारी ही को पूरा कर सकता है, और न दूसरे इंसानों के साथ अच्छे सुलूक से पेश आ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सकता है। लेकिन जब उसकी ज़रूरियात पूरी हो जाएं, तो वह अपने को आसानी के साथ अल्लाह की तरफ़ राग़िब कर सकता है।

इसलिए नेक नियती के साथ बदन की ज़रूरियात को पूरा करने वाले तमाम काम दीनी फ़रीज़ों का हिस्सा हैं। इस्लामी तालीमात की रूह से दीन जिस्मानी ज़रूरियात को दबा देने को नहीं कहता, वह इंसान को ज़्यादती करने और अपने आप को और समाज को नुक़सान पहुँचाने से रोकता है।

इस्लामी उसूल आलमी हैं

इस्लामी तालीमात की आलमगी (Universal) को उनके इंसान होने के लिए ग़ैर जानिबदाराना कारणों और पहले के नबियों का एतेराफ़ करके पहचाना जा सकता है। शुरु से ही इस्लाम ने आलमगीर रवैय्ये को जारी रखा। इसने तमाम इंसानी नस्ल को अपने घेरे में लिया, न तो मुल्कों के बीच फ़र्क़ किया और न अक़लियती (अल्पसंख्यक) गिरोहों के बीच। वह हर इंसान को एक बड़े इंसानी ख़ानदान का मेम्बर तसव्वुर करता है। अल्लाह के नज़दीक न तो कोई मुल्क, न आदमी अपनी पैदाइश, शहरियत और न कोई और किसी ख़ास पहले से बनी सोच की नज़र (दाइमन) से अल्लाह का चुना हुआ, ख़ास हैसियत वाला है। लोग अल्लाह की नज़र में एक से हैं, और हर एक को अल्लाह की हुकूमत में (रहमत) नसीब होगी,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बशर्ते कि वह नेक काम करने वाला हो।

एक सच दूसरे सच की कभी भी मुख़ालिफ़त नहीं करता। लिहाज़ा इस्लाम का एलान है कि सिर्फ़ एक अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ एक ही दीन है, जिसको मुख़्तलिफ़ वक़्तों और ज़मानों में पैग़म्बरों पर वही के ज़रिये उतारा जा चुका है, जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने पैग़ाम को इंसान जाति तक पहुँचाने के लिए भेजा था। यह तो अक़्ल में समाने वाली बात नहीं है कि अल्लाह किसी पैग़म्बर को अपना पैग़ाम पहुँचाने के लिए भेजे और फिर किसी दूसरे को एक ऐसा पैग़ाम देकर भेजे, जो पहले पहुँचाए गये पैग़ाम की नहीं करता हो। मुख़्तलिफ़ इंसानी तहज़ीबों के दौरान, अल्लाह ने उसके पैग़ाम को समझने के लिए इंसान की इस्तेदाद (Competence) के मुताबिक़ वही के ज़रिये ख़ुदाई उसूल, अहकाम और क़ानून को उतारा है। अगली वही पिछली वही की मदद में और उसे बढ़ावा देने वाली होती रही है, न कि उसकी नहीं करती हुई आती रही है। इसलिए इस्लाम का फ़रमान है कि हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह हज़रत ईसा[अ०], हज़रत मूसा[अ०], और दूसरे सच्चे नबियों (और उनकी सच्ची तालीमात) को पहचाने और उनकी इज़्ज़त करे। इस बात को क़ुरआन ने बार-बार दोहराया हैः

तर्जुमाः ''और मुसलमानो! तुम उन से कहो कि हम अल्लाह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पर और जो उसने हमारी तरफ़ भेजा है और जो इब्राहीम[अ०], इस्माईल[अ०], इस्हाक़[अ०], याक़ूब[अ०], याक़ूब[अ०] की औलाद की तरफ़ नाज़िल किया है और जो मूसा[अ०], ईसा[अ०] और नबियों[अ०] को रब की तरफ़ से दिया गया है, उन सब पर ईमान ले आए हैं। हम इनमें से किसी में फ़र्क़ नहीं करते और हम अल्लाह के सच्चे मुसलमान हैं।''

ईसाई, जो इस्लाम के शुरु के दिनों में मुसलमानों से राब्ते में थे, उन्होंने देखा कि मुसलमान हज़रत ईसा[अ०] की बहुत ज़्यादा इज़्ज़त व बड़ाई करते हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि लाखों ईसाईयों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया, इसलिए नहीं कि वह हज़रत ईसा[अ०] के तालीमात से किनारा करने वाले थे, बल्कि इसलिए कि उनकी सच्ची तालीमात पर इस्लाम की सच्ची और सही तालीमात पर चलना चाहते थे।

विल्सनः क्या इस्लाम इसकी वकालत करता है कि वह मुबल्लिग़ीन को ग़ैर मुस्लिमों से इस तरह से, जिस पर ईसाई अमल पैरा होना चाहते थे।

चिर्रीः ईसाइयत की तरह इस्लाम भी ग़ैर मुस्लिमों को अपने उसूलों को समझने की दावत देता है, और ग़ैर मुस्लिमों को अपने मानने वाले (मुसलमानों) से जुड़ने को कहता है। मगर इस्लाम ने ईसाईयत की तरह मिशन (Mission) कभी नहीं बनाया। जब कभी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

भी कोई ग़ैर मुस्लिम इस्लाम के बारे में जानने और समझने में दिलचस्पी ज़ाहिर करता है, तो हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह उसे उसके बारे में बतलाए। इस तरह के काम का तरीक़ा बहरहाल मिशन के तश्कील देने के मुक़ाबले में अलग क़िस्म का है।

ईसाइयत की तरह बा क़ायदा मिशन बनाना इस्लाम ने न होना, इस वजह से है कि इस्लाम में राहिबी (दुनिया छोड़ देना) नहीं है। और दूसरी वजह यह है कि ज़्यादातर मुसलमान यह ख़याल करते हैं कि इस्लाम बग़ैर मिशनरियों के भी फैल जाएगा। इसकी वजह यह है कि इस तरफ़ इस्लाम को बहुत ज़्यादा और नुमाइन्दा कामयाबी हासिल होती रही है, जबकि उन्होंने कोई बहुत ज़्यादा कोशिश भी न की थी।

कई मुल्कों में करोड़ों लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया, किसी क़ायदे से गठे हुए मिशन के ज़रिये से नहीं, बल्कि मुसलमानों से राब्ते की वजह से, जिन्होंने उन पर अपनी उसूल पसन्दी और पक्के उसूलों से असर डाला। उन मुसलमानों ने दूसरों (ग़ैर मुस्लिमों) को अपने अक़ीदे के बारे में बतलाया, इसलिए नहीं कि वह किसी सरकार के ज़रिए मिशनरी की हैसियत से भेजे गये थे, बल्कि इसलिए कि वह इस पर यक़ीन रखते थे कि इस्लाम हर मुसलमान के ज़िम्मे है।

मैं पच्छिमी अफ़्रीक़ा कई बार गया हूँ। दुनिया के इस इलाक़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

में मैंने कुछ मशहूर मिशनरियों (Missionaries/ मुबल्लिग़ीन) को सरगर्म पाया, मगर मुझे वहाँ कोई गठा हुआ (Organized) मुस्लिम मिशन नज़र नहीं आया। इसके बावजूद वहाँ जानकार लोगों में इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि यहाँ ईसाइयत के मुक़ाबले में इस्लाम ज़्यादा तेज़ी से फैल रहा है।

विल्सनः क्या आपको दुनिया भर में फैले ईसाई मिशनरियों की तादाद के बारे में कुछ मालूम है?

चिर्रीः (डेट्रॉएट न्यूज़, इतवार 2 अप्रैल 1961 के बमूजिब) दुनिया भर में फैले हुए ईसाई मिशनरियों की तादाद 2,12,250 है। इन में 1,70,000 कैथोलिक और 42,250 प्रोटेस्टेंट हैं। लाखों की तादाद में इन की मदद हज़ारों ईसाइयों के मज़हबी इदारे करते हैं, जो हर साल करोड़ों डॉलर्स इस मिशन पर ख़र्च करते हैं। इसके मुक़ाबले में मुसलमानों के कुछ मालूमाती सेंटर हैं, जिनकी दुनिया भर में तादाद एक हज़ार है बमुक़ाबला ईसाई मिशन के, इन इदारों को कोई मदद इस तरह की नहीं मिलती है, जो ईसाई सन्टरों को मिलती है, और न वह दूसरों को (बहला फुसलाकर) मुसलमान बनाना चाहते हैं। इनका मक़सद तो सिर्फ़ मालूमात का पहुँचाना है, उनको जो ऐसी जानकारी लेना चाहते हैं, वह भी अपनी हद तक।

विल्सनः कुछ लोग इस्लाम के फैलने को (मामलात में) इसकी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ढील बताते हैं। उनका ख़याल है कि इस्लाम दूसरे मज़हबों, जैसे ईसाइयत के मुक़ाबले में, अपने मानने वालों से कुछ कम की माँग करता है। आपका क्या ख़याल है?

चिर्रीः मेरा ख़याल है कि यह राय सही नहीं है। (बल्कि दीन) इस्लाम अपने मानने वालों से और मज़ाहिब से ज़्यादा की माँग करता है। यह अपने मानने वालों से पाँच वक़्तः सुबह सूरज निकलने के पहले, दोपहर, दोपहर के बाद, सूरज डूबने पर और फिर शाम (रात की तरफ़ बढ़ने) के वक़्त पर, नमाज़ की माँग करता है (जो वाजिब हैं)। फिर यह इन पर पूरे एक माह के रोज़े वाजिब करता हैः एक रोज़ेदार को सूरज निकलने से (लगभग डेढ़ पौने दो घन्टे) पहले से लेकर सूरज डूबने तक न तो कुछ खाने और न कुछ पीने की इजाज़त है। इसमें सिग्रेट पीना भी शामिल है। इस्लाम एक माली तौर से और जिस्मानी तौर से मज़बूत बालिग़ पर मक्का (जो सऊदी अरब में है) जाकर हज को बजा लाने को वाजिब ठहराता है। यहाँ और भी ज़ियारतें हैं (मसलन क़ब्रे मुतह्हरे नबी[स०], जहाँ जाना वाजिब है)। हज में हर आराम व आसाइश को छोड़ना होता है, हज में सिले हुए कपड़े भी नहीं पहन सकते हैं।

इस्लाह हर मुसलमान से अपनी दौलत (Wealth) में से हर साल बसाल एक हिस्सा ज़कात (ख़ैरात) में देने को कहता है। इसने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

शराब और सुवर का गोश्त हराम क़रार दिया है। इन बातों में किसी तरह की ढील इस्लाम ने नहीं दी है। इसी तरह इस बात में भी कोई ढील नहीं है कि दूसरों के साथ भाईचारे से पेश आओ, उनकी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करो और कोई ऐसी बात न कहो, जिस से उनकी बातें (ग़लतियाँ) खुल जायें, उनकी भी जो तुम्हें नुक़सान पहुँचाते हैं।

विल्सनः कुछ आलोचक (Critics) कहते हैं कि इस्लाम ने अच्छे मुसलमानों से जन्नत का वादा किया है, जहाँ वह हर चीज़ का मज़ा लेंगे, जैसा कि वह चाहेंगे। उनका कहना है कि इस्लाम ने (इस मामले में) ईसाइयत को पीछे छोड़ दिया है। इस तरह वह लोगों को उन वादों के साथ अपनी तरफ़ राग़िब करता है।

चिर्रीः एक वादा मोह लेने वाला होता है, अगर वह क़ाबिले भरोसा ज़रिये से किया जाता है। अगर जानी मानी और साख वाली कम्पनी किसी फ़र्द को ज़्यादा पैसे वाली नौकरी देती है, तो ज़्यादा ख़याल है कि वह उसकी पेशकश को क़ुबूल कर लेगा। इसके बरख़िलाफ़ अगर इसी को एक नाक़ाबिले भरोसा और दीवालिया कम्पनी नौकरी देती है, तो वह इस पेशकश को मना कर देगा, क्योंकि उसे कम्पनी की माली हैसियत पर भरोसा न होगा।

इसी तरह मैं यह नहीं समझाता कि एक मज़हब बदलने वाला

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बहुत सारी मन पसन्द बातों को छोड़कर इतनी ज़िम्मेदारियों को निभायेगा, वह भी सिर्फ़ वादे के बल पर, अगर उसे इस्लाम में एतेक़ाद और भरोसा न होगा। कोई ऐसा वादा सुहावना नहीं होता, जो नाक़ाबिले भरोसा होता है। इसी तरह कोई वादा बेकशिश होता, अगर वह नाक़ाबिले भरोसा ज़रिये से किया गया हो। वादा भरोसे के बल पर ही दिल लगता है। इसलिए इस्लाम पर भरोसे वादे की कशिश से पहले है। (अगर भरोसा न हो, तो वादे की कशिश कैसी ?)।

विल्सनः हिस्ट्री बताती है कि पहले के मुसलमान, दहशतगर्द और लड़ाकू थे। मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों में सीरिया, मिस्र, उत्तरी अफ़्रीक़ा, स्पेन और दूसरी कई जगहों पर कई हथियारबन्द लड़ाईयाँ हुई हैं। कुछ आलेचक कहते हैं कि इस्लाम में तबलीग़ और बहस व मुबाहेसा नहीं, बल्कि ताक़त के बल पर फैलाया गया है।

चिर्रीः ताक़त बदन तो जीत दर्ज कर सकती है, पर रूह को जीत नहीं सकती। आप किसी आदमी या गिरोह को ताक़त से ख़ामोश कर सकते हैं, मगर आप उन्हें इस पर मजबूर नहीं कर सकते कि वह यह मानने लगें कि आप हक़ पर हैं। अलजीरिया पर लगभग एक सौ बरस तक फ़्रांस का कन्ट्रोल रहा, मगर यह न हो सका कि राज करने वालों से मोहब्बत की जा सके। जैसे ही उन्हें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मौक़ा मिला, उन्होंने अपने राजाओं के ख़िलाफ़ हथियार उठा लिये और उनकी हुकमत को तोड़ डाला।

यह यक़ीन करना अक़्ल के ख़िलाफ़ है कि इस्लाम ताक़त के बल पर फैला। मोहम्मद[स०] एक अकेले आदमी की हैसियत से हज़ारों या सैकड़ों अफ़राद को उनके अक़ीदे को अपनाने के लिए मजबूर न कर सकते थे। हिस्ट्री गवाह है कि मोहम्मद[स०] तेरह साल मक्का में, अपने अक़ीदे के एलान करने के बाद रहे, इस हालत में कि उनके मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से उन्हें बराबर धमकियाँ मिल रही थीं, उनकी तरफ़ से, जो मक्का में अकसरियत में थे। जिस किसी ने इस्लाम में दाख़िल होने को कहा, उसको ज़लील किया जाता था, धमकी दी जाती थी और मक्का वालों के हाथों उन से बराबर नीच रवैय्या इख़्तियार किया जाता था, मगर इसके बावजूद मुसलमानों की तादाद में इज़ाफ़ा होता गया। क्या हम यह तसव्वुर कर सकते हैं कि इन हालात में मोहम्मद[स०] लोगों को ताक़त के बल पर मुसलमान बना सकते थे, जबकि वह ख़ुद भी अरसे तक ज़ुल्म के निशाने पर रहे?

फिर बाद को मुसलमान काफ़ी ताक़तवर हो गए कि अपने मुख़ालिफ़ीन से लड़ने के क़ाबिल हुए, और हिस्ट्री बताती है कि उन्होंने इस्लाम की ख़ातिर बचाव वाली (Defensive) जंग की। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि इस्लाम ने उन लोगों को ज़बरदस्ती

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुसलमान बनाया। आज इन्डोनेशिया में लगभी दस करोड़ लोग मुसलमान हैं और करोड़ों मग़रिबी अफ़्रीक़ा में हैं। यह सब लोग मुसलमानों के साथ अच्छे बरताव की वजह से मुसलमान हुए, वह जो कि इन इलाक़ों में बिज़नेस या पढ़ाने के लिए आए थे।

हालांकि कोई ऐसी वजह नहीं है कि जिसकी वजह से इनकार किया जाए कि मुसलमान दहशतगर्द थे। दरअस्ल मुसलमान अपनी आज़ादी का बेहतरीन बचाव करने वाले थे। हमें मालूम है कि कोई आइडियालोजी (Ideology) किसी ग़ैर आज़ाद समाज में न तो फैल सकती है और न बाक़ी रह सकती है। बग़ैर आईनी मुहाहिफ़ज़त के यह ज़िम्मेदारी आइडियालोजी के मानने वाले लोगों की होगी कि वह ख़ुद अपनी आज़ादी की हिफ़ाज़त करें। अगर यह काम पहले के मुसलमानों की मिलेट्री की ताक़त को जायज़ नहीं क़रार दे सकता, तो फिर मौजूदा दौर के किसी मिलेट्री की ताक़त वाले मुल्क को जायज़ क़रार नहीं दे सकते, जो अपने मुख़ालिफ़ीन से ज़ोर ज़बरदस्ती करने पर अपनी आज़ादी के बचाव के लिए उठ खड़े होते हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-4

इस्लाम दुनिया की तख़्लीक़ को कैसे देखता है ?

विल्सनः साइंस की तरक़्क़ी के साथ-साथ दुनिया के पैदा होने के मुताल्लिक़ बहुत से सवालात उठत सकते हैं। इन सवालों का जवाब इंजील से मुमकिन नहीं है, बल्कि कभी ऐसा भी नज़र आता है कि इंजील में दर्ज बयानात मौजूदा साइंस से मुख़्तलिफ़ हैं। मुझे अजब सा लगता है (यह कहने में) कि हम इस्लाम की किताब (क़ुरआन) में कुछ सवालात का जवाब पा सकते हैं ?

अब यह साबित हो चुका है कि दुनिया बहुत क़दीम है। इसकी उम्र अरबों साल की आँकी गई है। ऐसा मालूम होता है कि मौजूदा इंजील ने दुनिया की उम्र को घटाकर चंद हज़ार साल कर दिया है। क्या मुक़द्दस क़ुरआन में काएनात की उम्र की कोई बात मौजूद है ?

चिर्रीः मुक़द्दस क़ुरआन काएनात की उम्र की बहरहाल कोई बात नहीं करता। साइंस ने अभी तक यह न बताया है कि काएनात

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

का कब से आग़ाज़ हुआ है। मुक़द्दस क़ुरआन उस वक़्त नाज़िल हुआ था, जब साइंस का दौर न था, जब लोग वक़्त की जानकारी मिलियन (Million) साल और बिलयन (Billion) साल में नहीं कर पाते थे। अगर क़ुरआन ने यह बयान किया होता कि सितारे अरब साल पहले वुजूद में आए थे, तो बहुत सारे लोगों ने इस्लाम के तसव्वुर को मुकम्मल तौर पर ठुकरा दिया होता। लिहाज़ा क़ुरआन इस बात पर ख़ामोश है। सच तो यह है कि जो भी 'सच' आप जानते हैं, वह सब का सब कह देना ज़रूरी तो नहीं होता, अलबत्ता लोगों को ग़लत बातें बताने से बचना चाहिए। लिहाज़ा किसी भी साइंसी नज़रिये के लिए दरवाज़े खुले रखे गये, ताकि दीनी इल्म का उमूरे साइंस से कोई टकराव न हो।

विल्सनः आसमानी पिन्ड, सितारे और सैय्यारे (Planets) अब अरबों बिलयून साल के लिहाज़ से नापे जाते हैं। हर एक नाप बड़ी है, यहाँ तक कि हमारे तसव्वुरात से भी परे है। उन्हें बताने के लिए जो ज़रूरी बातें दरकार हैं, वह हमारी नापने की सलाहियत से परे हैं। क्या क़ुरआन में कोई इस तरह का बयान है कि यह किस तरह की चीज़ों से बनाए गए हैं?

चिर्रीः मुक़द्दस क़ुरआन बयान करता है कि वह चीज़ें जिन से उन्हें बनाया गया, वह एक तरह की गैस थी। यह बात आज के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़माने के नज़रिये के ऐन मुताबिक़ है, जो यह बयान करता है कि इन को हाइड्रोजन गैस से पैदा किया गया है। क़ुरआन बयान करता है:

तर्जुमाः ''इसके बाद उसने आसमान का रुख़ किया, जो बिल्कुल धुंआँ था और उसे और ज़मीन को हुक्म दिया कि ख़ूशी या कराहत से हमारी तरफ़ आओ, तो दोनों ने अर्ज़ किया कि हम ख़ुशी-ख़ुशी बनकर हाज़िर हैं।'' (सूरए फ़ुस्सित, 41/11)

विल्सनः क्या क़ुरआन में कोई बयान इस तरह का है कि सबसे पहले किस माद्दी चीज़ को पैदा किया गया?

चिर्रीः ऊपर वाली आयत यह बताती है कि भाँप या जो चीज़ भी मोलीक्यूल्स (Molecules) की भाप बनाती है वह और ऐटम (Atom) वह पहली चीज़ों में से हैं, जो इस दुनिया में मौजूद थीं।

विल्सनः अल्लाह तआला ने किस चीज़ से ज़िन्दगी को पैदा किया?

चिर्रीः क़ुरआन बयान करता है कि अल्लाह तआला ने आम रूह वाली चीज़ों को पानी से पैदा किया।

तर्जुमाः ''क्या इन काफ़िरों ने नहीं देखा कि यह ज़मीन व आसमान आपस में जुड़े हुए थे और हम ने इनको अलग किया है और हर जानदार को पानी से क़रार दिया है। फिर क्या यह लोग

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ईमान न लाएंगे?'' (सूरए अम्बिया, 21/30)

तर्जुमाः ''और अल्लाह ही ने हर ज़मीन पर चलने वाले को पानी से पैदा किया है, फिर उनमें से कुछ पेट के बल चलते हैं और कुछ दो पैरों पर चलते हैं और कुछ चारों हाथ-पैर से चलते हैं और अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है कि वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।'' (सूरए नूर, 24/45)

दुनिया पैदा होने की कड़ियाँ

विल्सनः क्या क़ुरआन इंजील के इस बयान की तस्दीक़ करता है, कि जो किताब Genesis (चीज़ों की शुरुआत) में दुनिया के पैदा होने की कड़ियाँ सिलसिले के बारे में मुन्दरज है?

चिर्रीः क़ुरआन में पैदा होने की कड़ियों के बारे में इस तरह का कोई बयान नहीं है, लेकिन मुसलमान किताब Genesis के पहले बाब में जो कुछ दर्ज है, उस से मुत्तफ़िक़ नहीं हैं, क्योंकि इसमें बहुत सी कमियाँ हैं।

विल्सनः मुझे आप इन आपस में टकराती बातों से आगाह कीजिए जिनका आप हवाला दे रहे हैं?

चिर्रीः मिसाल के तौर परः

कुरआन का यह बयान हमें बताता है कि पहले दिन-रात पैदा हुए। मगर हमें यह भी मालूम है कि दिन-रात से पहले सूरज का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

वुजूद ज़रूरी है, जिसके निकलने और डूबने से दिन और रात नमूदार होते हैं। 5वीं सूरह की आयत-14 इस तरफ़ इशारा करती है कि सूरज चौथे दिन पैदा किया गया था।

क़ुरआन की एक आयत हमें बतलाती है कि सूरज चौथे दिन पैदा किया गया, इसलिए कि दिन को यहाँ से शुरु होना था। मगर यह कि इसी सूरह की आयत-3 से कुछ अलग बयान है, क्योंकि आयत-3 हमें सूरज के पैदा किये जाने से क़ब्ल तीन मरहले (Stages) बताती है।

2- इसी सूरह में बयान हुआ है कि हरियाली, पौधे, जो बीज पैदा करते हैं और फलदार पेड़ इसी दिन पैदा हुए और परवान चढ़े।

हमें यह भी मालूम है कि इनमें से कोई हरियाली, कोई पौधा बग़ैर सूरज के पनप नहीं सकता और यही सूरह हमें, जैसा कि बयान किया गया, यह भी बताता है कि सूरज चौथे दिन पैदा हुआ।

3- फिर यही सूरह यह भी बयान करता है कि अल्लाह ने छटे दिन इंसान को अपने परतौ में पैदा किया।

मुसलमानों का अक़ीदा है कि अल्लाह का न कोई परतौ (छाया) है और न कोई आकार। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। सारी दुनिया उसके क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में है। न तो उसका कोई बदन है, और न वह माद्दी वुजूद रखता है, और न हमारी नज़र उसे देख

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सकती है। यह सोचना भी अल्लाह का पैकर इंसानी पैकर की तरह है, मुसलमानों की नज़र में अल्लाह के मुताल्लिक़ असल अक़ीदे के ख़िलाफ़ है।

4- पहला सूरह दूसरे सूरह की 'नहीं' करता है, क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं कि उस (अल्लाह) ने फ़रमाया है कि उसने (अल्लाह ने) हरियाली, और पेड़-पौधे तीसरे दिन पैदा किये, (यानी) इंसान के पैदा होने से पहले, जिसे छटे दिन पैदा किया गया था।

अगला बाब -दूसरा बाब- यह बताएगा कि इंसान हरियाली और पौधों से पहले पैदा हुआ।

''यह आसमानों और ज़मीन में नस्लें (पीढ़ियाँ) हैं, जबकि वह ख़ल्क़ हुए। उस दिन में कि मालिक अल्लाह ने ज़मीन और आसमानों, जब तक ज़मीन में कोई पौधा न उगा था। क्योंकि मालिक अल्लाह ने यह न कहा था कि ज़मीन पर बारिश हो, और वहाँ कोई आदमी न थे कि ज़मीन को गोड़ता... मगर एक कोहरा ज़मीन से उठा और ज़मीन के तमाम रुख़ को पानी दिया... फिर मालिक अल्लाह ने ज़मीन की ख़ाक से आदमी को ख़ल्क़ किया और उसके नथनों में ज़िन्दगी की साँस, हवा फूँकी और इंसान एक रूह वाला बन गया। और मालिक अल्लाह ने अदन, पूरब में एक बाग़ लगा दिया, और यहाँ उसने आदमी को, जिसने उसे बनाया था, रखा...

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और उस से, ज़मीन से, मालिक ख़ुदा ने हर शजर को बढ़ाया, जो नज़र को भाता है, और खाने के लिए अच्छा है, इस बाग़ के बीच में ज़िन्दगी का शजर भी, और अच्छाई और बुराई के इल्म का शजर भी।'' (2:49 Genesis)

यह बयान वाज़ेह तौर पर बताता है कि ख़िलक़ते इंसान से पहले किसी पौधे का वुजूद नहीं था।

इस बयान में एक और बात मौजूद है, यानी यह कि एक पौधा इल्म का, अच्छाई और बुराई का, मौजूद था। मगर हम जानते हैं कि इल्म दरख़्त पर नहीं परवान चढ़ता है, और यह तजुर्बा इल्म पाने से मिलता है।

5- यह बयान साफ़-साफ़ इशारा कर रहा है कि इंसान मछली, चिड़ियों, जंगली जानवरों (जैसे शेर, चीता और) गाय-बैल के बाद पैदा हुआ, मगर दूसरा सूरह बताता है कि इंसान इन सब से पहले पैदा हुआ।

6- हमें Genesis के तीसरे बाब में मिलता है कि (हज़रत) हौव्वा को साँप ने धोखा दिया, और फुसला कर उन्हें मना किये हुए पेड़ से फल खाने को कहा।

उस साँप ने उस औरत से कहाः क्या ख़ुदा ने कहा (कि) तुम बाग़ के किसी दरख़्त से (फल) न खाओगी... मगर साँप ने उस

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

औरत से कहा, तुम मरोगी नहीं, क्योंकि ख़ुदा जानता है कि जब तुम उस दरख़्त से उसका (फल) खाओगी तो तुम्हारी आँखें खुल जाएंगी... .'' (3ः 1-5 Genesis)

मगर हमें मालूम है कि एक साँप न तो बोल सकता है, न धोखा दे सकता है और न बहला-फुसला सकता है, क्योंकि साँप को (इंसान की तरह) ज़ेहनी ताक़त और अलफ़ाज़ को अदा करने की सलाहियत और बातचीत करने की सकत नहीं दी गई है।

7- इसी बाब में हमें मिलता है कि ख़ुदा के इल्म को महदूद कर देने वाला क्या है, और यह कि वह चल फिर सकने वाला बदन है, और यह भी कि आदम[अ०] और हौव्वा अपने को ख़ुदा से छुपा सकते थे।

''और उन्होंने मालिक ख़ुदा के दिन के ठन्ड़े में बाग़ में चलने की आवाज़ सुनी, और उस मर्द और उसकी बीवी (आदम और हौव्वा) ने अपने को ख़ुदा से छुपा लिया, कि मालिक ख़ुदा मौजूद था बाग़ के पेड़ों के बीच। लेकिन मालिक ख़ुदा ने उस आदमी को पुकारा और उस से कहाः ''तुम कहाँ हो?'' और उसने कहाः ''मैं ने तेरी आवाज़ बाग़ में सुनी और मैं डर गया, क्योंकि मैं नंगा था, और इसलिए मैंने अपने को छुपा लिया, उसने (ख़ुदा ने) कहाः तुम्हें किसने बताया कि तुम नंगे हो? क्या तुम ने इस पेड़ से खाया है, जिसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

लिए मैंने तुमको हुक्म दिया था कि तुम (इस से) न खाना...'' (3ः 8-11)

अल्लाह से कोई अपने आपको छुपा नहीं सकता, जो हमेशा-हमेशा से मौजूद है और जो सब जानने वाला है, न तो उसे इसकी ज़रूरत है कि वह आदम[अ०] से सवाल करे कि क्या उन्होंने इस पेड़ से कुछ खाया है?

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–5

दुनिया का सिरजनहार (ख़लिक़)

विल्सनः मुझे मालूम है कि अल्लाह में विश्वास, जो ख़ालिके़ काएनात है, इस्लामी अक़ीदे में पहली शर्त है, और यह कि उस (अल्लाह) के वुजूद से इनकार करने वाला दीने इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है। मगर मुझे यह मालूम नहीं है कि क्या इस्लाम में अल्लाह के वुजूद पर कोई ठोस सुबूत है या फिर वह अपने मानने वालों से क़ुरआन में बयान क़ाबिले भरोसा लफ़्ज़ों पर और नबी[स०] की हदीसों पर भरोसा रखने की सलाहियत देता है।

चिर्रीः इस्लाम अपने मानने वालों से अल्लाह, ख़ालिके़ काएनात, पर ईमान लाने का हुक्म तो देता है, मगर इसकी राय नहीं देता कि वह अपने इस विश्वास को किसी मज़हबी किताब के बयान या किन्हीं क़ाबिले भरोसा लफ़्ज़ों पर, गरचे वह मुक़द्दस किताब क़ुरआन के हों या मुक़द्दस नबी ही के क्यों न हों। मुक़द्दस किताब, जैसे क़ुरआन या एक मुक़द्दस नबी जैसे मोहम्मद[स०] (पर ईमान लाने) से पहले हमें अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए। यक़ीनन इसके ख़िलाफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नहीं! किसी भी मज़हबी किताब पर सभी लोग अक़ीदा नहीं रखते, और न तो एक नबी को आमतौर से माना जाता है। लिहाज़ा यह फ़ायदेमन्द न होगा कि किसी नबी के मोतबर बयान पर या किसी मुक़द्दस किताब के ज़रिये से किसी काफ़िर से, जो वही को न मानता हो और अल्लाह पर मौजूद हर बयान की नहीं करता हो, बहस की जाए। एक मज़हबी किताब मुक़द्दस है, क्योंकि इसे हमें एक पाक (महान) शख़्सियत ने, जिसे हम नबी मानते हैं, पहचनवाया है। पैग़म्बरी का वुजूद मुमकिन है, कि अल्लाह का वुजूद है क्योंकि एक नबी पैग़ामबर है अल्लाह का। इसलिए अल्लाह पर हमारा ईमान, हमारे एक दीनी किताब या एक नबी पर ईमान लाने से पहले होना चाहिए, यक़ीनन इसके ख़िलाफ़ नहीं।

किसी भी मज़हबी किताब पर सभी लोग अक़ीदा नहीं रखते, और न तो एक नबी को आमतौर से माना जाता है। लिहाज़ा यह किसी फ़ायदे का न होगा कि किसी नबी के मोतबर बयान पर या किसी मुक़द्दस किताब के तवस्सुत से किसी काफ़िर से, जो मुनकिरे वही हो और अल्लाह पर मौजूद हर बयान की नफ़ी करता हो, बसह की जाए।

विल्सनः क्या मैं आपके बयान को सुनकर यह समझ लूँ कि इस्लाम भरोसे वाला और आमतौर से क़ुबूल करने के क़ाबिल हर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सुबूत को वुजूदे ख़ुदा को साबित करने के लिए काम में लाता है? ऐसे सुबूत, जिन पर वह भी ग़ौर व फ़िक्र कर सकते हैं, जो किसी मज़हब में यक़ीन नहीं रखते, जैसे कि ला मज़हब और ''ख़ुदा है कि नहीं'' से तज़ब्ज़ुब में डूबे लोग (Agonastics) भी।

चिर्रीः जब अल्लाह में हमारा अक़ीदा किसी दूसरे मज़हबी अक़ीदे से पहले का हो, तो इस सुबूत को, जो इस मज़हब का बानी हो, आम होने के अलावा इसे हर समझदार शख़्स को दस्तयाब होना चाहिए, चाहे वह किसी मज़हब का (मानने वाला) हो या न हो।

मुक़द्दस क़ुरआन काएनात को ख़ालिक़ के होने के सुबूत के तौर पर पेश करता है। ख़ालिक़े मैटर ताक़त के पैदा करने वाले के वुजूद के सुबूत के तौर पर इस्लाम इस मेटिरियल दुनिया, आसमानी पिंडों और दूसरे सैय्यारों पर नज़र करता है। यह मेटिरियल दुनिया किसी मज़हब को न मानने वाले (नास्तिक) की नज़र में भी है और ईमान वालों की नज़र में भी और जाहिल और फ़लसफ़ियों की नज़र में भी। कोई चाहे वह किसी मज़हब को मानता हो या न मानता हो (और नास्तिक) भी हो, इस माद्दी दुनिया को देख सकता है, और एक अपनढ़ और एक फ़लसफ़ी भी। कोई भी आसमानी पिंडों और माद्दा और ताक़त के वुजूद पर ग़ौर व फ़िक्र कर सकता है, चाहे कि वह किसी मज़हब या उसकी किताब को मानता हो या कि न मानता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हो।

विल्सनः लेकिन सावल यह है कि कोई इस दुनिया के वुजूद से मैटर के ख़ालिक़ के वुजूद को क्यों मान लेने को तैयार हो? क्या यह मुमकिन नहीं है कि मैटर बग़ैर इसके बनाने वाले के वुजूद में आ रहा हो? फ़र्ज़ कीजिए कि कोई यह तसव्वुर करे कि मैटर या ताक़त हमेशा से हैं, और यह कि उनके वुजूद से पहले संसार नहीं था, तो क्या आप इस नज़रिये की नहीं कर सकते हैं?

चिर्रीः इस ख़याल को मानना बहुत मुश्किल है कि मैटर हमेशा से (अनादि) है। जब कभी कोई यह कहता है कि मैटर या ताक़त हमेशा से हैं, तो (दरअस्ल) वह यह तसव्वुर कर लेता है कि मैटर, और उस से बनने वाले करोड़ों सितारे साथ-साथ मौजूद थे। जबकि हम जानते हैं कि हर एक सितारा करोड़ों टन मैटर से बना है और यह कि कच्चे माल का बैलेंस उस (कच्चे) माल से कहीं ज़्यादा है, जो सितारों और आसमान के पिंड़ों में मौजूद है, (इसलिए) हम इस तसव्वुर के सही होने के फ़ेवर में नहीं मानते हैं। हम यह नहीं बावर कर सकते कि मैटर का यह तमाम वज़न एकाएक आन मौजूद हुआ और इस से पहले मैटर मौजूद ही न था। यह मानना कि मैटर का वज़न धीरे-धीरे बढ़ा, दरअस्ल यह मानना है कि कोई पैदा करने वाला है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

विल्सनः मैं आप से इस बात पर एक राय हो सकता हूँ कि मैटर और ताक़त अपने वुजूद से पहले मौजूद न थे। मगर यह बात हर इंसान पर साफ़ नहीं है। क्या इस्लामी तालीम में इस तरह का तसव्वुर है कि कोई चीज़ अपने वुजूद में आने से क़ब्ल इस तरह से मौजूद न थी?

चिर्रीः जी हाँ! कोई चीज़ है, जिसे हम सब जानते हैं, और वह ज़मीन के वुजूद में आने के बाद पैदा हुई, यानी ज़िन्दगी।

हमारे साइंटिस्ट बताते हैं कि ज़मीन बहुत ज़्यादा गर्म थी (और इसके उलट) कुछ कहते हैं कि यह बहुत ज़्यादा ठण्डी थी कि (इन दोनों सूरतों में) ज़िन्दगी का वुजूद नामुमकिन था। ज़मीन को ज़िन्दगी के लिए एक मुनासिब जगह बनने में करोड़ों साल लग गये। लिहाज़ा, इसमें कोई शक नहीं कि ज़िन्दगी, एक नये बच्चे (की तरह) है।

बहरहाल साइंस हमें बताती है कि किसी मुर्दा चीज़ से ज़िन्दगी वुजूद में नहीं आती है। पास्टर (Pasteur) का तजुर्बा, जो 19वीं सदी में किया गया था, आज भी मौजूद (व पक्का) है। उसने अपने सतरोंशुदा सूप (Sterlized Soup) के ज़रिये बग़ैर किसी शक के यह साबित कर दिया कि किसी मुर्दा चीज़ से ज़िन्दगी वुजूद में नहीं आती। आज भी साइंटिस्ट इस को ग़लत साबित नहीं कर सके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हैं।

अपने पैदा किये जाने के वक़्त ज़मीन अपने माहौल के साथ अनउपजाऊ थी। बेजान मैटर को जैसे कारबन (Carbon), हाइड्रोजन (Hydrogen), नाइट्रोजन (Nitrogen), कैलशियम (Calcium) और लोहे (Iron) को क़ुदरती तौर से जान वाले वुजूद में बदला नहीं जा सकता है। (इसलिए) ऐसा चमत्कारी तरीक़े से ही किया जा सका होगा। इसका मतलब यह है कि इस धरती पर ज़िन्दगी का वुजूद एक रौशन सुबूत है किसी बहुत महान अक़्ल और इंसानी अक़्ल से परे आकार देने वाले (सिरजनहार) के वुजूद का।

विल्सनः आप ने अपने बयान से इसे बहुत साफ़ कर दिया। दरअस्ल साइंटिस्ट ज़िन्दगी के राज़ को पाने के लिए और इसके इस ज़मीन पर आग़ाज़ को मालूम करने के लिए कई दहाईयों तक मेहनत करते रहे हैं। लेकिन उनकी इन कोशिशों के बावजूद कोई जैसा नतीजा चाहिए आज तक निकल न सका। बिला शुबह! इस ज़मीन पर ज़िन्दगी का (आग़ाज़ व) वुजूद एक बड़ा अजीब पहेली है कि यह काम बग़ैर किसी ग़ैबी (अनदेखी/छुपी) ताक़त के नहीं हो सकता था। इंसान ने इस नेचर के बहुत से राज़ों को साइंस और टेक्नालोजी की तरक़्क़ी के साथ-साथ समझ लिया है, वह चाँद पर भी हो आया, मगर इसके बावजूद अब तक ख़ुद से पौधे की एक पत्ती या सेब का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

एक बीज पैदा करने से बेबस है।

विल्सनः मैं अब आप से यह पूछना चाहूँगा कि क्या क़ुरआन ख़ुदा के वुजूद को साबित करने के लिए इस ज़मीन पर ज़िन्दगी के वुजूद का ज़िक्र करता है ?

चिर्रीः जी हाँ! मुक़द्दस क़ुरआन ज़मीन के बेजान हिस्सों को जानदार बनाने का ज़िक्र अल्लाह के वुजूद की एक निशानी के तौर पर करता हैः

(तर्जुमाः) ''और उनके लिए हमारे एक निशानी यह मुर्दा ज़मीन भी है, जिसे हम ने ज़िन्दा किया है और इसमें से दाने निकाले हैं, जिन से यह लोग खा रहे हैं। और इसी ज़मीन में खजूर और अंगूर के बाग़ पैदा किये हैं और सोते जारी किये हैं।'' (सूरए यासीन, 36/32-33)

विल्सनः अब तक आप ने अल्लाह के वुजूद से मुताल्लिक़ बहुत से अहम सवालों का जवाब दे दिया है, मगर अब एक और अहम सवाल है कि जिसका आपने ज़िक्र किया है, (और वह यह है कि) हम ख़ुदा को क्यों नहीं देख सकते ?

चिर्रीः इस से पहले हमारी चर्चा में यह तो साफ़ हो गया है कि दुनिया का एक पैदा करने वाला है और वह एक अकेला अल्लाह है और वह बिल्कुल से परम और अनन्त शक्ति वाला है, जो सारी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

दुनिया को घेरे है, वही हर जगह है, हर पल और कभी भी कहीं से (उसकी क़ुदरत/सकत का जलवा) ग़ायब नहीं होता। उसकी क़ुदरत का जलवा हर जगह है (हर-हर पल, हमेशा से, इस तरह से वह हमारे सामने है, इस क़ुदरत की निशानी नेचर के जलवे से पर)। तो अगर कोई कहे कि वह ज़ाहिर हो, तो इसके क्या मायनी कि उस से कोई फ़र्क़ पड़ने वाला नहीं है इसका (मआज़ल्लाह) ज़ाहिर होना, हमारे लिए बहुत सख़्त बर्बादी होगी कि इस से पहले कि हम (ऐसे हाल में) इस एक (अल्लाह) के बारे में मालूम करें, हम मिट जाएंगे, हर शख़्स अन्धा हो जाएगा कि जलवे की सकत कहाँ!

फ़र्ज़ कीजिए कि हवा (जो एक बहुत ही महददू जगह पर मौजूद है) नज़र आने लगे, तो चूँकि उसका रंग होगा, इसलिए हम उसके अलावा और किसी चीज़ को न देख पाएंगे, क्योंकि हवा ही माहौल पर छायी हुई है। अगर ऐसा हुआ, तो न तो हम अपना खाना ले सकेंगे और न पानी, और न हम अपने रहने के मकान और न सड़कों को पा सकेंगे। अगर हवा की दिखाई, जो (हमारे इर्दगिर्द) छोटी सी ज़मीन पर मौजूद है, इतनी अन्धा बनाने वाली और बर्बादी का कारण हो सकती है, तो इस सूरत में क्या होगा कि अगर हम सारे संसारों पर छाये ख़ालिक़ का दीदार कर सकें? जब हम इसके बारे में सोचते हैं, तो हमारी समझ में आता है कि हम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कितने ख़ुश नसीब हैं कि हम अपने पैदा करने वाले का दीदार नहीं कर सकते।

विल्सनः अगर ख़ुदा देखने में नहीं आता, तो हम किस तरह यक़ीन कर लें कि वह मौजूद है? एक नास्तिक भी कैसे यक़ीन कर ले कि ख़ुदा है, क्योंकि वह उसे देखता नहीं है?

चिर्रीः किसी चीज़ पर यक़ीन करने के लिए उसका देखना ज़रूरी नहीं होता, क्योंकि आप बिजली (Electricity) के वुजूद को मानते हैं, मगर उसे देख नहीं सकते, आप उसके वुजूद पर यक़ीन रखते हैं, क्योंकि आप उसकी पैदा की हुई रौशनी और गर्मी वग़ैरा को देखते और महसूस करते हैं। अगर बिजली के वुजूद पर यक़ीन करने के लिए यह काफ़ी है, तो यह फैली दुनिया हर इंसान के लिए उसके पैदा करने वाले के वुजूद पर ईमान विश्वास लाने के लिए काफ़ी है।

विल्सनः आप बिजली के अलावा कोई और मिसाल बयान कीजिए।

चिर्रीः ख़ुद आपका वुजूद आदम[अ०] और हौव्वा[अ०], और मुझे कहने दीजिए कि पहले दो इंसानों के वुजूद से एक बड़ा सुबूत है। आप ने आदम[अ०] और हौव्वा को देखा नहीं, मगर यह मानते हैं कि उनका वुजूद था।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इसको और साफ़ कहने के लिए (यह समझिये) कि आप अपने माँ-बाप की वजह से वुजूद में आए, और वह अपने माँ-बाप की वजह से वग़ैरा-वग़ैरा। इस तरह आप पीछे चलते चले जाएं कि आप आदम[अ०] और हौव्वा तक पहुँच जाएं। अगर आप उन दोनों के वुजूद से इनकार कर दें, तो आप इंसानी नस्ल की पहली कड़ी का इनकार करने वाले ठहरेंगे। पहली इंसान का इनकार करके उसकी अगली पीढ़ी और उसकी अगली पीढ़ी पीढ़ी का इनकार करते हुए आप ख़ुद अपने वुजूद का इनकार करने वाले ठहरेंगे। मगर आप अपने आप से कहियेः 'मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं यहाँ मौजूद हूँ'। फिर आपको यह भी कहना पड़ेगा कि आदम[अ०] और हौव्वा मौजूद थे।

विल्सनः आप ने बात को साफ़ कर दिया कि हमें ख़ुदा पर विश्वास रखना चाहिए, मगर (यह तो बताइये कि) हम यह कैसे यक़ीन करें कि इसकी कोई शुरुआत न थी, जबकि इसके अलावा हर चीज़ की शुरुआत है।

चिर्रीः इस दुनिया के पैदा करने वाले के लिए शुरु में मौजूद होने का सवाल ही नहीं उठता, वरना उसे (मआज़ल्लाह) एक और पैदा करने वाले की ज़रूरत होगी कि वह उसे पैदा करे। और वह ख़ुदा भी जो अपने वुजूद से पहले न था, एक पैदा करने वाले का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मोहताज होगा, वग़ैरा-वग़ैरा। इस तरह हमारे सामने एक न ख़त्म होने वाली ज़ंजीर की कड़ियाँ होंगी, बग़ैर किसी कारण तक पहुँचे, जो दुनिया के वुजूद की वजह हो, और फिर हमें दुनिया के होने ही से इनकार करना होगा, और ख़ुद अपने वुजूद से कि हम भी इस दुनिया ही के हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-6

एक ही पैदा करने वाला

विल्सनः आप ने इस से पहले यह बताया कि ख़ुदा के एक ही होने का क़ुरआन पाक में बार-बार ज़िक्र हुआ है। (देखें सवाल-2) और यह कि इसी वजह से इस्लाम को तौहीद का मज़हब कहा जाता है। (वह मज़हब, जो ख़ुदा के एक होने में ईमान रखता है) और जिस पर ईमान लाने के कलमे का पहला टुकड़ा तौहीद का हैः अश्हदु अल-लाइला-ह इल लल्लाह मोहम्मदुर रसूलुल्लाह (गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई ख़ुदा नहीं और मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं)।

क्या इस्लाम इस अहम उसूल पर कोई सुबूत पेश कर सकता है ?

चिर्रीः क़ुरआन पाक तौहीद को बयान करने के लिए दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के बीच लगाव को सुबूत के तौर पर बयान करता है। वह हमें सलाह देता है कि हम दुनिया के सिस्टम पर ग़ौर करें, और इस पर भी कि इस तरह का सिस्टम रह ही न सकता था,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अगर एक से ज़्यादा पैदा करने वाले होते कि दुनिया के एक से ज़्यादा चलाने वाले बमिस्ल एक ही शहर, एक ही राज्य या एक ही मुल्क के एक से ज़्यादा इन्तेज़ाम चलाने वाले होते, तो यह बिखराव और हाल बेहाल होने का कारण होते।

(तर्जुमाः) ''याद रखो अगर ज़मीन व आसमान में अल्लाह के अलावा और ख़ुदा भी होते तो ज़मीन व आसमान दोनों बर्बाद हो जाते। अर्श का मालिक रब उनके बयानों से बिल्कुल पाक व पाकीज़ा है।'' (सूरए अम्बिया, 21/22)

''और यह समझो मेरे बेटे'' इमाम अली इब्ने अबी तालिब ने अपने बेटे हसन[अ०] से फ़रमायाः ''अगर तुम्हारे मालिक (अल्लाह) का कोई साझी होता तो उस अल्लाह के साझी के पैग़म्बर भी तुम्हारे यहाँ आते। मगर वह (तो) एक अकेला बेसाझी अल्लाह है।'' (नहजुल बलाग़ा, 3/44)

विल्सनः 'तीनपन' (Trinity) के नज़रिये के मुताल्लिक़ इस्लाम का क्या कहना है?

चिर्रीः इस्लाम ज़ोर देकर इस की 'नहीं' करता है। क़ुरआन का एलान हैः

(तर्जुमाः) ''ऐ रसूल! कही दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बरहक़ (सत्य) और बेनियाज़ (उसे किसी की भी ज़रूरत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नहीं) है। उसकी न कोई औलाद है और न माँ-बाप। और न उसका कोई वर (जोड़ी) है।'' (सूरए इख़्लास, 112/1-4)

(तर्जुमाः) ''और यह लोग कहते हैं कि रहमान (बहुत ही रहम करने वाला) ने किसी को अपना बेटा बना लिया है। यक़ीनन तुम लोगों ने बड़ी सख़्त बात कही है। क़रीब है कि इस से आसमान फट पड़े और ज़मीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ें, कि इन लोगों ने रहमान के लिए बेटा ठहरा दिया है। जबकि यह रहमान के शायाने शान (ठीक) नहीं है कि वह किसी को अपना बेटा बनाए।'' (सूरए मरयम, 19/88-92)

विल्सनः इस्लाम ज़ोर देकर तीनपन के नज़रिये (Doctrine of Trinity) से इनकार क्यों करता है?

चिर्रीः इस्लाम तस्लीस (Trinity) का इनकार इस लिए करता है कि जिस्मानी तौर से अल्लाह के बेटा होने को किसी ज़िन्दा या मुर्दा के रूप में मतलब निकालना अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ है। न तो वह हदों में घिरा है और न उसका जिस्म है, और वह तो दोनों जहाँ का रखवाला है। उसको दूसरे जान वाले की तरह पैदा होने के लिए साथी की ज़रूरत नहीं है। इसी तरह से उसका किसी से रूहानी मीरास (Heriditary) भी अक़्ल से परे है, और यह कि वह ख़ुद इंसान का और हर चीज़ का पैदा करने वाला है। उसका किसी बन्दे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और चीज़ से रिश्ता यह है कि वह पैदा करने वाला है और सब उसके पैदा किये हुए, अगर इसके ख़िलाफ़ होता तो हर एक ख़ुद से आज़ाद होता और अल्लाह का साझेदार (मआज़ल्लाह)।

अब अगर कहा जाने वाला बेटा अल्लाह से जुड़ा हुआ है, तो ऐसा कहना इसके मायने है कि मैं और मेरा बेटा (दरअस्ल) एक हैं। अब अगर इस बयान को समझा जाए, तो यह भी कहा जाएगा कि मैं ख़ुद अपना बाप हूँ कि (इस बयान के लेहाज़ से) मैं ख़ुद अपना बेटा हूँ और मेरा बेटा ख़ुद अपना बेटा होगा, क्योंकि "वह", "मैं" हूँ और इस तरह (मआज़ल्लाह) अल्लाह ख़ुद अपना बाप होगा और उसका बेटा ख़ुद अपना बेटा।

अगर बेटा होने को उसके अस्ल मायनी में समझा जाए तो अल्लाह न तो किसी ज़िन्दा का और न किसी बेजान का बाप है। अगर इस लफ़्ज़ (अल्लाह) को अपने बन्दों पर रूपक (कहने के) इस मायनी में में इस्तेमाल किया जाए कि वह रहमान व रहीम है, तो वह सिर्फ़ एक बन्दे का नहीं, बल्कि सारे इंसानों का "बाप" है। और यह इस तरह की बात है, जिसे ईसाई दुआ के तरीक़े से भी समझा जा सकता है: "हमारे बाप! तू आसमानों में है..."।

हालांकि यह दुआ का तरीक़ भी इस्लाम से दूर है, क्योंकि यह बात गोलमोल होने के अलावा यह दुआ के अस्ल तरीक़े से हटा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुआ है। इसलिए मुसलमान इस तरह से दुआ नहीं करते।

विल्सनः आपके बयान से तो यह ज़ाहिर होता है कि मुसलमान ईसा[अ०] की रूहानियत पर ईमान नहीं रखते। क्या आपके पास उनकी रूहानियत के ख़िलाफ़ कोई दलील है?

चिर्रीः आपको ईसा[अ०] या मोहम्मद[स०] या किसी भी इंसान की रूहानियत को ग़लत ठहराने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन अगर आप अल्लाह को छोड़कर किसी भी रूहानियत का चर्चा उठायें, तो उसे आपको साबित करना होगा। अगर कोई कहे कि आप फ़रिश्ता हैं, तो उसे इसको साबित करना होगा। मगर मुझे यह कहने पर कि आप एक इंसान हैं, इसे साबित करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि आप हमारे सामने इंसान की हर ख़ुसूसियत के साथ मौजूद हैं, मगर वह शख़्स, जो यह कहे कि आप एक फ़रिश्ता हैं, तो उसे अपने इस दावे को साबित करना होग, क्योंकि उसका ऐसा कहना आम समझ में आने वाला नहीं है, और इसलिए भी कि यह जो कुछ हमारे सामने है, वह ऐसा नहीं बताता है।

जब कोई शख़्स यह कहता है कि ईसा[अ०] या मोहम्मद[स०] एक इंसान हैं, ख़ुदा नहीं, तो वह एक जानी मानी हक़ीक़त से एकराय नज़र आता है। ईसा[अ०] ने एक इंसान की तरह ज़िन्दगी गुज़ारी, इंसान की तरह सोये, खाना खाया, और उन पर (मज़लूम) इंसान की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तरह ज़ुल्म तोड़ा गया। इन सारी हक़ीक़तों के लिए किसी सुबूत की ज़रूरत नहीं है। लेकिन यह सब उस शख़्स पर फिट नहीं होते, जो अपनी रूहानियत का दावा करता है; क्योंकि उसका दावा आम समझ से दूर नहीं है। लिहाज़ा सिर्फ़ वही और कोई दूसरा नहीं, अपने दावे के लिए सुबूत पेश करेगा।

हालांकि मुसलमानों को ईसा की रूहानियत को साबित करने के लिए और उसका इनकार करने वालों के लिए किसी तरह का सुबूत पेश करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि ईसा के नबी होने को साबित करने के लिए एक नहीं, बहुत से सुबूत हैं।

1- ईसा[अ०] इबादत करते थे। बेशक! उन्होंने अल्लाह की इबादत की, अपनी नहीं। यह इस बात को साबित करता है कि वह कोई माबूद (जिसकी इबादत/भक्ति की जाए) न थे, बल्कि ख़ुद अल्लाह के बन्दे थे।

2- (हज़रत ईसा[अ०] की) तीन तालीमात (Gospels) के लेहाज़ से उनके आख़िरी अलफ़ाज़ थे ''मेरे अल्लाह, मेरे अल्लाह! तुने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' एक शख़्स, जो अल्लाह में अक़ीदा रखने वाला हो, वह ख़ुद ख़ुदा नहीं हो सकता।

3- अल्लाह हैइ (हमेशा रहने वाला) है, मगर ईसा[अ०] ऐसे न थे, अल्लाह क़ादिर (सब कुछ कर सकने वाला/सर्वशक्तिमान) है,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ईसा[अ०] पर ज़ुल्म हुए।

विल्सनः हम रूहानी नज़रिये से ईसा[अ०] को "ख़ुदा" क्यों नहीं मान सकते और (इसी तरह) उनके जिस्म रखने की वजह से एक मिटने वाला इंसान।

चिर्रीः "रूह" और "बदन" दोनों सिर्फ़ ईसा का हिस्सा न थे, क्योंकि हर इंसान के पास ये दोनों मौजूद होते हैं। आपके पास भी रूह व बदन है, और इसी तरह मेरे पास भी। और हम में से किसी की भी रूह मिटने वाली नहीं है, क्योंकि हमारी रूहें मौत के बाद भी मौजूद रहेंगी। मगर यह हमें एक "ख़ुदा" नहीं बनातीं और ईसा[अ०] को भी।

विल्सनः मगर ईसा[अ०] को हमारी तरह नहीं हैं। वह बाइबल और क़ुरआन के बयान से एक पाकीज़ा माँ से बग़ैर बाप के पैदा हुए थे। क्या इसका यह मतलब नहीं है कि वह इंसान से ऊँचे थे।

चिर्रीः बग़ैर बाप के एक औरत से पैदा होने का यह मतलब तो नहीं है कि वह इंसान न थे। आदम[अ०] बग़ैर माँ-बाप के पैदा हुए, उस (अल्लाह) ने उन्हें एक इन्सान के अलावा कुछ नहीं बनाया। (बक़ौल क़ुरआन):

(तर्जुमाः) "ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसी है कि उन्हें मिट्टी से पैदा किया और फिर कहा हो जा और वह हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

गया।'' (सूरए आले इमरान, 3/59)

न तो आदम[अ०] और न ईसा[अ०] पैदा करने वाले हैं, क्योंकि उन्होंने दुनिया को पैदा नहीं किया है।

विल्सनः हमें कैसे मालूम होगा कि वह दुनिया के पैदा करने वाले नहीं हैं?

चिर्रीः साइंटिस्ट हमें बताते हैं कि सितारे करोड़ों साल पहले के हैं, और ईसा[अ०] अब से दो हज़ार साल से भी कम साल पहले पैदा हुए। तो यह पुरानी काएनात इस से कम उम्र ''पैदा करने वाले'' ने भला कैसे पैदा की होगी?

विल्सनः आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, मैं सोचता हूँ कि आप ने सच को वाज़ेह करके मुझ जैसे सच की ओर झुकाव रखने वाले को मुतमइन कर दिया है। दरअस्ल जो सच आप ने बतलाए, वह आम लोगों की ज़बान पर हैं। यह ताज्जुब भरा है कि लोग किस तरह और क्यों इन्हें नज़र अन्दाज़ करते हैं। मेरा ख़याल है कि वह ऐसा इसलिए करते हैं कि उन्हें ईसा[अ०] की रूहानियत बचपन से बतलाई जाती है। इस सबक़ को बच्चों के घर और गिरजा में बार-बार इतना दोहराया जाता है कि यह बच्चों के ज़ेहन में जगह कर लेता है, और फिर जब वह बड़े होते हैं, तो वह इन ख़यालात साथ परवान चढ़ते हैं, और इसलिए वह इस पर सवाल नहीं उठाते,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

क्योंकि वह इस पर यक़ीन कर बैठते हैं। जो कुछ भी बताया गया है, उसने मुझ पर साफ़ कर दिया है कि अल्लाह के एक होने पर इस्लाम का अटल पैग़ाम सबसे ज़्यादा हक़ व सच है। लिहाज़ा मैं गवाही देता हूँ कि कोई माबूद नहीं है मगर अल्लाह, न तो उसका कोई साझी है, और न कोई बेटा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–7

ईसा[अ०] पर इस्लाम और ईसाई मज़हब में कहाँ–कहाँ इख़्तेलाफ़ है?

विल्सनः आप की तश्रीह (व्याख्या) की वजह से ख़ुदा का एक होना हम पर साफ़ हो गया और इसी तरह से इस्लामी शिक्षाएं भी। मैं अब ईसा[अ०] पर ईसाई नज़रिया और इस्लाम में एक से होने के उन प्वाइन्ट्स को जानना चाहूँगा, जिन पर इस्लाम और ईसाई धर्म दोनों एकराय हैं।

चिर्रीः इस्लाम ईसाइयत से इन प्वाइन्ट्स पर आमतौर से एकराय हैः

1– इस्लाम ईसा[अ०] के मासूम (पाप से दूर) होने का एलान करता है। दरअस्ल इस्लाम की तालीमात का एक अहम हिस्सा यह भी है कि (वह पैग़म्बरों और इमामों[अ०] के मासूम होने का क़ायल है, इसी लिए इसकी अहम तालीमात में (ईसा[अ०] की पाकीज़गी और) उनके मासूम होने पर ईमान लाना भी शामिल है, और इस पर भी वह इस दुनिया में एक पाक इंसान की तरह रहे, और उन्होंने कभी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कोई गुनाह नहीं किया। क़ुरआन का एलान हैः

(तर्जुमाः) ''और उस वक़्त को याद करो, जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरयम! अल्लाह तुमको अपने हुक्म से (बेटा होने की) मसीह ईसा की बशारत (ख़ुशख़बरी) दे रहा है, जो दुनिया और आख़िरत में साहेबे वजाहत व और मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही में से है।'' (सूरए आले इमरान, 3/45)

2- इस्लाम, ईसा[अ०] की माँ मरयम[अ०] के ताहिर (पाक) और मासूम होने का एलान करता है। कोई मुसलमान मरयम[अ०] की पाकीज़गी और मासूम होने पर भी शक नहीं कर सकता। क़ुरआन की रू से वह सारे संसारों की औरतों में सबसे ज़्यादा शरीफ़ औरत थीं।

(तर्जुमाः) ''और उस वक़्त को याद करो जब फ़रिश्तों ने मरयम को आवाज़ दी कि अल्लाह ने तुम्हें चुन लिया है और पाकीज़ा बना दिया है और आलमीन की औरतों में मुन्तख़ब (चुनी हुई) क़रार दे दिया है। ऐ मरयम! तुम अपने रब की इताअत करो, सजदा करो, और रुकू करने वालों के साथ रुकू करो।'' (सूरए आले इमरान, 3/42-43)

3- इसका एलान है कि ईसा[अ०] मोजिज़ाती तौर पर एक कुंवारी माँ से बग़ैर बाप के पैदा हुए। क़ुरआन का कहना हैः

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(तर्जुमाः) और पैग़म्बर अपनी किताब में से मरयम का ज़िक्र करो कि जब वह अपने घर वालों से अलग पूरब की तरफ़ चली गयीं। और लोगों की तरफ़ पर्दा डाल दिया, तो हम ने अपनी रूह को भेजा, जो उनके सामने एक अच्छा ख़ासा आदमी बनकर पेश हुआ। उन्होंने कहा कि अगर तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, तो मैं तुझ से अल्लाह की पनाह माँगती हूँ। उसने कहा कि मैं आपके रब का भेजा हुआ हूँ कि आपको एक पाकीज़ा बेटा दे दूँ। उन्होंने कहा कि मेरे यहाँ बेटा किस तरह होगा, जबकि मुझे किसी इन्सान ने छुआ भी नहीं है और मैं कोई बदकिरदार (दुष्कर्मी) नहीं हूँ। उसने कहा कि इसी तरह आपके रब का इरशाद है कि मेरे लिए यह काम आसान है और इसलिए कि मैं इसे लोगों के लिए निशानी बना दूँ और अपनी तरफ़ से रहमत क़रार दे दूँ और यह बात तयशुदा है। फिर वह पेट से हो गयीं और लोगों से दूर चली गयीं। फिर बच्चा पैदा होने का वक़्त उन्हें एक खजूर की शाख़ के क़रीब ले आया, तो उन्होंने कहा कि ऐ काश! मैं इस से पहले ही मर गयी होती और बिल्कुल भुला देने के क़ाबिल हो गयी होती। तो उसने नीचे से आवाज़ दी कि आप परेशान न हों, अल्लाह ने आपके पैरों में चश्मा जारी कर दिया है। और खजूर की शाख़ को अपनी तरफ़ हिलाएं इस से ताज़ा-ताज़ा खजूर गिर पड़ेंगे। फिर उसे खाइये और पीजिये और अपनी आँखों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

को ठण्डा रखिये। फिर इसके बाद किसी इंसान को देखिये तो कहिये कि मैंने रहमान के लिए रोज़े की नज़र (मन्नत) कर ली है, लिहाज़ा आज मैं किसी इंसान से बात नहीं कर सकती।'' (सूरए मरयम, 19/16-26)

4- क़ुरआन ने ईसा[अ०] के मोजिज़ों का ज़िक्र किया, जिनमें से ज़्यादा तर (Gospel के तालीमात में) दर्ज हैं। क़ुरआन पाक की रू से ईसा[अ०] को अल्लाह ने बीमारों को शिफ़ा अता करने और मुर्दों को ज़िन्दा करने की ताक़त दी थी और इसी तरह अंधों को आँख वाला बनाने की भी।

(तर्जुमाः) ''और उसे बनी इस्राईल की तरफ़ रसूल बनायेगा और वह उन से कहेगा कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पन्छी की शक्ल बनाऊँगा और उसमें कुछ दम कर दूँगा तो वह अल्लाह के हुक्म से पन्छी बन जाएगा और मैं पैदाइशी अंधे और कोढ़ी का इलाज करूँगा और अल्लाह के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा करूँगा और तुम्हें इस बात की ख़बर दूँगा कि तुम क्या खाते और क्या घर में जमा करते हो? इन सब में तुम्हारे लिए निशानियाँ हैं अगर तुम ईमान वाले हो।'' (सूरए आले इमरान, 3/49)

ऊपर वाले बयान के अलावा क़ुरआन पाक ने ईसा[अ०] के एक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मोजिज़े का ज़िक्र किया है, जो गास्पल (Gospel) में नहीं है। ईसा[अ०] अपने झूले से (नये पैदा हुए बच्चा होने के बावजूद) बोलेः

(तर्जुमाः) ''इसके बाद मरयम बच्चे को उठाए हुए क़ौम (समुदाय) के पास आयीं, तो लोगों ने कहा कि मरयम यह तुमने बहुत बुरा काम किया है। हारून की बहन! न तुम्हारा बाप बुरा आदमी था और न तुम्हारी माँ बदकिरदार थी। उन्होंने उस बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया तो क़ौम ने कहाः हम इस से कैसे बात करें, जो झूले में बच्चा है। बच्चे ने आवाज़ दी कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है। और जहाँ भी रहूँ बाबरकत क़रार दिया है और जब तक ज़िन्दा रहूँ नमाज़ और ज़कात की वसिय्यत की है। और अपनी माँ के साथ अच्छा सुलूक करने वाला बनाया है और ज़ालिम व बदनसीब नहीं बनाया है। और सलाम है मुझ पर उस दिन, जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूँगा और जिस दिन दोबारा ज़िन्दा उठाया जाऊँगा।'' (सूरए मरयम, 19/27-33)

विल्सनः (दोनों मज़हबों में) एक जैसे प्वाइन्ट्स, आपके बयान से साफ़ हो गए। मुझे मालूम है कि अलग-अलग मज़ाहिब के मानने वालों में ईसा[अ०] के बारे में इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। उनमें से कुछ को तो ईसा[अ०] के मुख़ालिफ़ों का कहा जा सकता है, क्योंकि वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

उनकी और उनकी माँ के मासूम होने के ही क़ायल नहीं, वह उनके मोजिज़ों और उनके सिद्क़ सच्चे होने का इनकार करते हैं, (और) कुछ ग़ैर जानिबदार (Neutral) हैं, न तो उनके मुवाफ़िक़ हैं और न मुख़ालिफ़, कुछ ईसा[अ०] के मानने वाले हैं, जो उन्हें मासूम मानते हैं, उनके तालीमात में ईमान रखते हैं और उनके मोजिज़ों को मानते हैं।

आपके बयान के मुताबिक़ मुसलमानों को और ईसाईयों को ईसा[अ०] को (अल्लाह का रसूल) मानने वाला समझना चाहिए। अब रह गई यह बात कि वह कौन से प्वाइन्ट्स हैं, जिन पर ईसाइयों और मुसलमानों में ईसा[अ०] के बारे में इख़्तेलाफ़ पाया जाता है ?

चिर्रीः ईसा[अ०] के बारे में इस्लाम और ईसाइयत के बीच इख़्तेलाफ़ के दायरे में शामिल हैं ये प्वाइन्ट्सः

1- हालांकि इस्लाम ईसा[अ०] के पाक होने को तो मानता है, लेकिन उनको अल्लाह का बेटा नहीं मानता। इस्लाम की तालीम की रू से ईसा[अ०] न तो कोई ख़ुदा हैं और न अल्लाह से जा मिलने वाले, वह ताज़ीम बड़ाई के क़ाबिल हैं, बड़ी इज़्ज़त वाले और एहतेराम वाले हैं, लेकिन पूजा के क़ाबिल नहीं हैं। इस्लाम अल्लाह के एक होने के बारे में कोई समझौता नहीं कर सकता। अल्लाह सिर्फ़ एक है, और उसके अलावा कोई दूसरा अल्लाह नहीं है, वह जो हइ (हमेशा से ज़िन्दा) है, क़ादिर (सब सकत वाला) है, हर बात का जानने वाला है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और क़ह्हार (बड़ा ज़ोरदार) है, जब्बार (ज़बरदस्त) है, मुदरिक है। ईसा[अ०] अमर ज़िन्दगी लेकर न आये थे। वह 2 हज़ार साल से कम पहले पैदा हुए थे, और गॉस्पल (Gospel) की रू से उन्होंने कमउम्री ही में वफ़ात पाई। ईसा[अ०] जब्बार न थे, क्योंकि (बक़ौले ईसाइयत) उन पर ज़ुल्म हुए और न वह सदा रहने वाले थे। उन्हें दुनिया का पैदा करने वाला भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि दुनिया तो करोड़ों साल पुरानी है, जबकि वह दो हज़ार साल से भी कम पहले पैदा हुए थे। वह इबादत (भक्ति) के क़ाबिल नहीं हैं, क्योंकि वह ख़ुद अल्लाह की झुक कर (तुच्छ कर) इबादत करने वाले थे।

2- इस्लाम की रू से ईसा[अ०] अल्लाह के बेटे नहीं हैं, अल्लाह के कोई बेटा और कोई औलाद नहीं है, क्योंकि वह इस बात से कहीं ऊपर है। जिस्मानी हिदायत (Guidance) का उसकी ज़ात के लिए तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसका कोई जिस्म नहीं है। रूहानी बाप होने की बात भी उस से जोड़ी नहीं जा सकती, क्योंकि वह हर-हर रूह और मैटर वाली चीज़ों का पैदा करने वाला है। क़ुरआन पाक इस सिलसिले में बिल्कुल साफ़ हैः

(तर्जुमाः) ''और उन लोगों ने जिन्नात को अल्लाह का शरीक (साझी) बना दिया, हालांकि अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है, फिर उसके लिए बग़ैर जाने-बूझे बेटे और बेटियाँ भी तैयार कर दी हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जबकि वह बेनियाज़ है और उनकी बयान की हुई ख़ुसूसियतों से कहीं ज़्यादा ऊपर है। वह ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला है। उसके औलाद किस तरह हो सकती है? उसकी तो कोई बीवी भी नहीं है और वह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और हर चीज़ का जानने वाला है। वही अल्लाह तुम्हारा रब (पालनहार) है, जिसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं। उसी की इबादत करो। वही हर चीज़ का रखवाला है। निगाहें उसे पा नहीं सकतीं और वह निगाहों को बराबर देखता (समझता) है कि वह लतीफ़ (Fine) भी है और ख़बीर (ख़बर रखने वाला) भी है।'' (सूरए अनआम, 6/100-103)

3- इस्लाम ईसा[अ०] को सूली (Cross) पर लटकाये जाने को नहीं मानता। ईसा[अ०] ने क्रास पर वफ़ात नहीं पाई। क़ुरआन पाक इस नुक्ते को साफ़ तौर पर बयान करता हैः

(तर्जुमाः) ''और यह कहने की बिना पर कि हम ने मसीह ईसा[अ०] बिन मरयम रसूलुल्लाह को क़त्ल कर दिया है, हालांकि उन्होंने न उन्हें क़त्ल किया और न सूली दी है, बल्कि दूसरे को उनकी शबीह (जैसा) बना दिया गया था और जिन लोगों ने ईसा[अ०] के बारे में इख़्तेलाफ़ किया है, वह सब शक में पड़े हैं और किसी को गुमान की पैरवी के अलावा कोई इल्म नहीं है और उन्होंने यक़ीनन उन्हें क़त्ल नहीं किया है। बल्कि अल्लाह ने अपनी तरफ़ उठा लिया है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और अल्लाह ग़लबे वाला और हिकमत/समझ वाला भी है।'' (सूरए निसा, 4/157–158)

विल्सनः आपका यह ख़याल गॉस्पल (Gospel) के बयानों से काफ़ी अलग है। चारों गॉस्पल साफ़ तौर पर बयान करते हैं कि ईसा[अ०] की वफ़ात सूली पर हुई। हम इस बयान को क़ुरआन पाक के बयान से, जो ज़ोर देकर बताता है कि ईसा[अ०] की वफ़ात सूली पर नहीं हुई, अलग पाते हैं।

चिर्रीः क़ुरआन के बयान की गॉस्पल के बयान के साथ मेल खाने का एक तरीक़ा हैः दोनों बयानात में फ़र्क़ ज़ाहिर और असलियत में फ़र्क़ की वजह से है। इसमें कोई शक नहीं है कि कोई वाक़िआ उसी जगह और उसी वक़्त हुआ होगा, जो ऐसा लगा होगा कि वह ईसा[अ०] के सूली दिये जाने और उनकी वफ़ात का वाक़िआ था। ईसा[अ०] की ज़िन्दगी मोजिज़ों से भरी थी, इस लिए हो सकता है, जिसे उनकी वफ़ात समझा गया। यह भी हो सकता है कि दूसरा शख़्स (जैसे कि जूडास (Judas), जिस ने उनको धोखा दिया था) उन ही की तरह जादुई अन्दाज़ में लगने लगा हो और ईसा[अ०] ने नहीं, उसने सूली पर वफ़ात पाई हो।

रूहानी बयानों में बग़ैर किसी मोजिज़े के तसव्वुर के मुताबिक़त लाने का एक और तरीक़ा है, और वह यह है (कि) फ़र्ज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कीजिए की ईसा[अ०] को सूली पर लटकाया गया, और वह बेहोश हो गए थे, और वह मुर्दा नज़र आए, जबकि वह ज़िन्दा थे।

ऐसा तसव्वुर करना गॉस्पल (Gospel) के ख़िलाफ़ नहीं है, (क्योंकि) गॉस्पल में बयान मौजूद है कि ईसा सलीब पर बहुत देर तक न थे, उन्हें तेज़ी के साथ उतार लिया गया था, और उनके पैर भी सलामत थे, क्योंकि (सूली देने का तरीक़ा यह था कि) जिसको सूली पर लटका कर मारा जाता था, उसके पैर तोड़ दिये जाते थे। यहूदी जश्न मनाने की तैयारी कर रहे थे, वह उन्हें (ईसा[अ०]) को दूसरे दिन तक सूली पर रहने नहीं देना चाहते थे, यानी इतवार तक, जिस दिन वह कोई काम नहीं करते थे, हत्ता कि मुर्दों का दफ़्न भी। चूँकि ईसा देर तक सूली पर लटके नहीं रहे, इसलिए वह ज़िन्दा बच सकते थे।

गॉस्पल (Gospel) यह भी बताते हैं कि जब ईसा[अ०] (उन लोगों को) मुर्दा नज़र आए, तो एक शख़्स ने उन पर अपने बल्लम से हमला कर दिया, और यह भी कि उनके बदन से ख़ून निकलने लगा, जबकि हमें मालूम है कि मुर्दा जिस्म से ख़ून नहीं बहता। यह इस बात को बयान करता है कि ईसा[अ०] (बावजूद सलीब पर लटकाए जाने के) ज़िन्दा रहे।

गॉस्पल बताते हैं कि ईसा[अ०] अपनी क़ब्र में रख दिये गये,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और उस पर एक वज़नी पत्थर रख दिया गया, मगर इतवार के दिन उनका बदन वहाँ से ग़ायब था, और पत्थर क़ब्र के दहाने से ग़ायब हो गया था। (इस बात से) हमें यह कहने का हक़ है कि ईसा[अ०] के किसी मानने वाले ने पत्थर हटाया और उन्हें बचाकर ले गया। अगर ईसा[अ०] मोजिज़ाती अन्दाज़ में क़ब्र से बाहर आए होते, तो किसी के पत्थर हटाने की कोई ज़रूरत न थी। अल्लाह अपनी क़ुदरत से उन्हें क़ब्र से बाहर ला सकता था और पत्थर (वहीं का) वहीं रहता, जहाँ था। पत्थर का हटाया जाना इंसानी काम था, मोजिज़ाती नहीं।

ऊपर वाली आयत के अलावा गॉस्पल हमें यह भी बताते हैं कि सूली पर लटकाए जाने के बाद ईसा[अ०] कई बार अपने हवारियों (साथियों) के रूबरू ज़ाहिर हुए। तमाम बार यह सामना एक राज़ रहा, कि ईसा खुलकर सामने आने के लिए तैयार न थे। अगर वह मोजिज़ाती तौर से बचा लिये गये थे, तो उन्हें अपने आपको दुश्मनों से छुपाने की अब कोई ज़रूरत न थी। उनका राज़दाराना तौर से ज़ाहिर होना इस बात को बताता है कि वह अब भी ज़िन्दा हैं, जैसा कि पहले थे, और यह कि उनकी ज़िन्दगी में उनकी वक़्ती मौत रुकावट न थी; और यह भी कि वह अब भी अपने दुश्मनों से डरे थे।

पक कफ़न की अन्तर्राष्ट्रीय सोसाइटी (International Society

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

of Holy Shroud) ने ही यह नतीजा निकाला है कि उनके कफ़न पर ख़ून के धब्बे यह बताते हैं कि जब उन्हें सूली से उतारा गया, तो वह ज़िन्दा थे, वरना उनके बदन पर इसके बाद डाले गये कपड़े पर ख़ून के धब्बे न होते।

ईसा[अ०] को सूली दिये जाने पर यक़ीन रखने वाले ईसाई के लिए यह कहना मुश्किल है कि वह दोनों उसूलों में, जिन पर वह यक़ीन रखता है, कैसे उन्हें आपस में मेल खिलायें, यानी ईसा[अ०] ख़ुदा भी हैं और उन्हें सूली पर भी लटकाया गया। सूली पर लटकाया जाने वाला शख़्स ख़ुदा कैसे हो सकता है? जबकि वह अपने आपको बचा ही नहीं सकता, उसे कैसे सबसे बड़ा ताक़तवर क़ुदरत सकत वाला कहें?

इसके ख़िलाफ़ एक मुसलमान के लिए ऐसा कोई मसला नहीं है, क्योंकि वह इस ईमान रखता है कि ईसा[अ०] एक नबी हैं और इसके अलावा कुछ नहीं (यानी वह ख़ुदा नहीं हैं) एक नबी पर ज़ुल्म हो सकते हैं, उसे सूली पर लटकाया जा सकता है, क्योंकि एक नबी ख़ुदा नहीं होता। हालांकि इस्लाम में टकराव का मसला नहीं है, इसने बावजूद इसके कि यह मसला इसके यहाँ नहीं है, इसे हल कर दिया है। ईसा[अ०] को सूली नहीं दी गई, क्योंकि अल्लाह ने उनको महफ़ूज़ रखा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

4- इस्लाम और ईसाई मज़हब में बचाव के इस नज़रिये (Doctrine of Redemption) पर एक राय नहीं है। बचाव का उसूल; पहले पहला गुनाह के उसूल (Doctrine of Original Sin) की बुनियाद पर मबनी है। और वह यह कि आदम[अ०] और हौव्वा[अ०] के गुनाह की वजह से इंसान जाति की मज़म्मत की गई, इस (गुनाह) का वरसा उनकी औलादों तक पहुँचता है। इस्लाम ने पहले पहला गुनाह के उसूल की तमाम बातों को दरकिनार कर दिया है, क्योंकि अल्लाह ने इंसान जाति को सज़ा नहीं दी है, शुरुआती दौर में महज़ एक जोड़े के गुनाह की वजह से (इस बात को आगे के सवाल के तहत साफ़ किया जाएगा) कोई पहले पहला गुनाह नहीं हुआ, इसलिए इंसान जाति को उस गुनाह से बाहर लाने की क्या और क्यों ज़रूरत है?

यह भी कि आप यह तसव्वुर कीजिए कि एक पहले पहला गुनाह है। इसके लिए किसी शख़्स को माफ़ करने के लिए अल्लाह को किसी मासूम, जैसे ईसा[अ०] के सूली पर लटकाए जाने की ज़रूरत नहीं है, वह सारी इंसानी नस्ल को माफ़ कर सकता है बग़ैर किसी बेगुनाह के तकालीफ़ से गुज़ारे जाने के। यह कहना कि अल्लाह इंसान जाति को (उसके गुनाहों के लिए) माफ़ नहीं करता, जब तक कि ख़ुद इंसान में से कोई ईसा[अ०] को सलीब पर न लटकाता, इस कहने के मायने है कि वह (अल्लाह) एक ऐसा हुक्मराँ है, जिस से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़ुद उसकी परजा कतराये हुए है। जब बच्चों ने अपने पुरखों के गुनाह के माफ़ किये जाने को कहा, तो उसने ऐसा करने से मना कर दिया, जब तक वह उसके चहीतों में से किसी को क़त्ल न कर दें। और जब वह इतना दर्दनाक गुनाह कर लेंगे, तो वह उन्हें माफ़ कर देगा वरना नहीं! मैं नहीं समझता कि पहले पहले गुनाह के तरफ़दार अल्लाह को इस सूरते हाल से दोचार कर सकते हैं! अल्लाह महान आदिल (इंसाफ़ वाला) और रहमान व रहीम लोगों को उनके पुरखों के गुनाहों की वजह से न तो अज़ाब में डालता है (और न सज़ा देता है)। वह उन्हें माफ़ कर सकता है, उन से एक और गुनाह करवाए बग़ैर।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-8

ख़ुदा का न्याय (अद्ल)

विल्सनः मुझे मालूम है कि क़ुरआन पाक ख़ुदा के गुणों को साफ़ तौर पर बयान करता है, जैसे उसके रहमान व रहीम होने को, उसके अलीम (जानने वाले) होने को, उसके हैइ (सदा का ज़िन्दा) होने को, उसके दुनिया के पैदा करने वाला होने का, वह कि जिसका कोई साझी नहीं, उसका कोई बेटा भी नहीं। मैं अब यह जानना चाहता हूँ कि क्या आदिल (अद्ल न्याय करने वाला) होना, अल्लाह के गुणों में से है, क्योंकि मुझे कुछ मुसलमानों ने ऐसा ही बतलाया है, मगर कुछ ने कहा है कि ऐसा नहीं है।

चिर्रीः कोई सच पसन्द करने वाला मज़हब अल्लाह के अद्ल और उसके सच पसन्द करने पर शक या उसका इनकार नहीं कर सकता। उसके अद्ल का इनकार करने का मतलब है मज़हब के सारे हिस्सों का इनकार करना। कोई मज़हबी अक़ीदा, यहाँ तक कि महान परमात्मा की ज़ात पर अक़ीदा भी हमें फ़ायदा नहीं पहुँचा सकता, जब तक हम उसके अद्ल पर ईमान न लाएं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तीन पाँच करने वाला तानाशाह किसी ग़लतकार को इनाम और इज़्ज़त दे सकता है, और नेक काम करने वाले को सज़ा दे सकता है। अगर कोई उसके हुक्म पर चलेगा, तो ज़रूरी नहीं है कि उसे सुख चैन हासिल हो। और अगर कोई उसके कहने पर न चलेगा, तो वह बिल्कुल से यह न कह सकेगा कि वह उसकी मेहरबानी से दूर है।

यह भी है कि हम आसमानी पैग़ाम और अल्लाह के रसूलों पर ईमान रखते हैं, क्योंकि हम यह मानते हैं कि वह आदिल है और वह इंसानियत की भलाई के लिए काम करने वाले अपने ख़िदमत करने वालों को यह बताता है कि वह उन से क्या उम्मीद रखता है? मगर एक ग़ैर आदिल माबूद हो सकता है हमें यह न बतलाए कि वह हम से क्या चाहता है, या वह हमें वह (सब) बताए, जिसके कोई मायनी-मतलब न हो। इस तरह पैग़म्बरी का सारा तसव्वुर ही चकनाचूर हो जाएगा।

अल्लाह के अद्‌ल का इनकार क़यामत के तसव्वुर को चूर कर देगा, क्योंकि अद्‌ल होगा, नेकोकारों को इनाम मिलेगा और बदकारों को सज़ा।

मुख़्तसर यह कि अल्लाह के अद्‌ल का तसव्वुर हमारे लिए उतना ही अहम है, जितना कि उसके मौजूद होने का और उसके एक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

होने का तसव्वुर, उनका इनकार मज़हब के लिए उतना नुक़सान वाला होगा, जितना उसके वुजूद और उसके एक होने से इनकार। इसलिए अल्लाह के अद्ल पर यक़ीन को दीन के बुनियादी उसूलों में समझना चाहिए, जिसके बग़ैर कोई भी दीन अक़्ल या तर्क से सदा बचा नहीं रह सकता।

इस्लाम पूरे तौर पर इस बुनियादी उसूल से मुत्तफ़िक़ है। क़ुरआन पाक ज़ोर देकर अल्लाह के अद्ल को उसी तरह बयान करता है, जिस तरह वह उसके एक होने और उसके वुजूद को बयान करता है। कई आयतों में ज़ुल्म की मज़म्मत की गई है, और बहुत सी आयतों में अल्लाह के आदिल होने का ज़िक्र मौजूद है, और यह कि वह अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता, और यह कि वह किसी के अच्छे कामों को अकारत न करेगा, और यह भी कि वह किसी के ज़र्रा बराबर भी अच्छे काम को बेकार न करेगा (यानी यह कि हर ख़ास व आम को उसका अज्र मिलेगा)।

(तर्जुमाः) ''अल्लाह ख़ुद गवाह है कि उसके अलावा कोई अल्लाह नहीं है, फ़रिश्ते और जानने वाले गवाह हैं कि वह अद्ल के साथ क़ायम है। उसके अलावा कोई अल्लाह नहीं है और वह इज़्ज़त व हिकमत समझ का मालिक है।'' (सूरए आले इमरान, 3/17)

(तर्जुमाः) ''फिर जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की है, वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसे देखेगा। और जिसने ज़र्रा बराबर भी बुराई की है वह उसे देखेगा।'' (सूरए ज़लज़ला, 99/7-8)

विल्सनः अल्लाह के अद्ल के बारें आपका बयान, उन तमाम बयानों में, जिन्हें मैंने सुना है, सबसे अच्छा है। दरअस्ल इस मज़हबी उसूल की अहमियत को इससे ज़्यादा नहीं बढ़ाया जा सकता कि ख़ुदा के उसूली तसव्वुर को इस से ज़्यादा और क्या कहा जाए कि उसे बग़ैर अद्ल (इलाही) के, जो हमारे फ़ायदे के लिए है, समझा नहीं जा सकता। हम न तो एक ग़ैर आदिल ख़ुदा पर भरोसा कर सकते हैं और न उसे राज़ी कर सकते हैं। ईसाई और यहूदी मज़हब दोनों इस्लाम के इस उसूल से मुत्तफ़िक़ हैं, और कोई भी ईसाई और कोई यहूदी ख़ुदा के आदिल होने और उसकी अच्छाई पर शक नहीं करता है। लिहाज़ा ख़ुदा के अद्ल के उसूल का मानने वाला यहूदी भी है, ईसाई भी और मुसलमान भी (यानी उस पर) सब यक़ीन रखते हैं। और मैं इस सिलसिले में तीनों के अक़ीदे में कोई फ़र्क़ नहीं पाता हूँ।

चिर्रीः इस्लाम और दूसरे अक़ीदे रखने वालों के बीच अल्लाह के बारे में कोई इख़्तेलाफ़ नहीं है, मगर इसके तसव्वुर पर, जो इस उसूल (Doctrine) से पैदा होता है। इस्लाम किसी भी ऐसे नज़रिये को नहीं मानता, जो ख़ुदा के अद्ल के ख़िलाफ़ हो। इस्लाम हर उस नज़रिये को मानता है, जो अल्लाह के अद्ल में अक़ीदे के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

साथ उभरा हो।

विल्सनः क्या आप उन नज़रियों में से कुछ को बयान करेंगे, जो अल्लाह के अद्ल पर अक़ीदे के साथ उभरे हैं।

चिर्रीः मैं उन में से तीन उसूलों को बयान करूँगा, जो ख़ुदा के अद्ल के नज़रिये से जुड़े हैं।

1- अल्लाह अपने इंसानी बन्दों से वह काम करने को नहीं कहता, जो वह कर नहीं सकते। क़ुरआन कहता हैः

(तर्जुमाः) ''अल्लाह किसी नफ़्स (जान) को उसकी सकत/सलाहियत से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता। हर नफ़्स के लिए उसकी कमाई हुई नेकियों का फ़ायदा भी है और उसकी कमाई हुई बुराईयों का अज़ाब भी- रब! हम जो कुछ भूल जाएं या हम से ग़लती हो जाए उसका हम से मुआख़ज़ा न करना (घेरना नहीं)। ऐ हमारे रब! हम पर वैसा बोझ न डालना, जैसा पहले वाली उम्मतों पर डाला गया है। रब! हम पर वह बार न डालना जिसकी हम में सकत न हो। हमें माफ़ कर देना, हमें बख़्श देना, हम पर रहम करना तू हमारा मौला (स्वामी) और मालिक है पस काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।'' (सूरए बक़रा, 2/286)

जो आपकी पहुँच से बाहर हो, वह नामुमकिन काम है, इसलिए आदिल अल्लाह उसके करने को आप ने नहीं कहता।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

2- अल्लाह किसी को ज़िम्मेदार नहीं ठहराता, मगर ख़ुद उसके किये हुए काम के लिए, जो उसके कन्ट्रोल में था। कोई भी किसी दूसरे के किये गये काम के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, हालांकि वह उसके दोस्त या अज़ीज़ हो सकते हैं, मगर उस वक़्त तक जब तक कि उनके किये गये काम, उसके अपने कन्ट्रोल में न हों। क़ुरआन का इरशाद हैः

(तर्जुमाः) ''(ऐ रसूल[स०]!) कह दीजिए कि क्या मैं अल्लाह के अलावा कोई और रब तलाश करूँ, जबकि वही हर चीज़ का पालने वाला है और जो नफ़्स जो कुछ करेगा, उसका वबाल उसी के ज़िम्मे होगा और कोई नफ़्स दूसरे का बोझ न उठाएगा। इसके बाद तुम सबकी वापसी तुम्हारे रब की तरफ़ है, फिर वह बताएगा कि तुम किस चीज़ में इख़्तेलाफ़ कर रहे थे।'' (सूरए इनआम, 6/164)

3- अगर यह सही है तो जैसा कि कहा जाता है आदम[अ०] और हौव्वा के आमाल की वजह से इंसानी नस्ल पर कोई असर न पड़ना चाहिए, यह कहना कि आदम[अ०] और हौव्वा के ग़ैर मुनासिब आमाल की वजह से तमाम इंसानी नस्ल पर सिलसिले से बोझ आता है, इस कहने के मायने है, कि हज़ारों इंसान आदम[अ०] और हौव्वा के ग़लत अमल के सिलसिले से ज़िम्मेदार क़रार पाते हैं, जबकि यह सब कुछ उन नस्लों के वुजूद में आने से बहुत पहले हुआ था। बिला

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

शुबह! ऐसा कहना अललाह के अद्ल के ख़िलाफ़ जाता है।

कोई इंसानी जज भी किसी के बाप के किये गए जुर्म के लिए उसके बेटे को, जो उसके किये में शामिल नहीं था, सज़ा नहीं देता। हम इसको कैसे बावर कर लें कि आदिल अल्लाह वालदैन के गुनाह को उसके बच्चों या उसके (पोतों और) परपोतों के सर मढ़ देगा? इसलिए कि इस्लाम पहले पहले गुनाह के नज़रिये (Doctrine of Original Sin) को दरकिनार करता है, और हर शख़्स को जन्म के वक़्त से बेगुनाह समझता है। दरअस्ल इस्लाम नये बच्चे को पाक और बेगुनाह की तरह पेश करता है। इस्लामी तालीमात की रू से हर इंसान पाक और बेगुनाह पैदा होता है, और वह उसी हालत में रहता है जब तक कि वह बालिग़ न हो जाए, और कोई गुनाह न कर बैठे।

बालिग़ होने की उम्र को पहुँच कर जब कोई आदमी गुनाह करता है, तो अपनी पाकीज़गी खो बैठता है, मगर वह उसे वापस ला सकता है ख़ुलूस भरे तौबा के साथ। जब कोई शख़्स अपना रवैय्या सच्चे दिल से बदल देता है, और यह इरादा करता है कि वह उसका कभी भी ऐसा न होगा, और हक़ीक़त में अल्लाह के कहने पर चलने का पक्का मन कर लेता है, तो सबसे महान रहीम व करीम (कृपा वाला) उसके गुनाह मिटाकर उसे माफ़ कर देता है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

विल्सनः मुझे एक पल के लिए इख़्तेलाफ़ करने दीजिएः आदम[अ०] और हौव्वा[अ०] हमारी तरह के लोग थे। हमें यह मान लेने दीजिए कि वह ग़लती करने के बाद दिल से पछताए, क्या इसके यह मायनी हैं कि उनकी ग़लतियाँ मिटा दी गई थीं?

चिर्रीः अगर आप यह तसव्वुर करते हैं कि आदम ग़लती करने के बाद पछताए थे, तो आप ग़लती पर न होंगे। इसके अलावा आप इस बात पर भी ग़लती पर न होंगे कि अगर आप इस पर यक़ीन रखते हें कि आदम को उनके पछताने की वजह से अल्लाह ने माफ़ कर दिया था। क़ुरआन पाक हमें बताता है कि उस रहमान व रहीम (अल्लाह) ने आदम[अ०] की तौबा क़ुबूल कर ली थी, और इसकी वजह से उनको माफ़ कर दिया था।

(तर्जुमाः) ''फिर आदम[अ०] ने रब से कलमात (बोल/निशानियों) की सीख ली और (उनकी बरकत से) अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली कि वह तौबा क़ुबूल करने वाला बड़ा मेहरबान है।'' (सूरए बक़रा, 2/37)

विल्सनः अगर आदम[अ०] को माफ़ कर दिया गया था, तो उन्हें जन्नत से क्यों निकाला गया था?

चिर्रीः आदम का जन्नत से (ज़मीन पर) आना, यह ज़रूरी नहीं कि उनके गुनाह की सज़ा के तौर पर था। ऐसा उनके मर्तबे में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बदलाव का लाज़मी नतीजा भी हो सकता है। शुरु में आदम[अ०] अल्लाह से किसी वक़्त भी बात कर सकते थे, और उनके जन्नत में रहने की वजह से बरकत थी। नामुनासिब तौर पर अमल करने की वजह से, वह नीचे आने वाले आ बने, यानी उन्होंने नामुनासिब बात से बचाव की ताक़त खो दी। इस तरह से बचाव वाली ताक़त से वह अब इस बड़ी हैसियत वाले न रहे थे, जिसकी वजह से वह किसी वक़्त भी अपने मालिक (अल्लाह) से बात कर सकते थे। और ऐसा अब उस वक़्त कर सकते थे जबकि उनके पास मासूम होने की ख़ुसूसियत मौजूद हो, और अब उनकी यह ख़ुसूसियत वैसी टिकाऊ न थी, जैसा कि उनके तर्के औला (ज़्यादा मुनासिब काम को छोड़ना) करने से पहले मौजूद थी, क्योंकि मुमकिन था कि वह एक बार फिर तर्के औला करें।

विल्सनः पुरानी बाइबल (Old Testament) हमें बताती है कि आदम[अ०] का गुनाह उनके एक पेड़ से कुछ खा लेने का था, और पेड़ 'इल्म का पेड़' था, जिस से बचे रहने का हुक्म ख़ुदा ने दिया था। इस सिलसिले में क़ुरआन का क्या बयान है?

चिर्रीः क़ुरआन बयान करता है कि एक मना किया गया पेड़ था, और आदमी की ग़लती थी उस से खा लेना। लेकिन इसकी क़िस्म नहीं बयान करता। इस्लाम के तर्क के मिज़ाज को समझ कर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हम शर्तिया तौर पर कह सकते हैं कि वह पेड़, इल्म का पेड़ न था, क्योंकि इल्म तो पा लेने और तजुर्बा करने से मिलता है, और वह पेड़ों पर परवान नहीं चढ़ता है। हो सकता है कि इस सारे बयान में पेड़ को या उसकी क़िस्म को ख़ास अहमियत न दी गई हो। दरअस्ल ख़ास बात तो यह हो सकती है कि अल्लाह ने पेड़ को मना क़रार देकर अपने बन्दों आदम[अ०] और हौव्वा[अ०] की क़ुव्वते इरादी (Will Power) का इम्तेहान लेना चाहा हो। मुक़द्दस क़ुरआन के लिहाज़ से अल्लाह इल्म को पसन्द करता है, वह भला उस से क्यों मना करेगा ?

विल्सनः हमें बहस को ख़त्म करके अपनी बात की तरफ़ पलटना चाहिए। मैं अब मुतमइन हूँ कि इस्लाम मज़बूती के साथ अपनी जगह पर इंसानी नस्ल की पाकीज़गी बयान करने में बहुत ही पक्की जगह पर है, और इसके तालीमात में ज़ोर और क़ायदा है। वह हमेशा से ख़ुदा के अद्ल के उसूलों पर चला है और इसी तरह उसने अकेले तौर पर भी अमल किया है, जिसका तसव्वुर अद्ल के पैदा करने वाले से उसूली तौर पर जुड़ा है।

जब ईसाई उसूल पहले पहला गुनाह के नज़रिये (Doctrine of Original Sin) का प्रचार करते हैं, तो दरअस्ल वह एक और उसूल की बुनियाद खड़ी करते हैं, यानी बचाव के नज़रिये (Doctrine

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

Redemption) की। वह कहते हैं कि इंसान गुनाहगार है, उसकी बुराई है पहले पहला गुनाह करने की वजह से। दूसरे लफ़्ज़ों में आदम[अ०] और हौव्वा[अ०] के गुनाह को वरसे में पाने की वजह से हम (बनी नौए इंसान) गुनाहगार हुए, इसलिए किसी न किसी तरीक़े से हमारी मुहाफ़िज़त होना चाहिए, किसी न किसी तरह से हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करना चाहिए सलीब पर जाकर। इसलिए ईसा[अ०] हमारे मुहाफ़िज़ और बचाने वाले जा बने।

पहले पहल गुनाह के इनकार से उसूले मुहाफ़िज़त अपनी बुनियाद खो बैठता है। आप ने मौज़ू पर इज़हारे ख़याल किया, अब यह साफ़ हुआ कि बचाव का नज़रिया (Doctrine of Redemption) वह अक़ीदा है, जो ख़ुदा के अद्ल से मुताबिक़त नहीं रखता।

चिर्रीः जैसे-जैसे हम बहस में आगे बढ़ते हैं, हमें मालूम हुआ कि पहले पहला गुनाह का मामला अल्लाह के अद्ल के पूरे तौर पर ख़िलाफ़ है। अगर हम उस (अल्लाह) के अद्ल में सिलसिले की कमी को (मआज़ल्लाह) भूल जाएं तो वह ख़ुद सबसे बड़ा आदिल एक मासूम (गुनाह से बचे हुए), ईसा[अ०] को सारी इंसानी नस्ल के गुनाहों के लिए ख़ुद ज़िम्मेदारी निभाए। फिर यह कि हम एक गुनाहे सग़ीरा (छोटे गुनाह) को कैसे धो सकते हैं, जैसे कि एक सेब के खा लेने को, एक दर्दनाक गुनाह के करने से, यानी एक पाक आदमी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ईसा[अ०] के क़त्ल से। दरअस्ल गुनाह एक अच्छे और नेक काम से धुल सकता है, क़त्ल करने से नहीं। इसके अलावा हम यह कैसे सही मान लें कि अल्लाह, जो सबसे बड़ा अलीम जानने वाला और समझ वाला भी है, अपने क़रीबी रसूल से किसी की माफ़ी के लिए उसका ख़ून माँगे।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-9

आज़ादी बनाम मजबूरी

विल्सनः एक अहम बात है, जिसका असर ख़ुदा के अद्ल के उसूल पर पड़ता है, जो फ़लसफ़े में भी और मज़हब में भी डिबेट रहा है, और वह है इंसान की आज़ादी (इन्सान जो भी करता वह अपना चाहा करता है न कि ख़ुदा जो कराता है वह करता है)। इस मसले पर फ़लसफ़ी और उलमा दोनों के यहाँ इख़्तेलाफ़ मौजूद है। उनमें कुछ तो इंसान की आज़ादी की वकालत करते हैं यह कहकर कि जो कुछ वह करता है, अपनी मर्ज़ी से करता है, और कुछ उस आज़ादी की मुख़ालिफ़त करते हैं, यह ख़याल करते हैं कि जो भी करता या नहीं करता इंसान हमें नज़र आते हैं वह दरअस्ल या तो पहले से तयशुदा (लिख दिया गया) है या फिर वह किसी वजह या वजहों के सिलसिले के कारण से है।

मैंने कुछ इस्लामी किताबों में पढ़ा है कि इस्लाम मुक़द्दर की बात करता है, और यह कि इंसान के सारे काम ख़ुदा की तरफ़ से तयशुदा हैं, और इंसान उन कामों और तरीक़ों को बदल नहीं सकता,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जिन पर वह चलता है। इसके अलावा मैंने इस से मुख़्तलिफ़ एक और इस्लामी नज़रिये के बारे में पढ़ा है, जो कामों के करने में उसकी आज़ादी को मानता है और उसके काम करने या न करने में तक़दीर के मसले से इनकार करता है।

चिर्रीः मौजू़ पर अपने ख़यालों की हदों को तय करने के लिए यह ज़रूरी है कि हम यहाँ यह बयान कर दें कि हमारी बहस में वह शर्तें शामिल नहीं हैं, जो एक इंसान की अपनी मर्ज़ी की वजह से होती हैं, जैसे कि बीमारी, अन्धा होना और मौत वग़ैरा। इसमें इंसान की आज़ादी बिल्कुल नहीं है। कोई इसका दावा नहीं कर सकता कि कोई भी इंसान इन हालात को (अपने लिये) पैदा करने में आज़ादी रखता है, क्योंकि यह बातें ख़ुद किसी भी इंसान की पसन्द नहीं हो सकतीं। हमारी बहस में तो सिर्फ़ इंसान के वे काम शामिल है, जिन्हें इंसान ख़ुद अपनी मर्ज़ी और आज़ादी के साथ करता है। यहाँ भी पुराने झगड़े का लावा है, जो लोगों को दो अलग-अलग गिरोहों में बाँट रहा है; एक वह, जो इंसान की आज़ादी का फ़ेवर करता है और दूसरा वह, जो कामों का मुक़द्दर से तयशुदा होना जानता है।

जैसा कि आप जानते हैं, इस्लाम हमें बतलाता है कि अल्लाह ने अपने हुक्म जारी कर दिये हैं कि वह जो इन पर अमल करेगा, उसे इनाम देगा और जो ऐसा नहीं करेगा, उसे हुक्म तोड़ने की सज़ा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मिलेगी। एक दीन, जो इस तरह की तालीम देता है, वह (पैदा की हुई) इंसानी नेचर के मुवाफ़िक़ उस वक़्त हो सकता है, जब वह इंसान की आज़ादी की बात भी करे, और ऐसा वह उस वक़्त करेगा, जब वह अल्लाह के अद्ल की बात करे।

एक मज़हब जो ख़ुदा के अद्ल और बातों के क़िस्मत से होने की बात करता है, दरअस्ल अपने आपके इस कहने की 'नहीं' करता है कि अल्लाह अपने हुक्मों के मानने वालों को इनाम देगा और न मानने वालों को सज़ा देगा। जब इंसान के काम करने और न करने को दोनों अल्लाह की तरफ़ से लिख दिया गया है, तो फिर इंसान उनको कैसे बदल सकता है? वह कुछ और नहीं कर सकता, मगर वह कि जो उसकी क़िस्मत में लिख दिया गया है। इंसान एक मशीन की तरह होगा, मशीन ख़ुद से कोई दूसरा काम नहीं कर सकती, मगर वह कि जिसके लिए वह बनी है, और यह हंसी मज़ाक़ की बात होगी कि उस से कहा जाए कि यह कर, वह न कर, इसी तरह करने पर इनाम और न करने पर सज़ा की बात करना भी।

इंसान की आज़ादी को नहीं के बराबर ठहरा दीजिए, तो मज़हब के सभी उसूल बेमायनी हो जाएंगे। हक़ीक़त तो यह है कि अगर इंसान की आज़ादी का इनकार कर दिया जाए, तो किसी आसमानी दीन की ज़रूरत ही न रहेगी। यह कहना बेकार होगा कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पैग़म्बरों को इंसानों को तालीम देने और उनके रास्ता दिखाने के लिए भेजा जाए। जब कोई शख़्स नास्तिक होना लिखा के लाया है, और यह कि वह कभी भी ईमान वाला न होगा, तो कोई भी पैग़म्बर उसका दिल न बदल पायेगा। एक क़िस्मत में लिखाकर लाने वाला मुजरिम कभी भी एक अच्छा शहरी न होगा, चाहे वह जितनी भी तालीम ले ले।

दरअस्ल इंसान की आज़ादी, दीन पर अमल करने के पूरे तसव्वुर की बुनियाद है, और इस्लाम इंसान की आज़ादी को उजागर करता है।

विल्सनः अब तक कि हमारी बहस से यह साफ़ हो गया है कि उसूल से इस्लाम में ख़ुदा के ज़ोरदार सपोर्ट है। लिहाज़ा यह उम्मीद की जाती है कि इस्लाम इंसान की आज़ादी का सपोर्ट करता है, और हर काम के पहले से तय होने की बात नहीं मानता, जिसे फ़लसफ़े में करनी के तय होने का नज़रिया (Doctrine of Determinism) कहा जाता है। इसलिए मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या क़ुरआन इंसान की आज़ादी को साफ़ और खुले तौर पर बयान करता है?

चिर्रीः क़ुरआन पाक ने एक से ज़्यादा जगहों पर यह बयान किया है कि इंसान एक आज़ाद वसीला है। वह एलान करता है कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इंसान अपने हालात को ख़ुद बदल सकता हैः

(तर्जुमाः) ''उस (आदमी) के लिए (सामने और पीछे) रखवाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं और अल्लाह किसी क़ौम के हालात को उस वक़्त तक नहीं बदलता, जब तक वह ख़ुद अपने को न बदले और जब अल्लाह किसी क़ौम पर बुराई का इरादा कर लेता है, तो कोई उसका टालने वाला नहीं और न उसके अलावा कोई किसी का सरपरस्त (Guardian) है।'' (सूरए रॉद, 13/11)

अगर इंसान की करनी पहले से तय होती, तो कभी भी वह उन्हें बदल न सकता था। जो कुछ वह करता या न करता, उसे वह ख़ुद न करता, बल्कि मजबूरी से।

क़ुरआन पाक भी एलान करता है कि अल्लाह लोगों से किसी नामुमकिन काम को अंजाम देने का नहीं कहता, और न अपने बन्दों को मुश्किल में डालता है।

(तर्जुमाः) ''ईमान वालो! अल्लाह के लिए अद्ल इन्साफ़ के साथ गवाही देने के लिए तैयार रहो और ख़बरदार किसी क़बीले की दुश्मनी तुम्हें इस जुर्म में न फंसवा दे कि तुम बेइन्साफ़ी करने लगो। तुम (हर हाल में) इन्साफ़ करो कि यही तक़वा (ख़ुदा के डर) से क़रीब तर है और अल्लाह से डरते रहो कि तुम जो कुछ (अच्छा या

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बुरा) करते हो अल्लाह उसे ज़रूर जानता है।'' (सूरए माएदा, 5/8)

मिसाल के तौर पर इंसान की क़िस्मत में लिख दिया गया है कि वह इबादत न करेगा, या वह क़त्ल कर देगा, और फिर अल्लाह उस से कहता है कि क़त्ल न करो और इबादत करो तो वह (अल्लाह) उसको बहुत ही सख़्ती में ला खड़ा करेगा, क्योंकि उस से वह सब कुछ करने को कहेगा, जो उसके लिए करना मुहाल है, क्योंकि वह (अल्लाह) उस से वह करने को नहीं कह रहा है, जो वह कर सकता है, क्योंकि उसकी तो क़िस्मत में लिखा जा चुका है, उसके जन्म से पहले ही कि वह क़त्ल करेगा और इबादत नहीं करेगा। इस तरह वह अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी न कर सकेगा। सच तो यह है कि उसे इबादत करने का हुक्म दिया गया है और क़त्ल करने से मना किया गया है, इसलिए यह इस बात की ओर इशारा करता है कि अल्लाह अपने बन्दों को आज़ाद बन्दों की तरह देखता है, और जो कुछ उसे करने या न करने को कहा जाता है, वह उसकी सकत भर होता है।

क़ुरआन पाक ने भी इंसान की आज़ादी बयान की है, उसके किये पर उसकी ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देकर इस तरह किः

(तर्जुमाः) ''(ऐ रसूल!) हम ने आप[स०] के पास (यह) किताब (क़ुरआन) सच्चाई के साथ लोगों की हिदायत (रास्ता दिखाने) के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

लिए नाज़िल किया (उतारा) है। अब जो रास्ते पर आया, वह अपने ही (भले) के लिए, और जो गुमराह हुआ (भटका), तो उसके रास्ता भटकने का बवाल भी उसी पर है और आप[स०] फिर कुछ उनके ज़िम्मेदार तो हैं नहीं।'' (सूरए ज़ुमर, 39/41)

(तर्जुमाः) ''कोई शख़्स भी दूसरे का बोझ उठाने वाला नहीं है।'' (सूरए नज्म, 53/38)

(तर्जुमाः) ''पैग़म्बर! आप कह दीजिए कि तुम्हारे पास रब की तरफ़ से हक़ (सत्य) आ चुका है, अब जो हिदायत हासिल करेगा, वह अपने फ़ायदे के लिए करेगा और जो गुमराह हो जाएगा, उसका नुक़सान भी उसी को होगा और मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ।'' (सूरए हूद, 11/108)

एक आदमी की ज़िम्मेदारी का तसव्वुर हमें साफ़तौर पर बतलाता है कि वह एक आज़ाद बन्दा है, वरना उसे ज़िम्मेदार क्यों ठहराया जाता हर उस किये के लिए जो वह करता है। आज़ादी और ज़िम्मेदारी जुदा-जुदा नहीं हैं।

विल्सनः वह आयतें, जिन्हें आप ने क़ुरआन पाक से बयान किया है, सचमुच हमें बताती हैं कि इंसान को बहुत ज़्यादा आज़ादी दे दी गई है, जो उसे खुले तौर पर आज़ाद ठहराती है कि वह ज़िम्मेदार बने और अपने काम के लिए अपने को इनाम व इकराम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

का और इसी तरह सज़ा का मुस्तहक़ समझे। लेकिन (मेरे ख़याल में) क़ुरआन में कुछ आयतें ऐसी भी हैं, जो क़िस्मत के नज़रिये के तरफ़दारों की तरफ़ से बयान की जाती हैं। यह आयात बताती हैं कि इंसान की करनी ख़ुदा कन्ट्रोल करता है। उनमें से ये आयतें हैंः

(तर्जुमाः) ''यह (क़ुरआन) (पूरे का पूरा) एक नसीहत (का सामान) है। तो जो शख़्स चाहे, अपने रब के रास्ते को अपना ले। और तुम लोग कुछ चाहते ही नहीं मगर वही, जो अल्लाह चाहता है। बेशक! अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला और समझ वाला है।'' (सूरए इंसान, 76/29-30)

(तर्जुमाः) ''और मूसा[अ०] ने अपनी क़ौम (समुदाय) से हमारा वादा पूरा करने को (तूर पहाड़ी पर ले जाने के लिए) सत्तर (70) आदमियों को चुना, फिर जब उनको एक ज़लज़ले ने आ पकड़ा, तो हज़रत मूसा ने कहा कि रब! अगर तू चाहता कि मुझ को और इन सब को पहले ही हलाक कर डालता। क्या हम में से कुछ बेवक़ूफ़ों की करनी की सज़ा में हमको हलाक करता है? यह तो सिर्फ़ तेरा इम्तेहान था तू जिसे चाहे गुमराही में छोड़ दे और जिसको चाहे हिदायत करे (रास्ते पर लाए)। तू ही हमारा मालिक है। तू ही हमारे क़ुसूर (कमियों) को माफ़ कर और हम पर रहम फ़रमा और तू सारे बख़्शने वालों में कहीं बेहतर है।'' (सूरए आराफ़, 7/155)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

यह आयात, आपने जिन आयतों को पहले बयान किया है, उन से मुख़्तलिफ़ बतलाती हैं। यह आयात (इस मसले में) हमें धन्धले मायनों की तरफ़ ले जाती हैं, और तज़ब्जुब पैदा करती हैं।

चिर्रीः एक मुसलमान के लिए क़ुरआन पाक वही का भरोसे के क़ाबिल बयान है। इसमें सच ही सच है। इसलिए क़ुरआन की हर बात हक़ व सच है। एक सच कभी भी दूसरे सच से टकराता नहीं है। जो कुछ भी टकराव जैसा नज़र आता है, सच नहीं हो सकता। वह तो सिर्फ़ साफ़ टकराव ही होता है। अगर क़ुरआन में आयतों के दो ग्रूप एक-दूसरे की मुख़ालिफ़त करते हुए नज़र आएं, तो उन पर एक तरह से ग़ौर व फ़िक्र करना होता है। अगर उनमें से एक ग्रूप किसी बात पर एक तरफ़ खुला हुआ और साफ़ इशारा कर रहा है, बमुक़ाबला दूसरे ग्रूप के उसी बात पर दूसरी तरफ़, तो उनमें से जो ज़्यादा साफ़ बयान होगा, उसे मान लिया जाएगा। अब दूसरे ग्रूप के बयान को इस तरह बताया जाए कि पहले गिरोह के बयान से किसी तरह का टकराव नज़र न आए। इस तरह का तरीक़ा उस वक़्त ज़रूरी होगा कि जब कि साफ़ साफ़ बयान किसी बात को अक़ली तौर से बता रहा हो। और यही बात दो ग्रूप में भी एक पर खप रही हो।

इसी बात को ज़ेहन में रखते हुए हम दो ग्रूप को समझें और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

आख़िरी के मायनी को इस तरह बयान करें कि वह पहले वाले ग्रूप के मायनी में टकराव न हो। हम दूसरे ग्रूप में दी हुई पहली दो आयतों से यह समझ सकते हैं कि इंसान की चुनने की सलाहियत अल्लाह की तरफ़ से है। इंसान किसी भी रास्ते को चुन सकता है, मगर चुनने की सलाहियत तो अल्लाह का दिया हुआ इनाम है। अल्लाह इस सलाहियत को कभी भी ले सकता है, और इसके इरादे पर रोक लगा सकता है, हालांकि अल्लाह ऐसा आमतौर से नहीं करता है।

ऊपर वाली आयतों में से दूसरी आयत की तफ़सीर भी इस तरह की जा सकती है कि जो इंसान की आज़ादी के ख़िलाफ़ न होगी। अल्लाह किसी आदमी की हिदायत सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) की तरफ़ कर सकता है, और (ऐसा भी हो सकता है कि किसी) दूसरे को ग़लती पर छोड़ दे। हालांकि हम अल्लाह के लिए या सोच भी नहीं सकते कि वह ऐसे ही किसी की हिदायत करे और किसी को ग़लती पर यूँही छोड़ रखे।

वह (अल्लाह) एक शख़्स की मदद उसकी खुली हिदायत करके कर सकता है, जबकि यह ख़ुद हक़ की तलाश में हो और उस पर चलने पर भी आमादा हो। वह किसी को ग़लत (ख़याल व अमल) पर (कारबन्द) छोड़ सकता है, जबकि वह हक़ को मानने पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तैयार न हो। इस बयान से किसी तरह का तज़ब्ज़ुब न होगा। पहले ग्रूप की आयतें बग़ैर किसी टकराव के इंसान की आज़ादी को साफ़ तौर पर बयान करती हुई मौजूद रहेंगी।

विल्सनः ख़ुदा सारी दुनिया, उसके सारे हिस्सों और उसमें (रुनुमा) होने वाली सभी बातों का भी पैदा करने वाला है। इस दुनिया में कोई भी ऐसा वाक़िआ नहीं होता है, जो उसकी पैदा करने वाला होने से परे हो। इंसान की नियत इस दुनिया में भी एक होने वाले वाक़िए की तरह है, इसलिए इंसान अपने नियत में भी आज़ाद नहीं है।

चिर्रीः अगर यह सच है तो हमें सारी ज़्यादतियों (और ज़ुल्म) को और जुर्म को, जो इंसान करता, अल्लाह के नाम लगा देना चाहिए, लेकिन कोई भी अल्लाह पर ईमान लाने वाला हमारी बुराईयों और गुनाहों को उस से (अल्लाह से) न लगाएगा।

सच तो यह है कि अल्लाह ने इंसान में चुन लेने की क़ुव्वत दी है, इसके मायनी यह हैं कि उसे आज़ाद फ़ैसले की ताक़त से मालामाल किया है, अलबत्ता अगर अल्लाह चाहे, तो उसे हुक्म दे सकता है कि कोई ख़ास रास्ता/तरीक़ा चुन ले, लेकिन हम अपनी ज़िन्दगी में ऐसा कुछ भी नहीं पाते कि अल्लाह आमतौर से ऐसा करता है, क्योंकि उसने हमें फ़ैसला करने और चुनने की ताक़त दी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

है, इसलिए हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि वह हमें बग़ैर दख़ल अन्दाज़ी किये आज़ाद छोड़ दे। इसका मतलब यह हुआ कि वह (अल्लाह) चाहता है कि हम अपनी चुनने की ताक़त को अपने काम में लाएं और अपने फ़ैसले ख़ुद करें।

विल्सनः ख़ुदा हमारे आज, हमारे आने वाले और साथ ही हमारे पिछले कामों और हाल के बारे में भी जानता है। उसे मालूम है कि हम बहुत बाद में क्या करेंगे, और अब इस वक़्त क्या कर रहे हैं? उसे मालूम है कि हम पैदा होकर आगे चल कर कौन सा रास्ता अपनायेंगे? चूँकि उसे हर बात का पहले इल्म है, इसलिए हमारे कामों के होने से पहले ही तय हो चुके होते हैं।

हम (इनके अलावा) कोई ऐसा नया रास्ता अपना नहीं सकते, जो ख़ुदा को मालूम न हो, और न हम उस रास्ते को अपनाने के क़ाबिल हैं, जो उसे पहले से मालूम है। हमारी नाकामी इस रास्ते को न अपनाने की, जिसका उसे इल्म है, उसके इल्म की नाकामी होगी। (मगर) ख़ुदा का इल्म कभी नाकाम नहीं होता।

चिर्रीः बाज़ वाक़िआत पर हमारा इल्म उन वाक़िओं के होने को तय नहीं करता, और न उनके बारे में हमारा इल्म वाक़िआत के सामने आने का कारण होता है। मसलन मुझे मालूम है कि किसी फ़ैक्ट्री में सब मज़दूर अपना खाना दोपहर के वक़्त खाते हैं, इसका

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मतलब यह तो नहीं है कि मेरी इत्तेला या उम्मीद ने उन्हें अपना खाना दोपहर को खाने पर आमादा किया है। बेशक अल्लाह हमारे आने वाले हाल को जानता है, लेकिन इसका लाज़मी तौर पर यह मतलब तो नहीं है कि उसका जानना हमारे आगे के सारे काम उसके जानने की वजह से मजबूर होकर होंगे। हमारे हर एक काम की अपनी वजह होती है, और उसका ख़ास करने वाला इंसान का इरादा होता है, जो उसे उस काम को करने को आमादा करता है।

इसके साथ ही अल्लाह जानता है कि मैं कोई काम अपने आज़ाद इरादे की वजह से अंजाम दूँगा। चूँकि अल्लाह का इल्म नाकाम नहीं होता, इसलिए मेरा काम आज़ाद काम होगा, जिसे मैं अपने आज़ाद इरादे से करूँगा। अगर मेरा काम ज़ोर ज़बरदस्ती से हो, तो (मआज़ल्लाह) इसका मतलब होगा कि अल्लाह का इल्म नाकाम हुआ। अल्लाह का इल्म कभी नहीं नाकाम होता, इसलिए मैं अपना फ़ैसला ख़ुद अपनी आज़ाद क़ुव्वते इरादी (Will Power) से लूँगा।

विल्सनः बहस ने मामलात को मुकम्मल तौर पर साफ़ कर दिया है। वह आख़िरी प्वाइंट, जिसे आपने बयान किया, वह बहुत अहम है। हक़ीक़त में आख़िरी प्वाइंट, जिसे मैंने बयान किया, एक वाक़िआ और उसकी वजह के इल्म में शक पैदा करता है, मगर हर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

वाक़िए की उसकी अपनी वजह होती है। हम जानते हैं कि ख़ुदा को इल्म है कि हमारा हर काम हमारी क़ुव्वते इरादी का नतीजा होता है। और चूँकि ख़ुदा ने हमें चुनने की क़ुव्वत दी है, हमारा इरादा इस वक़्त का मुफ़्त में हासिल होने वाला फल होना चाहिए। ख़ुदा का इल्म कभी भी नाकाम नहीं होता। लिहाज़ा हम भी अपने आज़ाद इरादे की वजह से अपने काम करेंगे।

जब हम इंसान की आज़ादी के नज़रिये (Doctrine of Freedom of Man) के साथ होंगे, तो हम सदा को वैसे ही टकराव से महफ़ूज़ रहेंगे। ख़ुदा के अद्ल का उसूल क़िस्मत के पहले तय हो जाने (Predestination) से तालमेल नहीं खाता। हम नहीं कह सकते कि हमारे (रोज़मर्रा के) काम अल्लाह करवाता है। जब तक कि हम अल्लाह के अद्ल से इनकार न कर दें। चूँकि हम न तो ख़ुदा के अद्ल के उसूल से इनकार कर सकते और न हम टकराव में यक़ीन करने वाले हैं, इसलिए हमें क़िस्मत (के पहले तय हो जाने) के नज़रिये से ज़ोरदार इनकार करना होगा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–10

पैग़म्बरः इतिहास (History) में

विल्सनः ख़ुदा के एक मानने वाले मज़हब बताते हैं कि उनके सभी पैग़म्बर अरबी और यहूदी नस्ल (Semitic Race) से थे, और यह भी कि उनमें से ज़्यादातर पैग़म्बर इब्राहीम[अ०] की नस्ल से थे, यानी या तो वह इस्हाक़[अ०] की या फिर इस्माईल[अ०] की औलादों में से थे। इसे एक तरह से फ़ज़ीलत तसव्वुर किया जा सकता है, जिसकी वजह से इस्राईलियों और इस्माईलियों को सारे इंसानों पर फ़ज़ीलत मिली थी। लेकिन यह बावर करना मुश्किल है कि ख़ुदा सिर्फ़ दो गिरोहों को अपने पैग़ाम से नवाज़ेगा। ख़ुदा सभी लोगों का है, इसलिए उसे अपने पैग़ाम को इन दो गिरोहों के अलावा भी सब पर उतारना चाहिए। अगर हिस्ट्री हमें सही बताती है, तो इन दो गिरोहों ही में से पैग़म्बरों के आने की कोई तो वजह होगी?

चिर्रीः इंसानी नस्ल की हिस्ट्री हमें बताती है कि इंसान की समझ उस वक़्त मैटिरियल बातों से ऊपर उठने के और बड़े और पूरी दुनिया वाले विचारों के क़ाबिल न थी। जहाँ तक इंसानी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मेलजोल और भाईचारे का सवाल है, वह हर आदमी के अपने ख़ानदान वालों से मोहब्बत, और रिश्तेदारों और क़रीबियों को दोस्त रखने तक सिमटे थे। और दूसरे सारे क़बीले या तो अजनबी थे या फिर उनके लिए ग़ैर यहूदी थे। मुल्की या इंसानी तसव्वुर बहुत ही कम उनके ज़ेहन में बैठते थे।

हालांकि कुछ ज़ेहनी तौर से ख़ुदा के इनाम पाये लोग भी उनके बीच रहते थे, जो एक-दूसरे को ज़्यादा ही समझने की सलाहियत रखते थे, और मैटरियल सतह से बुलन्द थे, वह हर वक़्त दूसरों की अगवाई करने और उन्हें समझाने के लिए तैयार रहते थे। उनकी ग़ैर मामूली सलाहियत की वजह से, इस परम महान (अल्लाह) ने उन पर हक़ व सच को नाज़िल फ़रमाया और उन्हें एक बड़े सख़्त काम के लिए यानी इंसानियत की अगवाई के लिए चुना।

इन लोगों को उनकी सलाहियत की वजह से चुन लिया गया था, न कि उनके किसी ख़ास क़बीले या नस्ल से ताल्लुक़ की वजह से। जैसा कि तवक़्क़ो भी थी, उनको बड़ी दिक़्क़तों का सामना करना पड़ा। लोग न तो उनके कहे पर चलने को तैयार थे और न उनकी तालीमात को लेने पर, उन में से ज़्यादा तर या तो नूह[अ०] की तरह थे, जिन्हें मानने वाले बहुत कम लोग मिले, या फिर इब्राहीम[अ०] की तरह, कि वह एक पैग़म्बर की तरह रहे, जिन्हें कोई मानने वाला न

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मिला।

चूँकि समाज ने बदलाव से मना कर दिया था, इसलिए यह समझा जा सकता है कि इब्राहीम[अ०] की तरह के पैग़म्बर को अब अपने दीन के सिलसिला चलाने के लिए उसे अपनी औलादों –इस्माईल[अ०] और इस्हाक़[अ०]– के ज़रिये फैलाया जाए, जो अपने बुज़ुर्गवार बाप के दीन पर थे और जिन्होंने इसे अपनी औलादों को सौंपा। इस तरह दीनी तालीम एक महदूद सिलसिले यानी क़बीले की सतह पर आगे बढ़ती रहीं। सदियाँ बीत गईं, न तो इस अक़ीदे के मानने वाले क़बीले से बाहर मिले और न तो इसमें इब्राहीम[अ०] की सभी औलादों ने इसे क़ुबूल किया।

ख़ुदा का मक़सद यह तो न था कि इस अक़ीदे को सिर्फ़ क़बीले की सतह पर या मुल्क के अन्दर ही फैलाया जाए। वह रहमान और रहीम चाहता था कि इस अक़ीदे को सारी दुनिया में फैलाया जाए, ताकि इंसान जाति को सिराते मुस्तक़ीम की सीख दी जाए। अल्लाह दुनिया का इन्तेज़ाम आम और नेचुरल तरीक़े पर करता है और दुनिया के मामलात को 'कारण और असर' (Causation) के उसूल का पाबन्द करता है। उसने नाज़िल किये अक़ीदे को महफ़ूज़ और ज़िन्दा रखा, हालांकि यह सब है एक छोटं सं जुट की वजह से, जिस पर बरकत नाज़िल हुई पाक बाप से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अक़ीदे को अपनाने की वजह से। उसने इस अक़ीदे को रौशन किया और फैलाया, जब वह जुट फैला और उसने ताक़त पायी, अक़ीदे को फैलाने के इस बड़े काम के।

इस छोटे से जुट की क़िस्मत में दो सतहों पर फैलना फूलना था, यानी ईस्माईलिया और इस्राईली सतहों पर। दोनों पर बरकतें नाज़िल हुई थीं और दोनों इम्तेहान से गुज़रे थे और दोनों को अक़ीदे को महफ़ूज़ रखने और फैलाने के बड़े काम के लिए अपनाया गया था, मगर दोनों के इम्तेहान एक वक़्त में न लिये गए थे। हालांकि इस्माईल[अ०] इब्राहीम[अ०] के पहले बेटे थे, और उन्होंने अपने भाई इस्हाक़[अ०] की तरह ईमान और बरकत को वरसे में पाया था, अल्लाह ने (उनकी नस्ल में) बाद वालों के इम्तेहान को सैकड़ों साल के लिए रोक लिया था। वह (अल्लाह) उनको आमादा कर रहा था, इस मिशन (तबलीग़) को जारी रखने के लिए, जिसे इस्हाक़[अ०] के वारिसों ने शुरु किया था।

इस्हाक़ के ख़ानदानी वरसे के सिलसिला चलने के शुरु में अल्लाह ने उन से क़रार (वचन) लिया। पुरानी बाइबल में दर्ज हैः

‘‘और इस्माईल[अ०] के लिए, मैंने तुझे सुना, देख मैं उसे बरकत दूँगा और उसे फलदार बनाऊँगा और उसे बहुत ज़्यादा बहुतात दूँगा, वह बारह शहज़ादों का बाप होगा, और मैं उसे एक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

महान जुट बनाऊँगा। मगर मैं अपना क़रार इस्हाक़[अ०] से करूँगा, जिसे सारा तुम्हारे लिए रखेगी इस मौसम में दूसरे साल।'' (जेन्सिस, बाब-21)

विल्सनः आपके बयान के मुताबिक़ ख़ुदा का मक़सद अक़ीदे को बस एक या दो जुटों या देशों में रखना न था, बल्कि इस सच्चे अक़ीदे को पूरी दुनिया में फैलाने का हुक्म था, और ख़ुदाई उसूलों से सारे देशों को इसकी पहचान कराने का भी। मगर ऐसा लगता तो नहीं। पुरानी बाइबल में कई बार इस्राईलियों को ख़ुदा का चुना जुट कहा गया है। और दूसरी को ग़ैर यहूदी। यह हमें बताता है कि ख़ुदाई पैग़ाम ज़्यादा तर बनी इस्राईल से जुड़ा था।

चिर्रीः क़ायदे के क़रार से, जो अल्लाह और इस्हाक़ के बीच हुआ था, इस्राईल की औलाद को ख़ुदा के हुक्मों को क़ुबूल करना और उसे खरी नियत के साथ गले लगाना था, ताकि वह सारी उम्मत को अल्लाह के रास्ते पर ले चलें। लेकिन बनी इस्राईल इस उम्मीद पर खरे न उतरे। सिर्फ़ कम ही लोगों ने ख़ुदाई तालीमों पर अमल किया, और वह भी इस अक़ीदे को इंसानियत के दुनिया भर वाले पैग़ाम न समझ कर दिल में न रख सके।

इसका नतीजा यह हुआ कि बाद में आने वाले इस्राईली पैग़म्बरों ने अपने लोगों से जितनी उनकी समझ थी उतनी ही बात

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

की। इस सूरतेहाल में अक़ीदे को गिरोही या क़ौमी समझा जाने लगा। अल्लाह तो इस्राईल का अल्लाह है, और बनी इस्राईल उसके चुने लोग हैं। पैग़म्बरों ने फ़िलिस्तीनी और इस्राईली लोगों को सच्ची नियत के साथ अक़ीदे पर अमल करने की तालीम दी। बनी इस्राईल के सभी पैग़म्बर ख़ुसूसन इस ही जुट से वाबस्ता रहे। और उनका सरोकार किसी दूसरे जुट से न था। यहाँ तक जैसा कि सीनेट मेथ्यू (इंजील) में लिखा है, ईसा[अ०] का भी यही रवैय्या थाः

''तब ईसा[अ०] वहाँ गये, और वहाँ से गये तायर (Tyre) और सैदाँ (Sydon) के किनारे की तरफ़। देखो कनआन की एक औरत उन्हीं किनारों से निकली। और उसने उन्हें ज़ोर से आवाज़ दी, यह कहकर (कि) ''हम पर रहम कीजिए, ऐ मालिक, दाऊद के बेटे। मेरी बेटी एक शैतान से बुरी तरह परेशान है... मगर उन्होंने जवाब में कहाः मुझे नहीं भेजा गया है, मगर इस्राईल के घर की के ग़ायब भेड़ों के लिए। तब वह आई और उसने उनकी इबादत की यह कहकर (कि) आक़ा! मेरी मदद कीजिए, मगर उन्होंने जवाब में यह कहाः यह अच्छा नहीं है कि बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के सामने डाल दी जाए।'' (सेन्ट मैथ्यूज़, बाब-15)

विल्सनः इंजील हमें बताती है कि ख़ुदा ने इब्राहीम[अ०] को हुक्म दिया कि वह सारा[अ०], अपनी बीवी की हिम्मत बढ़ाएं और इस्माईल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

को फ़ारान के रेगिस्तान में छोड़ आएं, जहाँ न तो खाना दस्तयाब था और न पानी। यह न कि सिर्फ़ रहम से बाहर था, बल्कि इस बात का इशारा करता है कि ख़ुदा को इस्माईल[अ०] और उनके बच्चों से कोई काम लेने का मक़सद न था।

चिर्रीः इस्माईलियों की तैयारी तो उस वक़्त से शुरु हो गई थी, जब अल्लाह के हुक्म पर चलने वाले बन्दे इब्राहीम[अ०] ने अपनी बीवी सारा से कहा कि वह इस्माईल[अ०] और अपनी बीवी हाजरा के साथ फ़ारान के उजाड़ बन में चले जाएं। पुरानी इंजील के पढ़ने वाले इस राय की छोटे जुट पर ताज्जुब करने के हक़दार होंगे, जो (बज़ाहिर) बहुत ही बेरहम और जंगली नज़र आती है। लेकिन जब हम बाद में ज़ाहिर होने वाले वाक़िओं पर नज़र करते हैं, जो हिस्ट्री में महफ़ूज़ हैं, तब समझ में आती है हमारे इस छोटे जुट की बात।

दरअस्ल एक सच्चे दीन को फैलाने का काम, लोगों के किरदार को बदलने से और समाज में ज़िन्दगी के तरीक़े को बदलने के मायने है। इस काम में जो टकराव सबसे पहले सामने आता है, वह नयी सोच के बतलाने वाले उस्तादों के बीच और जिन पर वह उनको असरअन्दाज़ होने की फ़िक्र करता है उनके बीच ज़ाहिर होता है। इस तरह के काम की मुख़ालिफ़त आमतौर से होती है, और यह मुख़ालिफ़त अस्लहे के इस्तेमाल तक जा पहुँचती है। इस सूरते हाल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

में अक़ीदे की आज़ादी, तबलीग़ और आमाल को ख़तरा लग जाता है। ऐसे में आज़ादी को ख़तरों से बचाया और महफ़ूज़ उस वक़्त किया जा सकता है, जब हम नयी सोच और एतेक़ाद को पेश करने वाले चैलेंज को क़ुबूल करें और सख़्ती के साथ निपटें। तब तबलीग़ के मिशन के लिए एक ख़ुदाई रहबर की ज़रूरत होती है, जिसको एक मज़बूत, बहादुर और कहने पर चलने वाले जुट की ज़रूरत होती है, जो बिला किसी झिझक के क़ुर्बानी देने को तैयार रहता है।

दूर पूर्व (For Eart) के सारे मुल्कों में, अरब सैकड़ों साल से मुमताज़ रहे हैं, लिहाज़ा वही इस तरह के काम के क़ाबिल रहे हैं। अरब प्रायःद्वीप (Peninsula) हमले से महफ़ूज़ रहा है, इस पर किसी बाहरी ताक़त ने क़ब्ज़ा नहीं किया है। अरब लोगों ने अपनी आज़ादी का बख़ूबी इस्तेमाल किया, और इस पर कोई राज करने वाला कभी भी कोई रोक न लगा सका। इसलिए हर अरब ख़ुद-एतेमादी (Self-Confidence) की वजह से ख़ुद अपनी ताक़त के बल पर हमेशा तैयार रहता आया है, अपनी आज़ादी का ख़ुद अपनी ताक़त के बल पर हिफ़ाज़त और ख़ुद अपनी मरज़ी से अपनी आरज़ूओं को अमली (प्रेक्टिकल) शक्ल देने में। कोई भी मुल्क जहाँ ऐसे लोग हों, एक बड़े मिशन को चलाने का हक़दार है, जब कि वह किसी ख़ुदा वाले रहबर से पाज़िटिव तौर से असरअन्दाज़ हुआ हो, और ताज्जुब भरे तौर पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बेहतरीन जीत पाता रहा हो।

इस तगड़े व जियाले समाज को इब्राहीम[अ०] के दीन की तालीम देना और उसको उसकी क़िस्मत की चोटी के पाने के लिए तैयार करने के लिए अल्लाह ने अपने बन्दे इब्राहीम[अ०] से कहा कि वही अपनी श्रीमती सारा से कहें कि वह अपने बेटे इस्माईल[अ०] को रवाना कर दें ताकि वह अरबों के बीच रहें सहें, ताकि उनके बीच शादी ब्याह की वजह से, इस्माईल[अ०] की औलादें अरबों से मिल जाएं और एक बड़ा समाज बनकर उभरें, जिसकी क़िस्मत में आगे के दिनों में एक मक़सद वाले मिशन को आगे बढ़ाना लिखा जा चुका था।

ख़ुदा ने बच्चे की आवाज़ सुनी और ख़ुदा के फ़रिश्ते ने हाजरा को जन्नत से बाहर बुलाया, और उन से कहाः तुम्हें........... .... है, हाजरा! डरो नहीं, क्योंकि ख़ुदा ने बच्चे की आवाज़ सुन ली है, (कि) वह है कहाँ ? उठो (और) बच्चे को उठा लो, और उसे अपने हाथ में पकड़ लो, कि मैं उसे महान राज दूँगा। और ख़ुदा ने अपनी आँखें खोलीं, और उस (हाजरा) ने पानी का एक कुँआं देखा, और वह गई और उसने बोतल को पानी से भर लिया और बच्चे को पिलाया। और ख़ुदा बच्चे के साथ था, और बढ़ा और अकेले में रहा ..... और वह फ़ारान की तन्हाई में रहा।'' (जेन्सेज़ (Gensis) बाब-21)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस्माईल[अ०] को अरबिस्तान में छोड़कर इब्राहीम[अ०] ने अरब धरती में अक़ीदे का बीज बो दिया। (और) बीज को उगने की ग़रज़ से और अक़ीदे के फैलने के लिए उन्होंने आने वाले दिलों के लिए एक बुनियाद रख दी पाक घर काबा के अरब के बीच, अल्लाह के। दुनिया में इस से पहले बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) की और जैसा कि इब्राहीम[अ०] को उम्मीद थी, अल्लाह ने उनको ख़ुशख़बरी दी थी, उस बैतुल्लाह ने अरब में रहने वालों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह किया, और मरकज़ बन गया अरब मुल्कों का (भी)। बाद को पाक शहर मक्का उसके इर्दगिर्द फैलता गया। जब से इब्राहीम[अ०] के बुलावे पर हर साल एक बड़ी संख्या में हाजी यहाँ आते हैं, इस घर की ज़ियारत करते हैं और इस जगह पर अल्लाह की इबादत करते हैं। क़ुरआन कहता हैः

(तर्जुमाः) ‘‘और (ऐ रसूल[स०]) (वह वक़्त याद करो), जब हम ने (बादल के ज़रिये से) इब्राहीम[अ०] के लिए (अल्लाह के) घर की जगह ज़ाहिर कर दी और (उनसे कहा कि) मेरा किसी चीज़ को शरीक (साझी) न बनाना और तुम मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा), क़याम (ठहरने) और रुकू व सुजूद करने वालों के लिए साफ़ सुथरा रखना। और लोगों को हज की ख़बर कर दो कि लोग तुम्हारे पास (जुट के जुट) पैदल और हरत तरह की (दुबली) सवारियों पर जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

दूर दराज़ का रास्ता काटती आती होंगी (चढ़ चढ़ के) आ पहुँचेंगे, ताकि अपने अपने (दुनिया व आख़िरत के) फ़ायदों को देखें और चंद मोअय्यन दिनों में उन जानवरों चौपायों पर, जो अल्लाह ने (बतौर रोज़ी रोटी) दिये हैं, (ज़बह के वक़्त) अल्लाह का नाम लें और फिर तुम लोग (क़ुरबानी के गोश्त) ख़ुद भी खाओ और भूखे मोहताज अफ़राद को भी खिलाओ।'' (सूरए हज, 22/26-28)

यह इब्राहीम[अ०] के लिए जिगर को टुकड़े-टुकड़े करने वाली बात थी कि उन्हें अपने इकलौते बेटे को अरब के रेगिस्तान में बसाना पड़ रहा था, जहाँ न तो फल थे, और न पानी था और न आबादी, मगर उन्हें दो मक़सदों को पूरा करना थाः उनमें से हर एक इतना अहम और काम का था कि उसने इब्राहीम[अ०] को उस पर आमादा किया कि वह इन मक़सदों के लिए क़ुर्बानी दें भरपूर जतन के साथ।

इनमें से पहले मक़सद को जल्द ही पा लेना था, यानी पाक घर का बनाना और उस मस्जिद की देखरेख के लिए अपने बेटे को ज़िम्मेदारी देना, जो वहाँ अल्लाह की इबादत के साथ-साथ अल्लाह के सच्चे दीन की रू से वहाँ सेवा देगा, और ख़ुद अपने बच्चों को और मुल्क के लोगों को सच्चे उसूलों की तालीम देगा। इस तरह इब्राहीम[अ०] ने न यह कि अपने अक़ीदे को फैलाया बढ़ाया, बल्कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसके चलते रहने की ज़मानत भी दे दी। अगर इस्हाक़[अ०] की औलाद इस दीनी काम में नाकाम रहे, तो अरब में यह अक़ीदा इस्माईल[अ०] की औलादों के ज़रिये चलता रहे। मुक़द्दस क़ुरआन का एलान हैः

(तर्जुमाः) "ऐ हमारे पालने वाले! मैंने तेरे सम्मानित (एहतेराम किये गये) घर (काबा) के पास एक बे खेती (के उजाड़) बन में अपनी कुछ औलाद को लाकर बसाया है, ताकि ऐ हमारे पालने वाले! ये लोग बराबर यहाँ नमाज़ें पढ़ा करें, तो तू लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ मायल कर (झुका) दे ताकि वह यहाँ आकर आबाद हों और उन्हें तरह-तरह के फलों रोज़ी अता कर (दे), ताकि वह तेरा शुक्र करें।" (सूरए इब्राहीम, 14/37)

अरब की धरती में इब्राहीम[अ०] के अक़ीदे के फैलाव का हमें अन्दाज़ा नहीं है! हिस्ट्री हमें साफ़ तौर से इस लम्बे दौर में, जो इब्राहीम[अ०] के वक़्त से पाँचवीं सदी ईसवी तक फैला हुआ है, मज़हबी सूरतेहाल के बारे में नहीं बताती है। छटी सदी में ज़्यादा तर मूर्ति पूजा करने वाले थे। मगर इसके बावजूद उसी दौर में हमको मिलता है कि वहाँ कुछ ऐसे रीति रिवाज थे, जिनको हम सिर्फ़ इब्राहीम[अ०] की तालीमों से वाबस्ता कर सकते हैं। इसमें मक्का में पाक बैतुल्लाह की ज़ियारत भी शामिल थी, और ख़तने की रस्म भी, जो अरब में ग़ैर ईसाई क़बीलों में रायज था और अंजाम भी दिया जाता था। इन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

रीतियों और तरीक़ों में हमें यह भी मिलता है कि अरबों में से कुछ थोड़े लोग अल्लाह पर ईमान रखते थे, उसी की इबादत करते थे और उन्होंने मूर्ति पूजा को दरकिनार कर दिया था।

इब्राहीम[अ०] का दूसरा मक़सद इस्माईल[अ०] की औलादों को और उस समाज को, जिस से वह जुड़े थे, बहुत बाद के दिनों के लिए महान शान वाले समाज की सूरत तैयार करना था, जब अरबी बोलने वाले लोग इज़्ज़त वाले होंगे, अपने में आख़िरी पैग़म्बर के आने से, और उन से महान पैग़ाम को पाने से, और अल्लाह के महान ग्रन्थ को सारी दुनिया में फैलाने की वजह से। हमें क़ुरआन ने बतलाया हैः

(तर्जुमाः) ''और वह वक़्त भी याद दिलाओ, जब इब्राहीम[अ०] व इस्माईल[अ०] ख़ाना काबा की बुनियादें ऊँची कर रहे थे (और दुआ माँगते जाते थे कि) हमारे पालने वाले! हमारी (यह सेवा) क़ुबूल कर तू बेशक (दुआ का) सुनने वाला और (नियत का) जानने वाला है। हमारे पालने वाले! तू हम दोनों को अपना मुसलमान (कहा मानने वाला) बन्दा बना दे और हमारी औलाद से एक गरोह पैदा कर जो तेरे कहे पर चलने वाला हो। हमें हमारे हज की जगहें दिखला दे और हमारी तौबा क़ुबूल कर बेशक तू ही तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है (और) ऐ हमारे पालने वाले! मक्के वालों में इन्हीं में से एक रसूल को भेज, जो इनको सामने तेरी आयतें पढ़ कर सुनाये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और आसमानी किताब और अक़्ल की बातें सिखाये और उन (के नफ़्सों) को पाकीज़ा कर दे। बेशक! तू ही वर (ईश्वर) बड़ा समझ वाला है।'' (सूरए बक़रा, 2/127-129)

पैग़म्बर इब्राहीम[अ०] की दुआ ने सातवीं सदी ईसवी में बड़ी शान से अपना जवाब पाया। जिसको आना था, वह पैग़म्बर[स०] आया। पैग़ाम को लाजवाब तरीक़े से पहुँचाने के लिए, जो हक़ को सपोर्ट करने वाला, ज़रूरी आज़ादी देने वाला, और ख़ुदाई उसूलों के रास्तों को खोलने करने वाला है। यह उसकी अक़्ल के इस्तेमाल का तरीक़ा है, जो लोगों को क़ायल करने वाला और पाक आज़ादी को नुक़सान पहुँचाने वाले हर एक के सामने ताक़त का इज़्हार करने वाला है।

बेशक! सातवीं सदी ईसवी में, सारे जहाँ के लिए बरकत वाले आख़िरी पैग़म्बर मोहम्मद[स०] आए, मक्का में, जो अरब के बीचोबीच है, पूरब और पच्छिम को, यानी सारे जहाँ को अपने नूर से जगमगाने वाले।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-11

हमें पैग़म्बरों की ज़रूरत क्यों है?

विल्सनः इंसान जाति को पैग़म्बर या ख़ुदा की तरफ़ से रसूल की ज़रूरत क्यों है? इंसान को तो ख़ुद ज़ेहनी सलाहियत दी गई है कि जिस से वह ग़लत व सही में फ़र्क़ को समझ सकता है। इसलिए कहने वाला कह सकता है कि उसे ख़ुदाई रहबरी की ज़रूरत यह बताने के लिए नहीं है कि क्या सही है और क्या ग़लत? एक औसत दर्जे का समझदार अपने मामलात को समझदारी के साथ ख़ुद अंजाम दे सकता है। इस तरह वह दूसरों के साथ और ख़ुद अपने अहले ख़ानदान के साथ समझदारी से मामलात को बरत सकता है, बग़ैर किसी ख़ुदाई क़ानून की मदद के।

चिर्रीः पैग़म्बर की ज़रूरत कई वजहों पर होती हैः

1- लोगों को यह बताने के लिए कि एक अल्लाह मौजूद हैः

नज़रियाती तौर पर इंसान ज़मीन पर अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों को देखकर समझ सकता है कि एक पैदा करने वाला है, जो मौजूद है। एक आज़ाद ज़ेहने इंसानी इसकी सलाहियत रखता है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि वह नज़रियाती उसूलों और आम ख़यालों व तसव्वुरों को समझ सके। हम अपनी जिस्मानी भूख और ज़रूरियात की वजह से, क़ुरबत के साथ इस मैटिरियल दुनिया से बहुत क़रीब से जुड़े हुए हैं। दुनिया का मैटिरियल लुभाव हम में से बेहतरीन लोगों को भी अपनी तरफ़ खींच लेता है। एक औसत दर्जे का इंसान यह सलाहियत नहीं रखता कि वह मैटर वाली चीज़ों को छोड़कर के पैदा करने वाले ख़ुदा का तसव्वुर कर सके, और न तो हम एक औसत दर्जे के इंसान से यह उम्मीद कर सकते हैं कि वह अपने को इस मैटिरियल दुनिया से हट कर सफ़ाई के साथ अल्लाह के बारे में सोचे।

यह भी कि दुनिया के क़ायदे का ताज्जुब भरा निज़ाम इस बात को बताता है कि एक इन्तिज़ाम का हक़ीक़ी चलाने वाला है, यानी अज़ीम ताक़त व क़ुदरत वाला अल्लाह। मगर इंसान तो छोटी-छोटी बातों में इतना डूबा है कि वह क़ुदरत के क़ानून के बारे में सोचता ही नहीं, इसलिए वह इनकी शुरुआत के बारे में भला कैसे सोचे? इंसान तो सूरज को पूरब से निकलते हुए देखते-देखते इसका आदी हो गया है, इसके बारे में वह यह क्यों सोचे कि ऐसा क्यों होता है? इंसान ने पैदा करने वाले की ज़रूरी पहचान अभी पूरी तरह नहीं की है। आमतौर से उस (पैदा करने वाले) के वुजूद का एतेराफ़ इंसानों की आम ग़ौर व फ़िक्र का नतीजा नहीं है, बल्कि यह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तो कुछ ज़हीन लोगों के समझाने का नतीजा हैं, जिन्होंने बनी नौ इंसान की रहबरी की इस नतीजे तक पहुँचने में।

2- कभी न बदलने वाली हुकूमत की ज़रूरतः

लोगों में उनकी तालीम, सलाहियत, जज़्बात और उनकी तरबियत पसमन्ज़र के लिहाज़ से उनके नज़रियों में फ़र्क़ होता है। लोगों और उनके समाजों में भी बहुत से ज़रूरी और अहम मामलात, जिनका इंसान के काम से ताल्लुक़ होता है, उन पर लोगों और गिरोहों के बीच बहस होती रही है। किरदार और किरदार बनाने के इल्म पर भी बहस बने हुए हैं। मामलात को साफ़ करने के लिए किसी भी नुक़्त-ए-नज़र के लिए फ़लसफ़े (Philosphy) से ठीक ठहराया जा सकता है। बजाए, ताकि हर एक के लिए अक़्ल से चुनना इन्तेख़ाब करना मुमकिन हो। अक़्ल की बातों को ऊँचा रखने वाले फ़लसफ़ी मामलात को उलझा रहे हैं। अक़्ल और फ़लसफ़ा सवालों के जवाब देने के बजाए शक शुब्हे को बढ़ा रहे हैं। इस तरह अक़्ल और फ़लसफ़ा दोनों नाकाम हो चुके हैं। जो जवाब हमें चाहिएं, उनको बे बदल हाकिमियत से मिलना चाहिए, जिसके आगे अफ़राद और गिरोह सभी सरे तस्लीम ख़म करें, और वह हाकिम अल्लाह है।

3- अल्लाह की हम्द (सराहना) करने की ज़रूरत हैः

जब कि एक आज़ाद सोच वाला अल्लाह और उसकी बड़ाई

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

को पहचानने के क़ाबिल होता है, लेकिन (आमतौर से) वह अकसर उसकी हम्द से ग़ाफ़िल रहता है, और अगर कोई उसकी हम्द करने को समझता भी है, तो उसे यह मालूम नहीं होता कि ऐसा वह कैसे करे ? कुछ लोग यह सोच सकते हैं कि जानवरों की क़ुर्बानी देना और उन्हें जला डालना इस सिलसिले में एक अहम काम है, तो कुछ दूसरे ख़ुदा के नाम पर हैवानी जज़्बात की पैरवी करते हैं। कुछ लोग ख़याल करते हैं कि अकेले वाली ज़िन्दगी को ख़ुदा पसन्द करता है, तो कुछ दूसरे यह मानते हैं कि ज़िन्दगी तो ख़ुदा को नापसन्द है, और इंसानी जाति बरबाद करने वाली है। और कुछ दूसरे ख़ुदा की हम्द गाना गाकर और बाजे बजाकर करते हैं, और कुछ दूसरे अपने आप को उसके सुपुर्द कर देने और उसके सामने झुक जाना ही इबादत का एक एक तरीक़ा समझते हैं। मगर पसन्दीदा इबादत का सही तरीक़ा तो वह है, जो उसे (अल्लाह को) पसन्द हो, ख़ुद हमारी पसन्द और ख़याल के मुताबिक़ न हो। इसके लिए यह ज़रूरी है कि वह (अल्लाह) हमें अपने भेजे हुए रसूल[स०] या पैग़म्बर[स०] के ज़रिये अपने हुक्म बताये।

4- जज़्बात पर रोक लगाने की ज़रूरतः

बग़ैर हिदायत (रास्ता दिखाना) और तरबियत के आदमी अपने शरीर व जज़्बात में जानवरों की तरह लगता है। वह अक़्ल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(बुद्धि) को ख़्वाहिशों के नीचे कर देता है, जब तक कि उस पर रोक लगाने वाली बातों को काम में न लाया जाए। फ़लसफ़ा हमारी ख़्वाहिशों पर बन्दिश लगाने में मदद नहीं कर सकता, क्योंकि इसके बारे में कम ही लोग जानते हैं, और यह कि यह लगातार भी नहीं है कि हम से ज़ोरदार तरीक़े से कहे कि जज़्बों पर क़ाबू रखो। कुछ लोग इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि हमें सिर्फ़ नेचुरल ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कोशिश करना चाहिए। आज हम हद से बढ़े हुए मैटेरियल नज़रिये से दोचार हैं, कि इस नज़रिये का कहना है कि उसूली वजहों से जज़्बों पर रोक नहीं लगाना चाहिए। किरदार व उसूल की सभी कसौटियाँ तो आख़िर अल्लाह के साथ हैं। जब उसके रसूल उसका पैग़ाम पहुँचाते हैं, तो वह, इन मामलात पर झगड़े को ख़त्म करने की एक ठोस बुनियाद होगी।

5- आख़िरत में ज़िन्दगी पर जानकारी की ज़रूरत हैः

वह शख़्स जो अल्लाह पर ईमान रखता है, तो उसे यह भी मानना है कि उसकी ज़िन्दगी बाद मौत किसी न किसी सूरत में जारी रह सकती है। यह भी है कि हिसाब का एक दिन भी होगा, जिस दिन जज़ा और सज़ा का हुक्म होगा। अगर मौत के बाद इस तरह की ज़िन्दगी होगी, तो आदमी को हिसाब-किताब के लिए तैयार रहना चाहिए। सिर्फ़ अल्लाह ही मौत के बाद की ज़िन्दगी के बारे में जानता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

है, फ़लसफ़ा इस सिलसिले में किसी तरह मदद न करेगा, और न इंसानी ज़ेहन अपनी आँखों से देखकर या इस दुनिया में तजुर्बे की बुनियाद पर इंसानी ज़िन्दगी को काम की बना सकता है। सिर्फ़ अल्लाह को इसका इल्म है। वही इसकी इत्तेला अपने रसूल[स०] के ज़रिये दे सकता है, ताकि लोग जानें और (हिसाब के दिन से) डरें।

ऊपर के सवालों के जवाब अल्लाह के पास हैं, वह इनके बारे में मालूमात किसी को जब चाहे दे सकता है। एक तरीक़ा तो यह है कि वह अपने पैग़म्बर को भेजे, जो इन सवालों के जवाब अल्लाह और उसके बन्दों के बीच कड़ी की हैसियत से पहुँचा सकता है। इस तरह के ख़ुदा के पैग़म्बर की तबलीग़ से ये बातें तय पाती हैंः

1- लोगों की तवज्जो दुनिया के महान निज़ाम की असल ख़ुसूसियत की तरफ़ दिला के, जो आम लोगों के लिए कोई अहमियत नहीं रखता, क्योंकि वह उसे सिर्फ़ देखते जानते रहते हैं। दरअस्ल दुनिया हदों में सिमटी नहीं है, और अजूबों से भरी है, इसलिए अगर इस पर ग़ौर से सोचा जाए, तो सूझबूझ वाला आदमी पैदा करने वाले पर सच्चा और पक्का ईमान ले आयेगा।

इंसान की तवज्जो क़ुदरत की निशानियों की तरफ़ उसके पैग़म्बरों की तालीमात और हुक्म के ज़रिये कराई जाती रही है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

2- अख़्लाक़ी (नैतिक/Moral) और उसूली स्टैन्डर्ड और तरीक़े को बयान किया जा सकता है, जिस से इंसान मिला कर इन उसूली बातों को तय कर सकता है और उन पर अमल कर सकता है।

3- अल्लाह की इबादत की ज़िम्मेदारी को साफ़ तौर पर बयान किया जा सकता है, और सिखला सकता है कि कोई इस हम्द को (इबादत करके) कैसे अदा कर सकता है?

4- हमें वह उसूल बताना कि हम अपनी भूख को कैसे मिटाएं और यह भी हम कैसे ऊँचा और पाक बनने की अपनी आरज़ू को कैसे उजागर करें, कि अगर (सही तौर से) यह सिलसिले से बढ़ती जाएगी, तो हमें फ़रिश्तों के पाले में खड़ा कर देगी।

5- हमें ठोस तरीक़े से यह बताना कि मौत के बाद ज़िन्दगी है कि नहीं? यह जानकारी हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ हक़ीक़ी पैदा करने वाले ही से मिल सकती है, कि सिर्फ़ उसी को मालूम है कि वह एक दूसरी दुनिया पैदा करेगा कि नहीं?

विल्सनः दीनियात ने इन मक़सदों के पाने में कोई मदद न की, क्योंकि हम आज भी उसूली और किरदार बनाने के मामलात में झगड़े में पड़े हैं। हक़ीक़ी पैदा करने वाले की इबादत के तरीक़े में एकरंगी नहीं है, यहाँ तक कि उसके होने पर और मौत के बाद की ज़िन्दगी पर भी।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चिर्रीः इन मक़सदों को इत्मिनान दिलाने वाले तरीक़े से समझ लिया गया है, क्योंकि इंसानों के एक बड़े हिस्से में किरदार से मुताल्लिक़ बहुत से मामलात पर तालमेल है, और उन्होंने पैदा करने वाले और क़यामत को समझ लिया है (और उस पर ईमान रखते हैं)। इंसानियत के एक बड़े हिस्से के इन ख़ुदाई उसूलों को समझ कर क़ुबूल कर लेने की वजह से इंसान ने हद से बढ़ी हुई (मैटिरियलिज़्म की) भूख पर रोक लगाई है, और दुनिया में किरदार बनाया संवारा है।

यह भी है कि ख़ुदा वाली जानकारियाँ ज़रूरी हैं, चाहे वह (फ़िलहाल आज के उखड़े मामलात की वजह से) इन मक़सदों में से किसी को पा न सके। यह कहना सच हैं, क्योंकि पैदा करने वाला मौक़ा देता है कि हम उसे समझें और अपना किरदार बनायें, जो इंसान और हैवान के बीच (फ़र्क़ की) असल लाइन खींच देता है। जब ख़ुदा किसी दूसरी दुनिया को बनाता है या बनाने का इरादा करता है, तो उसे इस बात से इंसानों को ख़ुदाई ख़बर के ज़रिये बतलाना भी चाहिए, जो अकेला तरीक़ा है हमें इन (बातों) के समझने का। अगर ख़ुदा इन बातों के हमें बताने के लिए कोई पैग़म्बर न भेजे, तो अगर हम इन की आरज़ू करें, तो हम माफ़ी के लायक़ हैं, और अब हमारे लिए मौक़ा न होगा ऊँचाई पाने का। फिर यह कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अगर वह (पैदा करने वाला) कोई दूसरी दुनिया पैदा करे और हमें न बताए, तो उसका पैदा करना (मआज़ल्लाह) बेमक़सद होगा।

तारीख़े वाक़िओं की हिस्ट्री इसे ऐसे ख़याल से मेल रखते हैं, यानी ख़ुदा वाली तालीम की ज़रूरत से। अल्लाह ने इंसानी ज़रूरतों की उस वक़्त अनदेखी न की, जबकि वह इंसान शुरुआती दौर में था। इस तरह कई समझदार लोगों को ख़ालिक़ ने चुना कि वह इंसान की ज़िन्दगी में सुधार लाने के एक बड़े और शरीफ़ाना काम को (लोगों को) बताएं और ख़ुद उसे करें भी।

विल्सनः लफ़्ज़ ''नबी'' से हम यह समझते हैं कि उसका ख़ुदा से राब्ता रहता है और वह उस से कह सकता है और उसके (ख़ुदा के) पैग़ाम को पा सकता है। इंसानी पैग़ाम पहुँचाने का तरीक़ा जिस्म के ज़रिये से अंजाम पाता है, चाहे वह सुनने वाली आवाज़ हो, या लिखे हुए लफ़्ज़ों का पढ़ना हो! एक पैग़म्बर भी हमारी तरह का इंसान होता है, वह अपने कानों से आवाज़ को सुन सकता है और लिखे हुए लफ़्ज़ों को पढ़ सकता है, लेकिन ख़ुदा के तो कोई जिस्म नहीं है, वह न तो आवाज़ से बोलता है, और न हाथ से लिखता है, इसी सूरत में एक पैग़म्बर उस (ख़ुदा) से कैसे कह सुन सकता है?

चिर्रीः एक नबी अल्लाह से मुन्दर्जाज़ेल में से किसी भी तरीक़े से राब्ता कर सकता हैः

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

1- उसके ज़ेहन पर वही उतारी जा सकती है। अल्लाह उस पर रूहानी तौर पर कोई मख़सूस सच व हक़ ज़ाहिर कर सकता है, उसके ज़ेहन में उस सच व हक़ का इल्म देकर।

2- अल्लाह किसी भी मुँह से बोलने वाले से (अपने पैग़ाम को) इन लफ़्ज़ों को कहलवा कर, जिस तरह सबसे पहली वही, मूसा[अ०] पर नाज़िल हुई थी, और इसी तरीक़े से नाज़िल हुई थी कि उन्होंने अल्लाह के बोल को एक पेड़ से आते हुए सुना था।

3- एक पैग़म्बर खुला हुआ साफ़ पैग़ाम मिन जानिबिल्लाह ख़बर लाने वाले फ़रिश्ते के ज़रिये पा सकता है। हमारे पैग़म्बर मोहम्मद[स०] ने क़ुरआन पाक जिबरईल[अ०] फ़रिश्ते के ज़रिये पाया। क़ुरआन में हैः

(तर्जुमाः) ''और किसी (आदमी) के लिए यह मुमकिन नहीं है कि अल्लाह उस से बात करे, मगर यह कि वही के ज़रिये से या पर्दे के पीछे या कोई फ़रिश्ता भेज दे और फिर अपने बस से, जो वह चाहता है, वह पैग़ाम भेजता है, बेशक वह बड़ा ऊँचा और समझ वाला है।'' (सूरए शूरा, 42/51)

ऊपर तरीक़ों के अलावा, जिस से नबी अल्लाह से राब्ता क़ायम करते आए हैं, कोई भी तरीक़ा दूसरों के लिए नहीं है। ख़ुदा जिस तरह चाहे, अपने ख़ास बन्दों से राब्ता क़ायम कर सकता है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अलबत्ता जिन पर वही नाज़िल होती है, उनकी सलाहियत मुक़र्रर है। हमें मालूम है कि अपने को नबी कहने वालों की कुछ ख़ुसूसियत व सलाहियत होती हैं, जो उन्हें रूहानियत में तमाम इंसानों से ऊँचा बना देती हैं।

विल्सनः हिस्ट्री में कई ऐसे लोग मिलते हैं, जिन्होंने नुबुव्वत का दावा किया। यह लोग अलग-अलग वक़्तों में सामने आये, और इन में से बहुत से आज भी ज़िन्दा हैं। हमें मालूम है इनमें से कुछ तो सच्चे नबी हैं और कुछ झूठे। हम सच्चे और झूठे नबियों को कैसे पहचान सकते हैं?

चिर्रीः एक नबी अल्लाह का पयाम्बर (सन्देश लाने वाला) होता है। वह अल्लाह की तरफ़ से उसका दूत/सफ़ीर होता है। हर दूत के पास उसके बाक़ायदा दूत होने के दस्तावेज़ होने चाहिएं, और कुछ निशानियाँ, ताकि वह उसकी सच्चाई का पता लग सके। किसी को भी उसके दावे की वजह से दूत नहीं समझना चाहिए। इसलिए हम देखते हैं कि जिन लोगों ने उनके नबी होने पर यक़ीन किया, उन (नबियों) के पास अक़्ल समझ से परे कुछ पावर थी, जो दूसरों में नहीं पाई जाती थी।

मूसा[अ०] को अल्लाह ने पावर दी थी कि अपनी लाठी को साँप में बदल दें, पानी का ख़ून में और अपनी लाठी की मार से समन्दर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

को दो हिस्सों में बाँट दें। ईसा[अ०] को मोजिज़ा अता किया था वह बग़ैर दवा के मरीज़ों को अच्छा कर दें, अंधों को आँख वाला बना दें, मुर्दा को ज़िन्दा कर दें, और क़ुरआन पाक की रू से बच्चे झूले से लोगों से बात करने लगे। मोहम्मद[स०] को बात का अच्छा सलीक़ा दिया था, और क़ुरआन पाक दिया था, इस दावे के साथ अरबी ज़बान में इसकी जैसी एक आयत ही सही, पेश करो (अगर तुम कर सकते हो!)।

विल्सनः क्या नबी को (हम लोगों जैसा) इंसान होना चाहिए, या कि ख़ुदा एक ग़ैर इंसान की शक्ल में अपना पैग़म्बर भेज सकता है ?

चिर्रीः इंसानों के लिए पैग़म्बर एक मिसाली किरदार वाला होता है। उसे भी इन हुदूद में मिज़ाज व सलाहियत के साथ इंसान होना चाहिए, ताकि (उसकी ज़ात में) लोगों को एक मन भाता रोल माडल (नमूना) मिले। इसमें उसकी क़ाबलियत (योग्यता) होनी चाहिए कि वह लोगों को बताए हुए रास्ते पर चलने के लिए आमादा कर सके। अगर कोई नबी इंसान के अलावा किसी और नेचर वाला होगा, तो लोग उसके तअस्सी काम पर चलने (अपने में उसका किरदार उतारने) की कोशिश नहीं करेंगे। कर्म का एक ऐसा बेहतरीन नमूना, जिसका एक नबी (अपने किरदार से) ज़ाहिर करने वाला होता है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(ऐसा होना चाहिए कि) उस पर उसके मानने वाले अमल कर सकते हों। अगर कोई इंसान किसी ऊँचे दर्जे की उसूल वाली ज़िन्दगी को पेश करता है, तो हम भी इस मेयार तक पहुँचने की कोशिश करेंगे, क्योंकि वह और हम दोनों इंसान हैं, जो कुछ करना उसके लिए मुमकिन है, हमारे लिए भी मुमकिन है। लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता हमारे सामने ऊँचे दर्जे का किरदार पेश करे, तो हम शायद उसकी करनी पर चलने (अनुकरण) की कोशिश नहीं करेंगे, क्यों जो कुछ उसको करना है, हमारे लिए मुमकिन नहीं होगा, क्योंकि वह हमारे नेचर से मुख़्तलिफ़ ज़ात है। इसलिए इंसान (की रहबरी के) लिए पैग़म्बर तो इंसान ही में से होने चाहिएं। हम ने यह पेश कर दिया है कि पैग़म्बर को अपनी सच्चाई बतलाने के लिए कुछ अलग करके दिखाना होता है। इस तरह के काम की वजह से लोग समझ जाएंगे कि वह अल्लाह का भेजा हुआ नुमाइन्दा है, क्योंकि जो कुछ वह काम कर रहा है, किसी आम इंसान के लिए करना मुश्किल है। मगर यह बात कारगर नहीं हो सकती है, अगर वह (शक्ल व सूरत में) इंसान की जैसी नहीं है। मगर हम कह सकते हैं कि वह फ़रिश्ता न हो। मिसाल के तौर पर एक पैग़म्बर, जो इंसान के रूप में हो, अपनी सच्चाई को बग़ैर किसी मदद के आसमान की तरफ़ जा के, साबित कर सकता है। अगर कोई फ़रिश्ता ऐसा करे, तो यह बात उसके हक़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पर होने की दलील की तरह पेश न की जाएगी, क्योंकि यह उड़ान फ़रिश्ते की सलाहियत से बाहर नहीं है, क्योंकि इस पर ज़मीन की कशिश (Gravitation) असर नहीं डाल सकती।

विल्सनः अक़ीदों की रू से पैग़म्बरी पर ईमान रखने के मुताल्लिक़ इस्लामी अक़ीदा क्या है ?

चिर्रीः पैग़म्बरी पर अक़ीदे में इस्लाम की रू से ये बातें शामिल हैंः

1- मोहम्मद[स0] के पैग़म्बर होने पर ईमानः मोहम्मद उलुल अज़्म (बड़े) पैग़म्बर हैं, जिन्हें सिर्फ़ एक क़ौम की तरफ़ नहीं, बल्कि सारी इंसानियत (की रहबरी) के लिए भेजा गया है। क़ुरआन बयान करता हैः

(तर्जुमाः) ''(ऐ रसूल!) कह दीजिए कि मैं तुम सब के पास उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, जिसके लिए ख़ास सारे ज़मीन व आसमान की हुकूमत है। उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। वही ज़िन्दा करता है और वही मार डालता है, तो फिर अल्लाह और उसके रसूल नबी[स0] उम्मी पर ईमान लाओ, तो (ख़ुद भी) जो अल्लाह और उसकी बातों पर (दिल से) ईमान रखता है और उसके पीछे चलो (अनुकरण करो) ताकि तुम हिदायत (Guidance) पा जाओ।'' (सूरए आराफ़, 7/158)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

2- मोहम्मद[स0] से पहले जितने भी पैग़म्बर भेजे गये, उन सब पर ईमान रखनाः

(तर्जुमाः) ''और (ऐ मुसलमानो!) तुम यह कहो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाये और उस पर जो हम पर नाज़िल किया गया (क़ुरआन पाक) और जो (सहीफ़े/ग्रन्थ) इब्राहीम[अ0], इस्माईल[अ0], इस्हाक़[अ0], याक़ूब[अ0], याक़ूब[अ0] की औलाद पर नाज़िल हुए थे और जो (किताब) मूसा[अ0], ईसा[अ0] को दी गई और जो और नबियों को उनके रब की तरफ़ से उन्हें दिया गया है, उस पर। हम तो किसी (एक) में तफ़रीक़ (भेद) नहीं करते और हम तो (अल्लाह के) सच्चे मुसलमान (कहे पर चलने वाले) हैं।'' (सूरए बक़रा, 2/136)

3- इस पर ईमान कि मोहम्मद[स0] आख़िरी पैग़म्बर हैं, जिनकी वफ़ात के बाद पैग़म्बरी का सिलसिला टूट गया। क़ुरआन कहता हैः

(तर्जुमाः) ''(लोगो!) मोहम्मद[स0] तुम्हारे मर्दों में से (सचमुच) किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के रसूल और नबियों की मुहर यानी ख़त्म करने वाले हैं और अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब जानकार है।'' (सूरए अहज़ाब, 33/40)

लफ़्ज़ 'ख़ातम' के मायनी हैं मुहर के, जो किसी डब्बे को बन्द कर देता है, या वह मुहर (Seal), जिसका किसी दस्तावेज़ पर ठप्पा लगाने का मतलब होता है इस बात की गारंटी कि जो कुछ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

लिखा है और जो भी पैग़ाम है हक़ और सच है। (और हम जानते हैं कि मुहर) बात के आख़िर में उसके हक़ व सच होने के सुबूत के तौर पर लगाई जाती है।

पैग़म्बर[स०] ने अपने चचेरे भाई (वसी व जानशीन) अली[अ०] से फ़रमायाः

''तुम मेरे लिए वैसे हो, जैसे कि मूसा[अ०] के लिए हारून[अ०] थे, अलबत्ता मेरे बाद कोई नबी न होगा।''

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–12

पैग़म्बर मोहम्मद[स०]

विल्सनः हिस्ट्री हमें बताती है कि चालीस साल की उम्र में जब नबी[स०] हिरा खोह में इबादत करते थे, तो उन पर अल्लाह का नूर आया और उन्होंने हक़ सत्य की आवाज़ सुनी। उसी वक़्त से आप[स०] अल्लाह के पैग़म्बर ठहरे। हिरा खोह में मिले पैग़ाम ने आप[स०] को क्या बतलाया?

चिर्रीः हिरा के पैग़ाम ने नबी[स०] को अल्लाह के हक़ीक़ी गुणों के बारे में बतलाया। पैदा करने की सकत (Command), मिट्टी को इंसान में बदल देने, चीज़ों की ख़ुद अपने बारे में (ज़्यादा) महसूस कर लेना और दुनिया के बारे में! चीज़ों को ख़ुद अपने बारे में महसूस करने वाली बनाने की ताक़त को इंसान के इल्म ने साफ़ तौर पर पेश कर दिया है, और इसी तरह इंसान के लिखने की सलाहियत ने भी, जो दुनिया की तहज़ीब (सभ्यता) की बुनियाद है। क़ुरआन हमें बताता हैः

(तर्जुमाः) ''अंजीर और ज़ैतून की क़सम और तूरे सीनीन की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और इस अमन वाले शहर (मक्का) की, हम ने इंसान को बहुत अच्छे कैंडे का पैदा किया है। फिर हम ने उसे (बूढ़ा करके) निढाल से निढाल हालत की तरफ़ पलटा दिया है।'' (सूरए वत्तीन, 95/1-5)

विल्सनः सारे नबियों में मोहम्मद[स०] की क्या मंज़ेलत (स्थान) है ?

मोहम्मद[स०] का नबियों में क्या दर्जा है ?

चिर्रीः आप उलुल अज़्म (पक्के इरादे वाले यानी बड़े) नबियों के बीच खुली फ़ज़ीलतों (श्रेष्ठताओं) के साथ हैंः

1- आप[स०] दुनिया और मज़हबों की हिस्ट्री दोनों का हिस्सा हैं। आप[स०] का पैग़ाम एक अहम पैग़ाम है, जिसने दुनिया की हिस्ट्री को बदल के रख दिया। कोई भी हिस्टोरियन आप[स०] के (नूरानी) वुजूद और दुनिया के वाक़िओं में आप[स०] के किरदार का इनकार नहीं करता।

2- आप वह अकेले नबी हैं, जिन्होंने ख़ुद अपनी ज़िन्दगी में अपने दीन को फलते-फूलते देखा, यहाँ तक कि उसको एक पूरी क़ौम ने आप[स०] की ज़िन्दगी ही में अपना लिया।

3- आप[स०] वह भेजे हुए नबी हैं, जिन्हें किसी एक क़ौम, जैसे अरब या यहूदियों के लिए ही नहीं, बल्कि सारी इंसानियत के लिए भेजा गया। क़ुरआन का इरशाद हैः

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(तर्जुमाः) ''(पैग़म्बर[स०]!) आप (इन लोगों से) कह दीजिए कि मैं तुम सब के पास उस अल्लाह का भेजा हुआ बड़ा पैग़म्बर हूँ, जिसके लिए ख़ास ज़मीन व आसमान की बादशाही (राज) है। उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। वही ज़िन्दा करता है और वही मार डालता है, फिर तो (लोगों) ख़ुदा और उसके उम्मी नबी पर ईमान लाओ, जो (ख़ुद भी) अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान रखता है और उसी के क़दम बक़दम (पीछे) चलो कि इसी तरह तुम हिदायत (Guidance) पाओ।'' (सूरए आराफ़, 7/158)

4- आप[स०] के पैग़ाम ने साफ़ तौर से हर तरह के समाजी तास्सुब की मुख़ालिफ़त की। समाजी भेदभाव को मिटाना, आप[स०] के पैग़ाम का एक अहम जुज़ है। सफ़ेद, काला, लाल और पीला सब बराबर हैं। कोई भी नस्ल (Race) किसी दूसरी नस्ल से अच्छा नहीं है, कोई क़ौम किसी दूसरी क़ौम से कम नहीं है। इंसान की तारीफ़ या बुराई की जा सकती है, तो उसके उस काम पर, जो वह ख़ुद अपनी पसन्द से करता है। किसी क़ौम या नस्ल से लगाव ख़ुद हमारी पसन्द की वजह से नहीं होता, और न यह हमारा ख़ुद का बनाया है। हमें ख़ास स्थान अगर मिल सकता है, तो ख़ुद अपने अच्छे कामों की वजह से।

(तर्जुमाः) ''ऐ लोगो! हम ने तो तुम सब को एक मर्द और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

एक औरत से पैदा किया है और फिर हम ही ने तुम्हारे क़बीले और बिरादियाँ बनायीं, ताकि एक-दूसरे को पहचान सको। बेशक! अल्लाह के नज़दीक तुम सब में सबसे बड़ा इज़्ज़तदार (गणमान) वही है, जो बड़ा परहेज़गार (ख़ुदा से डरने वाला/संयमी) हो बेशक अल्लाह बड़ा जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।'' (सूरए हुजरात, 49/13)

5- आप[स०] ने ख़ुद अपनी ज़िन्दगी में एक मज़बूत और तगड़ी हुकूमत की बुनियाद रखी, जो ऊँचे उसूलों पर रखी गई थी। मुस्लिम हुकूमत उस वक़्त क़ायम हुई, जब यह नज़रिया था कि हुकूमत एक कमान्ड करने का अंग है, जो जनता से ऊँचा है, और जो उनकी पसन्द के बिना उन पर थोपी जाती है। जनता कभी भी अपने को राज करने वालों के बराबर नहीं समझती थी और न अपने बीच भी। जबकि इस्लामी तालीम में इन सब के ख़िलाफ़ हक़ है। हुकूमत लोगों के एक सोचे समझे रहबर उसूलों (Directive Principles) में विश्वास का फल है। यह उनके बाक़ायदा इन उसूलों को चलन में लाने के लिए उसूली मदद, सहयोग से उसूले हाज़ा की पैदा है। लिहाज़ा इस उसूल को आगे बढ़ाने वाले एक-दूसरे के लिए वास्ता होते हैं और ख़ुद से एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं, और एक जुट समझे जाते हैं।

6- आप[स०] ने अपने हर मुख़ालिफ़ को मात दी, और उन्हें किसी भी (आदमी और) पार्टी ने कभी भी नहीं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

7- आप[स०] नबी (अल्लाह के) हैं, जिन्होंने मज़हबी आज़ादी का एलान किया, इस हालत में कि जब वह इतने ताक़त वाले थे कि अगर चाहते तो बहुत सों को ऐसी आज़ादी से महरूम कर देते, जब कि उनको और उनके मानने वालों को तेरह साल तक तकलीफ़ें दी गई थीं। उनको कोसा जा रहा था (उन्होंने सब्र किया)। जब उन्होंने अपने सारे मुख़ालिफ़ों को मात दे दी, और अब वह अपने सताने वालों को सज़ा देने की ताक़त रखते थे, तो उन्होंने क़ुरआन की ज़बान में एलान कियाः

(तर्जुमाः) ''दीन में किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं क्योंकि हिदायत गुमराही (भटकने) से (अलग) ज़ाहिर हो चुकी है। तो जिस शख़्स ने झूटे ख़ुदाओं से इनकार किया और अल्लाह ही पर ईमान लाया, तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ ली है, जो टूट भी नहीं सकती और अल्लाह सब कुछ सुनता है और जानता भी है।'' (सूरए बक़रा/256)

8- आप[स०] अकेले वह नबी हैं जिन्होंने एलान किया कि वह ''पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ (आख़िरी काल के नबी)'' हैं। आप[स०] की वफ़ात के बाद नबियों के आने का सिलसिला बन्द हो गया। मोहम्मद[स०] के बाद कई लोगों ने नुबुव्वत का दावा किया, लेकिन उनमें से कोई भी अपने दावे का सुबूत पेश न कर सका। और अब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

आप[स०] की वफ़ात के बाद कई सदियाँ बीत जाने के बाद भी आप[स०] नुबुव्वत की हिस्ट्री के आख़िरी नबी हैं।

9- आप[स०] ने दुनिया में एक किताब को पहचनवाया, जिसमें एक लफ़्ज़ भी किसी इंसान का नहीं है। क़ुरआन इंसान और अल्लाह के बीच बातचीत की किताब नहीं है, जैसा कि दूसरी पाक किताबें (ग्रंथ) हैं। क़ुरआन में अल्लाह के बोल हैं, जिन्हें उसने आप[स०] के मुँह से अदा करवाए।

विल्सनः यह हक्का-बक्का करने वाली बात है कि मोहम्मद[स०] से पहले आने वाले नबी, मूसा[अ०] और ईसा[अ०] तो तवज्जो के क़ाबिल और मोजिज़ाती काम कर सकते थे, मगर मोहम्मद[स०] ने न तो कोई मोजिज़ा दिखलाया और न उनका सहारा लिया। उन्होंने तो अपनी नुबुव्वत के सुबूत के लिए क़ुरआन का सहारा लिया। उन्होंने मूसा[अ०] और ईसा[अ०] की तरह मोजिज़ों का सहारा क्यों न लिया?

चिर्रीः मोजिज़ों की हैअत के लिहाज़ से मोहम्मद[स०] के मोजिज़ों में और उन से पहले आने वाले दूसरे नबियों के मोजिज़ों में फ़र्क़ हैः

1- सच है कि मूसा[अ०] और ईसा[अ०] के मोजिज़े बहुत अहम थे, मगर यह भी सच है कि बावजूद इन (मोजिज़ों) के अहम होने के वह उस ज़माने के लोगों को न तो उन नबियों पर ईमान लाने पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

रिझा सके और न उनकी तालीम को मानने पर। हिस्ट्री हमें बताती है कि इस्राईलियों ने बावजूद मूसा[अ०] के मोजिज़े दिखलाने के, उन पर ईमान न लाया। (यहाँ तक कि) जब वह ख़ुद अपने पैरों से चलकर समन्दर में चले गये, तब भी उन्होंने हक़ीक़त में उनकी तालीम पर अमल न किया। जब वह (मूसा[अ०]) पहाड़ पर गये कि (ख़ुदा के) हुक्मों को लें, तो वापसी पर उन्होंने उनको ख़ुदा के रास्ता से हटा हुआ पाया। ईसा[अ०] को भीड़ की भीड़ ने अपनाया, मगर जब संकट आया, तो सब के सब यहाँ तक कि उनके हवारी (साथी) भी उन्हें छोड़ गये।

आमतौर से लोगों पर इन मोजिज़ाती बातों का असर ख़ुदाई तालीमात पर अमल करने के सिलसिले में कभी भी न हुआ। जब उन्होंने नेचर से परे की बातों को होते देखा, तो ज़्यादा लोगों ने कहा कि ऐसा कर दिखाने वाले जादूगर और करतबबाज़ हैं।

इसलिए अगर इसी तरह के मोजिज़े मोहम्मद[स०] के ज़माने में भी दोहराए जाते, तो इस से ज़्यादा कोई नतीजा न निकलता कि जितने इस तरह के मोजिज़े पिछले समय में रहे थे। इसलिए मोजिज़ों की सूरत को अब बदलना था।

2- फ़र्ज़ कीजिए कि मूसा[अ०] और ईसा[अ०] के मोजिज़े बहुत ज़्यादा नतीजा भरे थे, इतने कि उनको देखने वाले, उन्हें कर दिखाने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

वालों की सच्चाई को मान गये। मगर सच तो चल-चलाऊ तरह के थे, सदा होते रहने वाले न थे। (इस तरह का) कोई काम दोबारा नहीं देखा जा सकता है और न बहुत ज़्यादा देर तक बाक़ी रहने वाला होता है। अंधे को रौशनी दे देना, मुर्दे को ज़िन्दा कर देना एक बड़ा काम है, लेकिन जैसे यह काम होता है, हिस्ट्री बन जाता है। इसलिए जिन्होंने इसे होते नहीं देखा है, उन्हें उनकी गवाही पर भरोसा करना होता है, जिन्होंने इसे देखा था।

एक नबी, जिसके बाद दूसरा नबी आने वाला होता है, अपने ज़माने के दूसरों को क़ायल करके अपने बेहतरीन काम करने पर भरोसा हो सकता है। उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए परेशान नहीं होना चाहिए कि वह उसके मोजिज़ों को न देख पाएंगे, क्योंकि वह आगे के ज़माने के आने वाले नबी पर भरोसा कर सकते हैं। आने वाला नबी अपने मोजिज़े ख़ुद दिखायेगा, और अपने से पहले आने वाले नबी की सच्चाई के बारे में उन्हें बतायेगा।

मोहम्मद[स०] का मामला अलग है, वह आख़िरी नबी थे, वह किसी मोजिज़े वाले काम पर भरोसा न कर सकते थे, क्योंकि कोई भी मोजिज़ा इतना टिकने वाला नहीं होता कि उसे आने वाली पीढ़ी भी देख सकें। और न तो वह अपने बाद आने वाले नबी पर अपने बारे में उसके बताने (तस्दीक़) पर टिका रह सकता है, क्योंकि वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तो आख़िरी नबी है। उसे किसी ऐसे मोजिज़े पर भरोसा करना था, ऐसा मोजिज़ा, जो पहले वाले मोजिज़ों से अलग हो। ऐसा मोजिज़ा (जो सदा के लिए हो और) जिसे आने वाली पीढ़ियाँ देख और परख सकें और उसके ज़माने की पीढ़ियाँ भी।

एक ऐसे ज़माने में, जबकि न कैमरा था और न फ़िल्में, ताकि किसी काम को कई बार देखा जा सके, हम किसी टिकाऊ मोजिज़े पर भरोसा नहीं कर सकते, मगर बयान के मोजिज़े पर। जब एक बयान बहुत ही ऊँचे दर्जे का हो और किताब में लिखा हो, तो उसका ऊँचा मेयार कभी भी किसी पीढ़ी के हाथों किसी भी ज़माने में (पढ़ कर) देखा (समझा) और परखा जा सकता है। अगर वह लाजवाब है, तो वह अटल और टिका रहेगा। और उसका ऊँचा मेयार पीढ़ी-पीढ़ी परखा जा सकता है। इसी तरह मोजिज़ा का ख़ातमुन्नबिय्यीन (आख़िरी नबी) की शान को खपता है, और इसी लिए मोहम्मद[स०] को उनकी सच्चाई साबित करने के लिए क़ुरआन पाक दिया गया है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–13

कुछ और सुबूत उन (मोहम्मद[स०]) की पैग़म्बरी के और क़ुरआन की मुस्तक़बिल (Future) के बारे में ख़बर

विल्सनः अरबी बोलने वाले लोगों के क़ुरआन की अज़मत बयान करने और उसकी सराहना की वजह से मैं इसके ऊँचे होने पर यक़ीन करता हूँ। हक़ीक़त तो यह है कि हिस्ट्री किसी भी गिरोह की तरफ़ से किसी ऐसे कामयाब इक़दाम को क़लमबन्द नहीं करती है, जो क़ुरआन की बराबरी के लिए किया गया हो। हम जानते हैं कि कभी भी हर अरबी जानने वाला मुसलमान न था। हम यह भी जानते हैं कि क़ुरआन मोहम्मद[स०] की ज़बानी बहुत ही अच्छे बयान और मायने से भरपूर था और यह भी जानते हैं कि अरबों में ज़्यादा तर सख़्ती के साथ इस्लाम के मुख़ालिफ़ थे। क़ुरआन ने उन्हें और उनके बाद की पीढ़ियों को चैलेंज किया कि वह उसके बराबर की (आयतें) लाएं, मगर हमें मालूम है कि इसके मुख़ालिफ़ों ने कभी भी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और किसी वक़्त भी इस चैलेंज को क़ुबूल नहीं किया।

इसमें कोई शक नहीं कि क़ुरआन का सबसे ऊँचा और श्रेष्ठ होना एक हक़ीक़त है। मगर मैं यह जानना चाहूँगा कि क्या क़ुरआन के पास अपनी इस बात और बयान के ख़ूबसूरत अन्दाज़ के साथ, जो इस (क़ुरआन) के ख़ुदा की ओर से वही के रूप में नाज़िल होने और मोहम्मद[स०] के अल्लाह के सच्चा नबी होने की दलील है, कुछ और भी है?

चिर्री: क़ुरआन में एक से ज़्यादा पेशीनगोईयाँ बाद के समय से जुड़ी हैं, और वह पूरी भी हो गई हैं। आने वाले ज़माने का इल्म तो अल्लाह को है, यह किसी इंसान के बस का काम नहीं है।

आज इंसान साइंस और टेक्नॉलोजी में बहुत तरक़्क़ी कर चुका है, ऐसी तरक़्क़ी कि जिसे पहले ख़्वाब में भी न देखा गया था। इल्म में बावजूद इसकी सारी तरक़्क़ी के वह अब भी बाद के ज़माने के बारे में सही अन्दाज़ा नहीं लगा पाता है। दुनिया की तहज़ीब वाली क़ौमें एक-दूसरे के ख़िलाफ़ जंग थोपती हैं, जबकि किसी के लिए भी जीत मख़सूस नहीं है। अगर उन्हें बाद के ज़माने का इल्म होता, तो वह नास करने वाली जंग से दूर रहते। जो मुल्क अपनी हार को जानता, वह जंग से परहेज़ करता। इंसान के अपने फ़्युचर का इल्म न रखने को मान लेने के लिए हमें इलेक्शन पर नज़र करना चाहिए

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि इन सारी बातों के इल्म के बावजूद, जो हमें साइंसी तरीक़े और मीडिया से मिलती हैं, कोई भी उम्मीदवार अपनी जीत पर पूरा यक़ीन नहीं रखता है और इसी तरह अपनी हार पर भी, जब तक कि वोटों की गिनती न हो जाए।

क़ुरआन पाक में बहुत ज़्यादा तरह-तरह की जानकारियाँ मौजूद हैं, आने वाले ज़माने के बारे में भी, जिनको बताना किसी इंसान के लिए मुमकिन नहीं है। उनमें से बहुत सी पूरी हो चुकी हैं, और यह बात हमें बताती है कि क़ुरआन सच्चा और वही वाला है और यह कि मोहम्मद[स०] अल्लाह के सच्चे रसूल[स०] हैं।

और इन पेशीनगोईयों में से कुछ क़ुरआन पाक के फ़्युचर के बारे में हैंः उनमें से कुछ यह हैंः

(तर्जुमाः) ''हम (अल्लाह) ने ही इस क़ुरआन को नाज़िल किया और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।'' (सूरए हिज्र, 15/9)

यह आयत हमें बताती है कि क़ुरआन न तो कभी मिटेगा और न ग़ायब होगा इस जहाँ से, बल्कि वह हमेशा मौजूद रहेगा और जारी व सारी।

यह पेशीनगोई दरअस्ल इसके उरअक्स थी, जिसकी इंसान उम्मीद कर सकता है। क़ुरआन से लोगों को एक नबी[स०] ने पहचान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

करायी थी, जिसने तो मदरसे से तालीम भी हासिल न की थी... आप[स०] ने (अरबी ज़बान में नाज़िल होने वाले) क़ुरआन को एक अनपढ़ क़ौम को (उनकी ज़बान में) पेश किया। नबी[स०] के दौर में अरबों के लीडर भी थे। इसके अलावा इस क़ौम के बहुत से लोग नबी[स०] और उन (पर उतारी गई) किताब के मुख़ालिफ़ थे और इसी तरह सारी दुनिया भी। इन हालात में इस किताब को अनजान हो जाना और मिट जाना चाहिए था। इसके पीढ़ी के बाद पीढ़ वुजूद में रहने के मौक़े (बज़ाहिर) और भी कम थे।

2- यह आयत वाज़ेह करती हैः

(तर्जुमाः) बेशक! जिन लोगों ने नसीहत (क़ुरआन) को जब वह उनके पास आई न माना वह अपना नतीजा देख लेंगे और यह एक ऊँचे मर्तबे की किताब है कि झूटन तो इसके आगे ही फटक सकता है न इसके पीछे से और ख़ूबियों वाले समझ वाले (अल्लाह) के यहाँ की नाज़िल हुई है।'' (सूरए फ़ुस्सिलत, 41/41-42)

यह आयत दुनिया को बताती है कि क़ुरआन के मायनी व मतलब को सिर्फ़ इन लफ़्ज़ों में नहीं बयान किया जा सकता है, जो वही से पहले बयान के लिए इस्तेमाल में आते थे, और इन लफ़्ज़ों में भी नहीं कि जो बाद में वही उतरने के सिलसिले से ही इस्तेमाल होते हैं, कि यह पाक है, और हमेशा रहेगा (मतलब यह है कि लफ़्ज़ों को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तो समझना ही है, मगर इस से ज़्यादा ज़रूरी है इनके मायनी व मतलब को समझना और ज़िन्दगी को क़ुरआन के हुक्मों के हिसाब से ढालना)।

यह भी एक पेशीनगोई थी, बरख़िलाफ़ किसी इंसान के इस ख़याल के कि जिसकी उम्मीद हो कि एक किताब, जो इन हालात में (दुनिया के सामने) पेश की गई, जिनका हम ने ज़िक्र किया है, वह (ऐसी थी कि) बग़ैर कुछ घटाए बढ़ाए बाक़ी रहेगी।

क़ुरआन नाज़िल होने के वक़्त छापा ख़ाना वुजूद में न था, और न छापने वाली मशीन ही ईजाद हुई थी, जो मोहम्मद[स०] के सैकड़ों साल बाद वुजूद में आई।

हिस्ट्री हमें बताती है कि कोई भी मज़हबी किताब बग़ैर कुछ घटाए-बढ़ाए अपनी असल हालत पर रह न सकी। कई सदियों में मज़हबी किताबों में कई फेरबदल होते आ रहे हैं। क़ुरआन को भी ऐसे में अलग क्यों कर रहता (मगर रहा क्योंकि):

दो पेशीनगोईयाँ पूरी तरह से साबित हुईः पहली का होना ख़ुद से ज़ाहिर है। क़ुरआन न मिटा, वह मौजूद रहा (और वह भी इस तरह से कि) एक बहुत ही ज़िन्दा किताब बनकर। दरअस्ल क़ुरआन की ज़िन्दगी इतनी चमकती है कि वह दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब है। हर मुसलमान को दिन में पाँच बार

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नमाज़ पढ़ना होता है, और नमाज़ (की हर रकात) में क़ुरआन से किसी सूरह को अदा किया जाता है, करोड़ों मुसलमान अपनी नमाज़ को रोज़ाना अदा करते हैं, और इस हिसाब से क़ुरआन की रोज़ (और हर वक़्त) तिलावत होती है।

दूसरी पेशीनगोई का पूरा होना भी वाज़ेह है कि क़ुरआन पाक आज भी बग़ैर किसी उलटफेर के मौजूद है। इसमें कोई लफ़्ज़ भी इंसान की तरफ़ बढ़ाया या घटाया न जा सका है, यहाँ तक कि इस्लाम के मुख़ालिफ़ भी इस महान किताब के टेक्स्ट (Text) के असल होने की बात मानते हैं। दरअस्ल क़ुरआन के लफ़्ज़, जिनकी हम आज तिलावत कर रहे हैं, वही हैं, जिनकी तिलावत हमारे नबी मोहम्मद[स०] ने की थी, बग़ैर किसी लफ़्ज़ को घटाए या बढ़ाए हुए।

3- क़ुरआन पाक में कई बयान ऐसे हैं कि जिनकी रू से इस्लाम के मुख़ालिफ़ों से किसी ऐसे बयान के अरबी ज़बान में पेश करने को कहा गया है कि जिनके बयान का पल्ला क़ुरआन के बयान के बराबर हो। इस तरह का एक सवाल यह हैः

(तर्जुमाः) (ऐ रसूल[स०]!) आप[स०] कह दीजिए कि इंसान और जिन्नात सब इस बात पर इकटठे हों कि इस क़ुरआन का जैसा ले आएं, तो (नामुमकिन) इसके बराबर नहीं ला सकते, चाहे (इस कोशिश में) एक का एक मददगार भी बने।'' (सूरए असरा, 17/88)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

यह बयान न सिर्फ़ इंसान जाति को क़ुरआन में मौजूद बोल और बयान के बराबर के बोल तक़ारीर व बयान को बना के लाने की बात करता है, बल्कि यह भी एलान करता है कि इस तरह की कोशिश कभी भी कामयाब नहीं हो सकती, और यह कि क़ुरआन पाक अरबी में हर (लेख व) बोल से कहीं ऊँचा ही रहेगा।

यह बयान बड़ी दूर की बात करता है। यह हमें बताता है कि क़ुरआन पाक के पल्ले की कोई किताब कभी भी न होगी, न आज और न आने वाले कल में। यह कहना दरअस्ल एक ग़ैर मामूली क़िस्म की पेशीनगोई है, जबकि हम जानते हैं कि इंसान के इल्म व समझ और महारत वक़्त के साथ बढ़ती रहती हैं। और यह कि ऐसा कहना इल्म की हर शाखा और समझ की हर तरह के बारे में सही है। कोई भी साइंसी ईजाद, बग़ैर इस ख़याल के कि वह कितनी न्यारी और फ़ायदे की है, हर वक़्त नये इल्म और तकनीक के साथ-साथ बेहतरी की तरफ़ जाती रहती है। वह पहला हवाई जहाज़, जो ज़मीन में उड़ा था, बेशक देखने के क़ाबिल था, मगर वह आज किसी भी जहाज़ से मुक़ाबला नहीं कर सकता।

हमें फ़र्ज़ कर लेने दीजिए कि पहले पहल ईजाद करने वाले ही ने कहा था कि आने वाले दिनों में कोई हवाई जहाज़ इस हवाई जहाज़ का मुक़ाबला न कर सकेगा। इस तरह का बयान बहुत ही

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बेवक़ूफ़ी का होगा, क्योंकि एक दहाई में ही इसका यह दावा ग़लत ठहर जाएगा, क्योंकि ऐसा कहना इंसान के नेचर के ख़िलाफ़ होगा। मोहम्मद[स०] ने इस तरह का एक दावा फ़रमाया, जो आम तरह के ख़िलाफ़ था। उन्होंने इन लफ़्ज़ों को 14 सौ (से ज़ायद) बरसों पहले कहा था, लेकिन वह लफ़्ज़ आज भी जवाब चाहते हैं, और दुनिया के वाक़िए उनको ग़लत साबित न कर पाए हैं। इसके ख़िलाफ़ यह बयान आज और भी मायनों भरा हो गया है, यह पेशीनगोई जितनी पुरानी होती जाएगी, उतनी ही सच्चाई से छलकती जाएगी। इस पेशीनगोई में एक और दिलचस्प प्वाइंट है, और वह यह है कि यह एक ख़ास मैदान, जिस तक हर कोई नहीं पहुँच सकता, के लोगों को जैसे किसी ख़ास साइंसी मैदान के लोगों को चैलेंज करने के मायनी में भी लिया जा सकता है।

हम साइंस के एक ऊँचे दर्जे के माहिर का तसव्वुर कर सकते हैं, जिसने किसी ऐसे अहम साइंसी सच का पता लगा लिया हो, जो दूसरे साइंसी माहिर नहीं जानते थे। अब अगर यह अपने को हमेशा के लिए ईजाद में सबसे अच्छा और अहम ख़याल करता है, तो वह दरअस्ल एक महदूद मैंदान (इल्म) में कुछ ही लोगों को चैलेंज करने वाला समझा जाएगा।

क़ुरआन की बात इन सब से अलग है... इसके बयान में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

लफ़्ज़ और जुमले इस्तेमाल हुए हैं, समझ में आ जाने के क़ाबिल अन्दाज़ में, जिसका इल्म सिर्फ़ कुछ अरबों ही को नहीं है, बल्कि सारे अरबी बोलने वालों को है। इसमें कोई ऐसा राज़ नहीं, जो दूसरे सभी (अरबी न जानने वाले) लोगों से छुपा हुआ है। यह सारे का सारा (कुरआन) सबको मालूम है। इसका चैलेंज कुछ ख़ास लोगों ही को नहीं है, बल्कि सब लोगों को आगे आने वाली पीढ़ियों समेत सबको है। यह युनिवर्सल चैलेंज, जो सिर्फ़ माहिरों के किसी टुकड़े ही से नहीं किया गया है, बल्कि हर एक से है (आज भी और कल भी) और तब भी इसके मिस्ल (एक आयत ही सही) का न बना पाना कितना अहम व वाज़ेह है बनिस्बत इसके कि अपने-अपने मैदान के कुछ माहिर ऐसा करने से बेबस रहें।

यह बात और भी मायनी की हो जाती है, क्योंकि अब तक कोई साइंसी मालूमात और ईजाद बग़ैर अपना मिस्ल पैदा किये हुए दुनिया में नहीं रही है। इस (उन्नीस्वीं) सदी का सबसे बड़ा (कारनामा और) राज़ ऐटम बम का था, यह इस सदी की सबसे बड़ी रिसर्च और ईजाद सा था। इसकी बड़ी अहमियत के बावजूद इसका चैलेंज सिर्फ़ इस मुल्क तक सिमटा न रह सका, जिसने इसको ईजाद किया था। इसलिए कि दूसरे देशों ने (भी) इसे बनाना चाहा और बना भी लिया।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कुरआन पाक अरबी बातचीत का सबसे ऊँचा और अरबी ज़बान वाले लोगों की पहुँच से ऊँचा मोजिज़ा है? इंसान ने इसके चैलेंज को किस वजह से कुबूल न किया?

कुरआन हक़ीक़त में सबसे ऊँचा और सच में किसी भी पीढ़ी के ज़हीन तरीन अफ़राद या गिरोह की दस्तरस से बाहर (और आला) है (इसके मायनी यह हुए कि कुरआन एक मोजिज़े वाली किताब है), जो अपने मिस्ल (जोड़) के बग़ैर (हमारे दरमियान) मौजूद है (और हमेशा मौजूद रहेगा)।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-14

और गवाहियाँः

इस्लाम के आने वाले दिनों की बात

विल्सनः इस्लाम की हिस्ट्री देखने से ऐसा ज़ाहिर होता है कि इस नये अक़ीदे और इसके मानने वालों का फ़्यूचर वही के नाज़िल होते रहने के बावजूद उसी ज़माने में भी यक़ीनी नहीं था। बाद में इस्लाम की कामयाबी और इसके मानने वालों की तादाद में बढ़ोतरी जो हुई उसकी उम्मीद नहीं की जा सकती थी। मैं कभी-कभी इस पर ताज्जुब करता हूँ कि क्या इस्लाम की उम्मीद के ख़िलाफ़ तेज़ी के साथ कामयाबी का पैग़म्बर[स०] ने शुरु ही से अन्दाज़ा कर लिया था और क्या क़ुरआन ने इसकी कामयाबी का पहले ही एलान कर दिया था ?

आने वाले ज़माने में इसके कामयाब होने का एलान मोहम्मद[स०] की सच्चाई की क़ायल करने वाली दलील होगी, क्योंकि (पहली) वही के आने के बाद आने वाले ज़माने में इस अक़ीदे का हाल तो बहुत ही कमज़ोर (और ग़ैर यक़ीनी) नज़र आ रहा था।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चिर्रीः इस्लाम और इसके मानने वालों की आगे आने वाले दिनों में (कामयाबी) के बारे में क़ुरआन पाक में हैः

(तर्जुमाः)''तुम में से जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किये उन से ख़ुदा ने वादा किया है कि उन्हें (एक न एक दिन) रुए ज़मीन पर ज़रूर (अपना) ख़लीफ़ा बनाएगा, जिस तरह इन से पहले वालों को बनाया है और जिस दीन को उनके लिए पसन्द किया है उस पर उन्हें ज़रूर-ज़रूर क़ुदरत (Power) देगा और उनके ख़ौफ़ के बाद (उनके डर) को अमन में बदल देगा कि वह (इतमिनान से) मेरी ही इबादत करेंगे और किसी को तरह हमारा शरीक (साझी) न बना लेंगे और इसके बाद भी नाशुक्री करे, तो ऐसे ही लोग बदकिरदार (बुरे चरित्र वाले) हैं।'' (सूरए नूर, 24/55)

जब यह आयत नाज़िल हुई थी, तो उस वक़्त हिजाज़ में इस्लाम के मानने वाले बहुत ही कम थे। यह (वही) हिजरत के पाँचवें साल के आसपास नाज़िल हुई थी। उस वक़्त मुसलमानों की हिजाज़ में संख्या कुछ हज़ार थी, जिनकी हिजाज़ और अरब प्रायःद्वीप में रहने वाले सब लोग सख़्त मुख़ालिफ़त कर रहे थे। उस वक़्त किसी भी मुसलमान को अपने बचने का यक़ीन न था, और न तो वह अपने दीन पर आज़ादी के साथ चल सकता था। उस वक़्त यह बताना मुश्किल था कि इतनी नफ़रत और इस से सख़्ती के साथ की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

गई जंग के बावजूद यह बहुत कम लोग बाक़ी बचेंगे कि नहीं? और न तो आगे आने वाले दिनों में इस नये दीन के हाल के बारे में किसी इंसान का बता पाना मुमकिन था। मगर बावजूद इन सारी सच्चाईयों के बिना किसी शर्त के (अगर-मगर के) पक्की अटल वही नाज़िल हुई।

इन आयतों में और भी बशारतें मौजूद हैं, जिनमें इस्लाम की जीत और इसके मुख़ालिफ़ीन की हार की पेशीनगोई की की गई हैः

(तर्जुमाः) ''यह लोग चाहते हैं कि अपने मुँह से (फूँक मार कर) ख़ुदा के नूर को बुझा दें, और ख़ुदा इसके अलावा कुछ मानता ही नहीं कि वह अपने नूर को पूरा करके ही रहे, चाहे काफ़िर (लोग) बुरा मानें।'' (सूरए तौबा, 9/32)

(तर्जुमाः) ''यह लोग अपने मुँह से फूँक मार कर ख़ुदा के नूर को बुझाना चाहते हैं हालाँकि ख़ुदा अपने नूर को पूरा करके रहेगा, चाहे काफ़िर (लोग) बुरा ही क्यों न मानें।'' (सूरए सफ़्फ़, 61/8)

(तर्जुमाः) ''वही तो (वह ख़ुदा) है जिसने अपने रसूल[स०] (मुहम्मद[स०]) को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा, ताकि अपने इस (दीन) को तमाम दीनों पर ग़ालिब (वर) करे, चाहे मुश्रिक (ख़ुदा का साझी मानने वाले लोग) बुरा मानें।'' (सूरए तौबा, 9/33)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(तर्जुमाः) ''वह (अल्लाह) वही है जिसने अपने रसूल[स०] को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा, ताकि उसे और तमाम दीनों पर ग़ालिब (वर) करे, चाहे मुश्रिक (लोग) बुरा ही (क्यों न) मानें।'' (सूरए सफ़्फ़, 61/9)

(तर्जुमाः) ''वह (अल्लाह) वही तो है जिसने अपने रसूल[स०] को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसको सभी दीनों पर ग़ालिब (सर्वोपरि) रखे और गवाही के लिए तो बस अल्लाह ही काफ़ी है।'' (सूरए फ़तह, 48/28)

ऊपर वाली पहली आयत यह एलान कर रही है कि इस्लाम के मुख़ालिफ़ लोग अल्लाह के नूर को बुझाने में कभी भी कामयाब न होंगे, और न उनकी (मुख़ालिफ़त भरी) जंग इसके फ़ैलने को रोक पाएगी। अल्लाह अपने नूर, इस्लाम,को पूरा कर दिखायेगा, बावजूद इसके कि उसके मुख़ालिफ़ कड़ाई के साथ उसकी मुख़ालिफ़त करेंगे। वह यह ठान कर कि इस्लाम को न फैलने देंगे चाहे बहस करें या जंग करें और अपनी ज़ेहन और शरीर की ताक़त को इस्तेमाल करते हुए (चाहे जितनी भी) इस्लाम की मुख़ालिफ़त कर लें, मगर वह इसके नूर को न तो बुझा पाएंगे और न इसके पूरा होने को रोक पाएंगे।

ऊपर की दोनों आयतें आगे आने वाले दिनों में अपने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुख़ालिफ़ों पर इस्लाम की यक़ीनी और बिना शर्त के फ़तह का एलान कर रही हैं।

जब यह वही नाज़िल हुई, तो उस ज़माने में मुसलमानों की छोटी सी जमाअत मुश्रिकों और अरब के दूसरे हमला करने वालों के मुक़ाबले में अपने बचाव में लगी थी। फिर इसके बाद उन्हें ईरान और Byzantine राज से बचाव करने में मशग़ूल होना पड़ा।

यह दोनों ताक़तें मुस्लिम हुकूमत के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा ताक़त वाली और अमीर थीं। ईरान और की Byzantine के राज दुनिया की मानी जानी ताक़तें थीं। इन दोनों को मात देना, दुनिया की जानी मानी ताक़तों को मात देने के बराबर था, इसके बावजूद मुसलमानों का एक बेहतरीन आलमी ताक़त बनकर उभरना, इस पेशीनगोई के मायनी व मतालिब के पूरे करने को मुकम्मल तौर पर ज़ाहिर कर देगी, हालांकि बज़ाहिर यह नामुमकिन था। हम आमतौर पर छोटी और कमज़ोर फ़ौज की हार पर यक़ीन रखते हैं, जबकि वह एक से ज़्यादा जगहों पर और एक से ज़्यादा बड़ी ताक़तों से लड़ाई होती है। यह बात और भी साफ़ हो जाती है, जब हम ताक़तवर जर्मनी की फ़ौज की बीसवीं सदी में (एक नहीं) दो बार हार को याद करते हैं, जो सिर्फ़ इस वजह से हुई कि उसने अपने साथियों के साथ एक से ज़्यादा मोर्चों पर जंग की थी।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हिस्ट्री में याद करने के क़ाबिल मिलेट्री का यह एक अहम वाक़िआ हो सकता है, क्योंकि मक्का और मदीने के रहने वाले, जिन की गिनती कुछ हज़ार से ज़्यादा न थी, बदअक़ीदा अरबों के मुक़ाबले में अज़ीम नबी[स०] की वफ़ात के बाद अपना बचाव कर सके। इन दोनों शहरों में रहने वाले मुसलमानों के अलावा वफ़ाते नबी[स०] के बाद सभी अरब लोग बदअक़ीदा हो गए थे।

इसके बाद सारी मुस्लिम उम्मत को Byzantine और ईरानी राज से जंग पर मजबूर किया गया। इन दोनों बड़ी हुकूमतों ने दो अलग-अलग मोर्चों पर मुसलमानों से एक ही वक़्त में जंग की। मुसलमानों को अपनी कम तादाद फ़ौज को दो हिस्सों में बाँट कर बचावी (Defensive) जंग को जारी रखना पड़ा। इसका नतीजा ताज्जुब भरा मिलेट्री का कारनामा था। दो बड़ी ताक़तें मिट गईं और ईरान को भरपूर हार मिली। एक सौ साल के अन्दर, वह बड़ा इलाक़ा जो अटलांटिक सागर से हिन्दुस्तान तक फैला हुआ था, इस्लामी हुकूमत के अधीन (Under) आ गया। जो इस आगे ज़ाहिर होने वाले वाक़िओं की ख़बर से अनजान थे, यकायक दुनिया की बड़ी ताक़त बनकर उभरे।

नबी[स०] ने आसमानी इत्तेला पर भरोसा करते हुए इस कामयाबी की इत्तेला अपनी वफ़ात से क़ब्ल दे दी थी। अदी पुत्र

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हातिम (ईसाईयों का एक रहबर, जिसने बाद में इस्लाम को गले लगाया) से मोहम्मद[स०] नबी (अल्लाह) ने यह फ़रमायाः

“तुम इस्लाम की तरफ़ राग़िब नहीं हो” मोहम्मद[स०] ने फ़रमाया, “क्योंकि तुम हमें ग़रीब पाते हो। वह वक़्त क़रीब है कि जब सच्चे ईमान वालों के पास बहुत दौलत होगी, इतनी कि समझ में न आएगा कि उसका क्या करें? शायद तुम्हारे लिए (इस अम्र में) यह माने है कि तुम उनके दुश्मनों की तादाद के मुक़ाबले में उन मुसलमानों की कम तादाद को देख रहो हो? क़सम अल्लाह की कि कुछ दिनों के बाद एक मुसलमान औरत अपने ऊँट पर सवार होकर बग़ैर किसी डर के हज करेगी, अकेले बग़ैर किसी ख़ौफ़ के क़ादसिया (इराक़ी इलाक़ा) से अल्लाह के घर तक मक्का में। शायद तुम यह समझते हो कि ताक़त तो कफ़िरों के हाथों में है, यह समझ लो कि वह वक़्त दूर नहीं है कि जब हम बेबलोनिया (बाबिल) के क़िले पर अपना परचमे सफ़ेद अलम (झण्डा) लगा देंगे।”[1]

---

[1] वाशिंगटन इर्विंग, लाइफ़ आफ़ मोहम्मद[स०] (अंग्रेज़ी) चैप्टर-32

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-15

पैग़म्बर[स०] और (उनकी) पैग़म्बरी की पेशीनगोई

विल्सनः अब तक हम ने क़ुरआन से दो तरह के बयानों, आगे आने वाले दिनों की ख़बर पर, जिनमें से एक क़ुरआन से मुताल्लिक़ है और दूसरी ख़ुद इस्लाम से वाबस्ता है, गुफ़्तुगू की है। क्या क़ुरआन ख़ुद नबी[स०] के मुस्तक़बिल (Future) के बारे में कोई पेशीनगोई करता है?

चिर्रीः क़ुरआन पाक में एक बहुत ही साफ़ ख़बर मौजूद है, जो नबी मोहम्मद[स०] के (ख़तरों से) महफ़ूज़ रहने के मुताल्लिक़ हैः

(तर्जुमाः) ''हम ने बनी इस्राईल से वचन लिया और उनके पास बहुत से रसूल भी भेजे थे (इस पर भी) जब उनके पास कोई रसूल उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हुक्म लेकर आया, तो उन (कमबख़्त) लोगों ने किसी को झुटला दिया और किसी को क़त्ल ही कर डाला।'' (सूरए माएदा, 5/70)

यह आयत नबी मोहम्मद[स०] को सारे इंसानों से हो सकने वाले

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़तरों से पूरी हिफ़ाज़त का वादा करती है। कोई इंसानी ताक़त, इस एलान के मुताबिक़, मोहम्मद[स०] की जान को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकती है। नबी[स०] के मैदाने जंग में मारे जाने या फिर उनके क़त्ल कर दिये जाने की कोई भी ख़बर ग़लत होगी, और नुबुव्वत की शाने के ख़िलाफ़ भी।

जिन हालात में नबी[स०] ज़िन्दा रहे, उस पस मन्ज़र में यह पहले एलान इंसान की तवक़्क़ो के ख़िलाफ़ है। जब से इस्लाम का आम एलान हुआ, नबी[स०] क़ौमी दुश्मन के रूबरू रहे, उन्हें मक्का वालों के अकेले दुश्मन की तरह देखा गया। उनकी ज़िन्दगी ख़तरों से दोचार थी, वह बराबर ख़तरात में घिरे रहे, वह भी कई साल तक बग़ैर किसी जिस्मानी हिफ़ाज़त के। जब उनके मुहाफ़िज़ अबू तालिब का इन्तेक़ाल हो गया, तो उन्हें कोई वक़्ती मुहाफ़िज़ भी न मिला, इन पाक रौज़ों में अपने पैग़ाम को ज़ायरीन तक पहुँचाने में।

(मुख़ालिफ़ों में) मशहूर सरदारों ने तय करके यह क़सम खाई कि वह आप -मोहम्मद[स०]- को ढूँढ निकालेंगे और उन्हें क़त्ल कर देंगे। और अगर बच निकले, तो उन्हें ज़िन्दा गिरफ़्तार करके या मुर्दा लाने पर एक बड़े इनाम का एलान हुआ। मदीना जाने से क़ब्ल मोहम्मद[स०] की ज़िन्दगी को बिल्कुल से ख़त्म कर देने और इस्लाम को भी ख़त्म कर देने (के चर्चे थे), हालांकि उस वक़्त वह बमिस्ल एक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

किरण था।

(नबी[स०] के) मदीने आने के बाद जंगें शुरु हुईं और (अब) मुसलमान खुली हुई हमला करने वाली जंग से दोचार थे, जिनमें हमेशा थोड़े से लोग उनके साथ थे। मक्का के रहने वाले वालों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ रेगिस्तानी क़बीलों को लाकर खड़ा किया। इसके अलावा ग़ैर अरब मुल्कों के हुकमरान भी मोहम्मद[स०] के इन लफ़्ज़ों की वजह से बड़े ग़ुस्से में थे, जिनको कहकर आप[स०] उनको इस्लाम क़ुबूल करने का न्यौता दे रहे थे।

इन के नमूने के तौर पर नीचे उनका वह पैग़ाम लिखा है, जिसे आप[स०] ने Byzantine के सम्राट हरकूलिस (Heraclius) को भेजा थाः

''बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीमः मोहम्मद इब्ने (सुपुत्र) अब्दुल्लाह, रसूलुल्लाह[स०] की तरफ़ से (यह ख़त है) हरकूलिस की तरफ़ (कि) रूमियों में (से) अज़ीम है। बिला शुबह! मैं तुम को इस्लाम की तरफ़ बुलावा देता हूँ। मुसलमान हो जाओ, और तुम महफ़ूज़ रहोगे। अल्लाह तुम को दो इनाम देगा। और अगर तुम फिर जाओ, तो तुम पर तुम्हारी प्रजा का (भी) बोझ आन पड़ेगा। ऐ किताब वालो! एक अच्छे लगते लफ़्ज़ पर आपस में आन मिलो, और वह यह है कि हम सिवाए अल्लाह के किसी और की इबादत नहीं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

करेंगे, और हम किसी को भी उसका साझी न मानेंगे, और हम एक-दूसरे का किसी को भी हुक्मराँ तसव्वुर न करेंगे, मगर सिवाए सारी ताक़त वाले (सर्वशक्तिमान) अल्लाह के। और अगर वह फिर जायें, तो कहनाः गवाह रहना, हम मुसलमान हैं।''[2]

इन सारे ख़तरों के बावजूद, जिनमें नबी[स०] घिरे हुए थे, वह आम (आदमी की तरह) ज़िन्दगी बसर करते थे। उनका कोई जिस्मानी मुहाफ़िज़ (बाडी गार्ड) न था, जंगों में मौजूद रहे, कभी-कभी तो सब से आगे वालों के साथ-साथ। वह अंधेरा हो जाने के बाद भी सड़कों पर चलते थे, और बग़ैर सिक्यूरिटी के घर में रहते थे। उनके क़त्ल किये जाने के कई मौक़े आए, और कई बार (उन्हें क़त्ल करने की) कोशिश भी की गई, उनमें से कुछ बार की गई कोशिशों को हम यहाँ बयान करेंगे, जिनको हम ने रुनुमा होने वाले कई वाक़िओं से लिया और समझा हैः

आप[स०] एक दिन अपने ख़ेमे से थोड़ी दूर, एक पेड़ की जड़ के पास अकेले सो रहे थे, कि आप[स०] एक शोर की वजह से जाग गए, और यह देखिये कि उन्होंने दरसूर, एक दुश्मन लड़ाकू को देखा कि वह उनके पास खड़ा था, नंगी तलवार अपने हाथ में लियेः ''ऐ मोहम्मद[स०]!'' उसने चिल्ला के कहा। ''तुम्हें यहाँ कौन बचायेगा?''।

---

[2] मोहम्मद हुसैन हैकल, लाइफ़ ऑफ़ प्रॉफ़ेट मोहम्मद, तीसरा एडिशन/371

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

''अल्लाह'' नबी[स०] ने जवाब दिया। किसी नामालूम वजह से दरसूर ने तलवार को (हाथ से छोड़ कर) नीचे गिरा दिया, जिसे नबी[स०] ने फ़ौरन उठा लिया। तलवार को चलाते हुए, अब उन्होंने फ़रमायाः ''कौन है यहाँ, जो तुम्हें बचायेगा, ऐ दरसूर?'', ''अफ़सोस कि कोई नहीं'' उस सिपाही ने जवाब दिया। ''तो तुम मुझ से रहम करना सीख लो''। यह कहकर आप[स०] ने उसकी तलवार उसे वापस कर दी। सिपाही के दिल पर इसका असर हुआ। उसने मोहम्मद[स०] के सच्चे नबी होने का एतेराफ़ किया और अक़ीदे (इस्लाम) को क़ुबूल किया।[3]

एक और मौक़े पर, मोहम्मद[स०] अपने कुछ मानने वालों के साथ एक ग़ैर मुस्लिम क़बीले से मिलने गये। खाना बाहर एक क़बीले के सरदार के महल के सामने पकाया जा रहा था। नबी[स०] को मालूम था कि उन्हें धोखा देकर ज़ालिमाना तौर पर यहाँ लाया गया है और यह कि (मआज़ल्लाह) जब वह खाना खाने बैठेंगे, तो उन्हें क़त्ल कर दिया जाएगा। यह कहा जाता है कि उन्हें एक घर के कोठे के बरामदे से चक्की का एक पत्थर फेंक कर दबाकर ज़ख़्मी कर दिया जाएगा। इसलिए इस बात को उन लोगों के बताए बग़ैर आप[स०] ने जल्दी से उन लोगों का साथ छोड़ा और तेज़ी के साथ मदीने की तरफ़ रवाना

[3] वाशिंगटन अरोंग, लाइफ़ ऑफ़ मोहम्मदस०, बाब-18

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हो गये।[4]

एक बार नहीं बल्कि कई बार मोहम्मद[स०] मैदाने जंग में अकेले छोड़ दिये गये, जबकि उनके साथ जिहाद करने वालों ने हज़ारों मुश्रिकों के दरमियान उन्हें छोड़ दिया। इन मौक़ों पर वह इस्लाम दुश्मन फ़ौजों का निशाना बने, और बड़े ख़तरों में घिरे रहे।

अगर मोहम्मद[स०] एक झूठ को आगे बढ़ा रहे होते, तो वह यह न कहते, जैसा कि उन्होंने कहा कि उनको हर-हर ख़तरे से बचा लिया जाएगा कि वह अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहेंगे, जैसा कि हुआ भी।

विल्सनः क्या क़ुरआन आमतौर से नुबुव्वत के मुस्तक़बिल के बारे में भी कुछ जानकारियाँ फ़राहम करता है?

चिर्रीः यह एलान कि जो मोहम्मद[स०] के आख़िरी नबी होने की बात बताता है, खुली हुई और साफ़ इत्तेला है नुबुव्वत के मुस्तक़बिल के बारे में।

(तर्जुमाः) ''मोहम्मद[स०] तुम्हारे मर्दों में से (हक़ीक़त में) किसी के बाप नहीं हैं बल्कि वह अल्लाह के रसूल और नबियों की मोहर (यानी ख़त्म करने वाले) हैं और अल्लाह तो हर चीज़ का ख़ूब जानने वाला है।'' (सूरए अहज़ाब, 33/40)

---

[4] ऐज़न, बाब-21

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

लफ़्ज़ 'ख़ातम' जैसा कि वारिद हुआ है, के मायनी एक मोहर के हैं, जो किसी चीज़ को बन्द कर देता है, या फिर यह वह मोहर होती है, जिसे किसी दस्तावेज़ या पैग़ाम पर लगा करके उनमें दर्ज बातों के हक़ व सच होने की तस्दीक़ की जाती है। किसी चीज़ को बन्द करने या किसी बात की तस्दीक़ करने का मरहला तो उस वक़्त आता है, जब किसी चीज़ को आख़िर में बन्द किया जाता है, या फिर किसी बात की तस्दीक़ की जाती है।

मोहम्मद नबी[स०] ने अपने चचाज़ाद भाई अली[अ०] से फ़रमायाः "तुम्हारी मंज़िलत (स्थान) मेरे नज़दीक वैसी है जैसी मूसा से हारून[अ०] की, सिवाय इसके कि मेरे बाद कोई नबी न होगा।"

इस बात का एलान कि मोहम्मद[स०] नबियों में आख़िरी नबी हैं, दरअस्ल दूर तलक नुबुव्वत के फ़्युचर की इत्तेला है। यह बात हमें इस की इत्तेला करती है कि मोहम्मद[स०] की वफ़ात के बाद दुनिया किसी और नबी को न देखेगी, और यह कि मोहम्मद[स०] के बाद अल्लाह इंसानियत के लिए अब किसी रसूल को मबऊस न करेगा (भेजेगा)। इस तरह नबियों के मबऊस किये जाने की लम्बे समय की हिस्ट्री बाद वफ़ाते मोहम्मद[स०] रुक जाएगी।

यह पेशीनगोई बिल्कुल उम्मीद के ख़िलाफ़ सिम्त में है। हमें तो अल्लाह से यह उम्मीद करना चाहिए कि वह इंसान जाति के लिए

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नबियों को भेजता रहे। उसने मोहम्मद[स०] से पहले बहुत से नबियों को मबऊस किया, और आमतौर से हमें तो उस से यह उम्मीद रखना चाहिए कि वह मोहम्मद[स०] की वफ़ात के बाद भी नबियों को मबऊस करता रहेगा। मोहम्मद[स०] से क़ब्ल नस्ले इंसान इलाही पैग़ाम का इतना हक़ नहीं रखती थी, जितना कि उनके बाद की नस्लों को है। दरअस्ल नये ज़माने में माद्दियत (Materialism) मोहम्मद[स०] से क़ब्ल के दौर से कहीं ज़्यादा है! इसलिए एक रूहानी पैग़ाम की ज़रूरत नये ज़माने में पिछले दौर से कहीं ज़्यादा है।

इस ज़माने में कारणों की गुत्थी को सुलझाना इंसान के इल्म से परे है। कोई भी इंसान यह जानने से बेबस है कि अल्लाह किसी तरह यह तय करता है कि वह इंसानों के लिए नबी को मबऊस करे। इसका इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए ख़ास है।

विल्सनः एक असर वाली पेशगोई आमतौर से किसी ख़ास वाक़िए से, जो एक तय वक़्त पर होगा, ताल्लुक़ रखती है। जो मालूमात कोई मख़्सूस आयत समोए हुए होती है, वह किसी ख़ास वाक़िए से, जो किसी ख़ास वक़्त में ज़ाहिर होगा, ताल्लुक़ नहीं रखती है। यह हमें ऐसा कुछ नहीं बताती है कि जो होगा। यह एक मन्फ़ी (Negative) इत्तेला है कि जो हमें बताती है मोहम्मद[स०] के बाद कोई नबी न आएगा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चिर्रीः एक मुस्बत (Positive) इत्तेला देना बमुक़ाबला मन्फ़ी इत्तेला देने के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा आसान है। आईये! हम इत्तेला की एक मिसाल देकर कि जो बजाए मुस्तक़बिल (Future) के पिछले दिनों से सरोकार रखती है, इसको वाज़ेह करें। यह कहना कहीं ज़्यादा आसान है कि मिस्टर स्मिथ ने एक मोटर गाड़ी चलाई बनिस्बत इसके कि यह कहा जाए कि मिस्टर जॉनसन ने कभी भी मोटर गाड़ी नहीं चलाई। मुस्बत बात में सच्चा होने के लिए यह ज़रूरी है कि उसने मिस्टर स्मिथ को कम से कम एक बार मोटर गाड़ी चलाते हुए देखा हो। और सच्चाई के साथ यह कहने में कि मिस्टर जॉनसन ने कभी भी मोटर गाड़ी नहीं चलाई, कहने वाले को मिस्टर जॉनसन के बीते दिनों की सब इत्तेला होनी चाहिएं।

हम अब मुस्तक़बिल की इत्तेला पर गुफ़्तुगू करेंगे। हम यह कह सकते हैं कि आने वाले पचास साल में डेट्रॉयट (Detroit) के लोगों में से एक ज़हीन तरीन साइंसदाँ पैदा होगा। ऐसा कहना बनिस्बत यह कहने कि कि डेट्रॉयट (Detroit) के लोगों में से आइन्दा इस साल कोई भी साइंसदाँ नहीं पैदा होगा, ज़्यादा आसान है। इन मालूमात के लिए यह ज़रूरी है कि उन लाखों लोगों के मुताल्लिक़ मालूमात हों, जो उस दौरान में डेट्रॉयट में रहते होंगे। दरअस्ल इस तरह की मालूमात हासिल करना हमारी दस्तरस से बाहर होगा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अब फ़र्ज़ कीजिए कि हम एक बड़ी पेशीनगोई करते हैंः हम यह कहें कि अमेरिका में या फिर पूरी दुनिया में आइन्दा पचास साल में कोई भी बड़ा साइंसदाँ नहीं पैदा होगा। इस तरह की बात कहना ज़ाहिर में बेकार होगा। अगर हम पेशीनगोई करें कि इस तरह का कोई भी साइंसदाँ दुनिया में कभी भी पैदा न होगा, तो हमारी पेशीनगोई बेकार की बात ख़ुद से ज़ाहिर होगी।

इस तरह का नबी मोहम्मद[स०] के आख़िरुज़्ज़माँ (आख़िरी) नबी होने का एलान है, कि यह बात सिर्फ़ महदूद मुस्तक़बिल (Future) से वाबस्ता नहीं है, बल्कि यह तमाम दुनिया के ग़ैर महदूद मुस्तक़बिल से वाबस्ता है। दरअस्ल यहाँ 'तमाम दुनिया' कहना हमें यह मतलब बताता है कि मोहम्मद[स०] के बाद मोहम्मद[स०] जैसा कोई दूसरा नबी दुनिया में न आएगा, यहाँ तक दुनिया ख़त्म हो जाएगी। मोहम्मद[स०] ख़ुद भी ऐसा ही जानते थे। यह पेशीनगोई ख़ुद उनकी अपनी नहीं थी। यह तो उस एक अकेले का वादा है कि जो सारी इंसानियत के मुस्तक़बिल से वाक़िफ़ है।

आइन्दा का यह बयान साबित करेगा कि, कि दुनिया ने पिछले चौदह सौ साल में कोई भी नबी मबऊस होते नहीं देखा।

विल्सनः मोहम्मद[स०] के बाद बहुत से लोगों ने नुबुव्वत का दावा किया, जिनमें से कुछ तो उस सदी में मौजूद थे, और अब भी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़िन्दा बाक़ी हैं। क्या उनका दावा नुबुव्वत के सच पर असर अन्दाज़ नहीं होता ?

चिर्रीः नुबुव्वत के दावे के कुछ मायनी नहीं हैं, और यह पेशबीनी (Prophesy) की सच्चाई पर कोई असर नहीं डाल पायेंगे, जब तक इस तरह का दावा साबित न हो जाए। यह सच है कि सैकड़ों ने अपनी नुबुव्वत का दावा किया, उनमें से कुछ तो ख़ुद नबी मोहम्मद[स०] के ज़माने में ज़िन्दा थे। और यह भी सच है कि उनमें से कोई भी अपनी नुबुव्वत को साबित न कर सका। उनमें से ज़्यादा तर झुठलाए गए और उनका दावा उनकी मौत के साथ अपनी मौत आप मर गया। उनके दावे का झुठलाया जाना ख़ुद ही सुबूत है सच्चाई का और उसके पूरा होने की दलील भी है।

विल्सनः पिछले तेरह (चौदह) सौ साल में नुबुव्वत का न होना, नुबुव्वत के ख़त्म होने की कोई पक्की दलील नहीं है। पिछले ज़माने में (नबी से) ऐसे ख़ाली होना इसकी दलील तो नहीं है कि अब आगे आने वाले दिनों में नबी न आएंगे ? अगर आगे आने वाले दिनों में कोई रसूल आया, तो उसका आना, (न आने के) एलान की 'नहीं' करेगा।

चिर्रीः ख़ुद मोहम्मद[स०] के ज़माने में नुबुव्वत के आख़िरी होने की कोई गारण्टी न थी, क्योंकि दूसरे नबियों का आना कहीं ज़्यादा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुमकिन था, और ऐसा ही रहा नबी[स०] की वफ़ात के कई सदियों बाद तक। मगर वफ़ाते नबी[स०] के हज़ार साल गुज़र जाने के बाद नये पैग़म्बरों के आने की बात मद्धम पड़ गयी। मोहम्मद[स०] के बाद नबियों के आने के दरमियान का वक़्फ़ा कभी एक हज़ार साल या सात सौ साल से ज़्यादा न रहा। मूसा[अ०] और इब्राहीम[अ०] के आने के के बीच का वक़्त क़रीब-क़रीब चार सौ साल था। मूसा[अ०] और ईसा[अ०] के दरमियान के वक़्फ़े में सैकड़ों कामयाब नबी मबऊस हो गए। मोहम्मद[स०] और ईसा[अ०] के आने के दरमियानी वक़्फ़ा छः सौ साल का भी न था।

नबियों के आने की हमेशा ज़रूरत रही है। हज़ार साल के वक़्फ़े के बीच दो नबियों का आना बावजूद नस्ले इंसान को Guidance की ज़रूरत के, एक बहुत ही ग़ैर मामूली बात है। यह एक बड़े वक़्फ़े और मोहम्मद[स०] नबी के आख़िर में आने के और इतने लम्बे वक़्फ़े में नबियों के न आने के बीच ताल्लुक़ बहुत ही वाज़ेह है। तेरह सौ साल से ज़्यादा गुज़र जाने के बाद भी पेशीगोई की सच्चाई तो और भी साफ़ हो गयी है। यह जितनी पुरानी होती जाएगी, इसकी सच्चाई भी उतनी ही साफ़ होती जाएगी। कि इस एलान की सच्चाई हर शक के मरहले से कामयाबी के साथ गुज़र चुकी है। अब आगे किसी नबी के आने की गुन्जाइश ही कहाँ है (कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

आख़िरी नबी आ चुका, और दीन पूरा हो चुका)[5]।

विल्सनः मैं आप से एकराय हूँ कि हालाँकि नये नबियों का आना मुमकिन तो है, मगर अब इसकी गुन्जाइश पहले से बहुत कम है, और यह कि ऐसा आगे के दिनों में होना मुमकिन नहीं है। मगर मैं नुबुव्वत के आख़िर होने की वजह के बारे में जानना चाहूँगा, (क्योंकि) इंसानियत को आज भी इस नये ज़माने में मोहम्मद[स०] नबी की वफ़ात के बार रहबरी की ज़रूरत है। माद्दियत परवान चढ़ रही है, इसलिए इंसान को पहले से ज़्यादा रहबरी की ज़रूरत है।

चिर्रीः मुझे तो नुबुव्वत के ख़त्म की असल वजह मालूम नहीं है। इसकी वजह मोहम्मद[स०] नबी की नुबुव्वत का पूरी दुनिया के लिए होना हो सकती है, क्योंकि इन से पहले तमाम नबी[अ०] किसी ख़ास जुट या क़ौम की तरफ़ भेजे गये थे, तमाम इस्राईली नबी यहूदियों की तरफ़ भेजे गये थे। उनमें से कोई भी पूरी इंसान जाति के लिए मबऊस न किया गया था। यहाँ तक कि हज़रत ईसा[अ०] के लिए इंजील कहती हैः

''मैं तो इस्राईल शहर के गुमशुदा भीड़ के लिए भेजा गया हूँ।''

सिर्फ़ मोहम्मद[स०] पूरी दुनिया के नबी की हैसियत से मबऊस

---

[5] इज़ाफ़ी जुमला अज़ मुतर्जिम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुए, जिन्हें किसी क़ौम या मुल्क के लिए नहीं, बल्कि सारी इंसान जाति के लिए मबऊस किया गया। क़ुरआन का एलान हैः

(तर्जुमाः) ''पैग़म्बर! (आप स०) कह दीजिए कि ऐ लोगो! बेशक मैं तुम सब लोगों के पास उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, जिसके लिए ख़ास सारे आसमान और ज़मीन की बादशाही (हुकूमत) है। उसके अलावा कोई इलाह (ईश्वर/भगवान) नहीं है। वही ज़िन्दा करता है और वही मार डालता है। फिर तो अल्लाह और उसके रसूल नबी उम्मी पर ईमान लाओ, जो अल्लाह और उसकी बातों पर (दिल से) ईमान रखता है, और उसी के क़दम बक़दम (पीछे) कि तुम हिदायत पाओ।'' (सूरए आराफ़, 7/158)

सारे संसार पर छाने के साथ, नुबुव्वत अपने आख़िरी दर्जे को पहुँच गयी थी, इसलिए उसे यही रुकना था। इसका पैग़ाम सारी इंसान जाति के लिए है। अब इंसानियत रूहानी रहबरी में कोई कमी नहीं पाती। यह भी कि रूहानी रहबर सरदार हर मुल्क और हर आदमी के लिए होता है। इंसान जाति को किसी नई रहबरी की अब ज़रूरत नहीं है, बल्कि ज़रूरत है मौजूद (और चलती) रहबरी को 'हाँ' कहने (मान लेने) की।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-16

ईसाई मज़हब की फ़तह की पेशीनगोई

विल्सनः मैंने कुरआन के सूरे-30 में मौजूद कुछ आयतों पर अकसर ताज्जुब महसूस किया है। यह रूमियों के फ़्यूचर के बारे में ज़िक्र करती हैं और उनके मुख़ालिफ़ों पर उनकी जीत की पेशीनगोई करती हैः-

(तर्जुमाः) "अलिफ़ लॉम मीम। (यहाँ से) बहुत क़रीब के देश में रूम के (ईसाई फ़ारस/ईरान के आग की पूजा करने वालों से) हार गये, मगर यह लोग (बहुत जल्द ही) अपने हार जाने के बाद कुछ बरसों में फिर (फ़ारस वालों पर ग़ालिब आ जाएंगे)। क्योंकि पहले और बाद (ग़रज़ हर ज़माने में) हर बात का इख़्तियार अल्लाह ही का है और उस दिन ईमान रखने वाले ख़ुश हो जाएंगे। वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वह (सब पर) ग़ालिब (भी) है और रहम करने वाला (भी) है। यह अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया करता है मगर अकसर लोग (यह) नहीं जानते।" (सूरए रूम, 30/1-6)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इन आयतों से मालूम होता है कि इनमें एक बहुत ही साफ़ पेशीनगोई है। मैं आप से इसकी वज़ाहत चाहूँगा, क्योंकि मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि क्या यह पेशीनगोई पूरी हो गई ?

चिर्रीः सातवीं सदी की पहली दहाई में, उस वक़्त की दो बड़ी ताक़तों –फ़ारस और Byzantine– की हुकूमतों के बीच जंग शुरु हो गयी, और बीस साल से ज़्यादा अरसे तक चलती रही, और फ़ारस वाले ज़्यादातर जीत पाते रहे। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका (Encyclopaedia Britainica) सूरते हाल को इस तरह बयान करती हैः

''फ़ारस की फ़ौज ने सीरिया और ऐशिया को चित करके रौंद डाला, और 608 (ईस्वी) में चलेडों की तरफ़ बढ़ गये। 613 (ईस्वी) और 614 ईस्वी में दमिश्क़ और यरोश्लम पर जनरल शहाबूराज़ ने क़ब्ज़ा कर लिया। और फ़तह के बाद वह मुक़द्दस सलीब को अपने साथ ले गये। (और) इसके जल्द ही बाद मिस्र पर भी फ़तह हासिल की। रूमी (Byzantine राज के लोगों) ने मुक़ाबला तो किया, मगर कमज़ोरी के साथ, कि वह अन्दर से बटे हुए थे, और अवरस (Avars) सलोस से दबे हुए थे।

क़ुरआन पाक से, जिन आयतों को ऊपर बयान किया है, वह मोहम्मद[स०] पर नाज़िल होने वाली पहली वही के छः या सात साल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बाद नाज़िल हुई थीं (इसके मायनी यह हुए कि यह आयतें 615 ईस्वी या 616 ईस्वी में नाज़िल हुई थीं)। जो पेशीनगोई उन में मौजूद है, वह पक्की और बिना शर्त के है। यह इसको बयान करती है कि बर्बाद हुए रूमी इन आयतों के नाज़िल होने के बाद 9 साल के अन्दर फ़ारस वालों पर अचूक जीत हासिल करेंगे।

इस तरह एक बार फिर पेशीनगोई झगड़े के उम्मीद के नतीजे के उलटी ओर की गयी थी। अब यह उम्मीद करना थी कि रूमी बुरी तरह हार जाएंगे, क्योंकि फ़ारस वाले लड़ाकू क़ुस्तुन्तुनिया (Constantinpole) के दरवाज़े तक पहुँच चुके थे। उस वक़्त रूमी सरदारों को भी देर से भी जीत की उम्मीद कम थी।

रूमी सरदार बावजूद अपनी पूरी मिलेट्री महारत और जंग के मुताल्लिक़ मालूमात के अपनी फ़तह की उम्मीद न कर सके। मोहम्मद[स०] को भी साफ़ इत्तेला हासिल न थीं, क्योंकि उस वक़्त रेडियो, टेलीवीज़न, मीडिया और चालू डाकख़ाने का निज़ाम मौजूद न थे। मोहम्मद[स०] ने जो क़ुस्तुन्तुनिया से बहुत दूर मक्का में रहते थे, एक मुद्दत के बाद जीत के हासिल हो जाने की पेशीनगोई की।

यह पेशीनगोई किये जाने के नौ साल बाद नतीजा निकला। हरकूलिस, रूमी शहंशाह अंज़की मियांजी तक आन पहुँचा, जहाँ उसने गोंडज़क (Gondzak) के आग के बड़े मन्दिर को बर्बाद कर डाला,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और फिर उसके बाद सन् 623 ईस्वी में उसने अपनी खोई हुई सारी ज़मीन वापस ले ली।

विल्सनः ऊपर वाली आयतें जिनका हवाला दिया गया, यह बताती हैं कि मुसलमान फ़ारस वालों के हाथों रूमियों की हार की ताक में थे। ऐसा लगता है कि यह पेशीनगोई मुसलमानों के दुख में दिलासे के तौर पर नाज़िल हुई थी, क्योंकि यह बयान करती है कि इस्लाम में अक़ीदा रखने वाले रूमियों की फ़तह पर ख़ुशी मनाएंगे।

दरअस्ल यह मुसलमानों की ईसाईयों से सच्ची मोहब्बत की घोषणा (Declaration) है।

चिर्रीः आपका बयान सच है। मुसलमान उस वक़्त ईसाईयों की हार की ख़बर की वजह से बहुत दिलजले थे। ईसाई (नाज़िल हुई) पाक किताब के मानने वाले हैं, और मुसलमान भी नई पाक किताब, क़ुरआन के मानने वाले हैं। दोनों के अक़ीदे बहुत सी बातों में एक हैं। इसी लिए मुसलमानों ने सोचा कि उनके और ईसाईयों के बीच बहुत क़रीबी लगाव है, उन्होंने सोचा कि ईसाई मज़हब के मामले में उनके भाई हैं।

रूमियों की हार बुत पूजा करने वालों के लिए एक ख़ुश आने वाले ख़बर थी। वह ईसाईयों की हार पर ख़ुश हुए, और उन्होंने ईसाईयों को मुसलमानों के ख़ाने में रखा, यानी अपने दुश्मन के साथ,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

क्योंकि मुसलमान और ईसाई दोनों आसमानी किताबों के मानने वाले हैं, दोनों बुत पूजा के मुख़ालिफ़ हैं।

मुसलमानों और ईसाईयों के ताल्लुक़ात क़ुदरती तौर पर हैं। अगर ईसाईयों ने खुले दिल से मोहम्मद[स०] और हक़ व सच को मान लिया होता, जैसा कि मुसलमानों ने ईसा[अ०] के सच पर होने को तस्लीम कर लिया है, तो दोनों अक़ीदों के मानने वालों के बीच भाईचारा बन जाता और बना रहता। बदक़िस्मती से ईसाईयों ने मोहम्मद[स०] के नबी होने और उनके हक़ व सच को क़ुबूल करने से इनकार कर दिया। यह बात, और फिर पैग़म्बर[स०] की वफ़ात के बाद रुनुमा होने वाले वाक़िआत की वजह से मुसलमानों और ईसाईयों के बीच क़ुदरती माहौल में फ़र्क़ आ गया।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–17

कुछ और गवाहियाँः

नामालूम सच्चाइयों का खुलना

विल्सनः क्या मुक़द्दस क़ुरआन में कोई इस तरह की मालूमात हैं जो उन सच्चाईयों से मुताल्लिक़ हैं, जो हमें इस साइंसी दौर में मालूम हुई हैं, जिन्हें दुनिया मोहम्मद[स०] के दौर में नहीं जानती थी? इस तरह की मालूमात, अगर हों, तो वह मोहम्मद[स०] की नुबुव्वत की और भी दलील होंगी। एक बे पढ़े लिखे शख़्स के लिए, जैसे कि मोहम्मद[स०] थे, और जो सातवीं सदी में ज़िन्दगी बसर कर रहा हो, यह नामुमकिन है कि वह उन बातों को जानता हो, जिन्हें आज कल के साइंसदाँ ने खोज निकाला है। इस तरह की कोई मालूमात एक फ़ैसला करने वाली दलील होगी, इस्लाम के पैग़ाम के ठीक होने की।

चिर्रीः क़ुरआन पढ़ने वाले इसमें एक से ज़्यादा हवाले पाएंगे, जो मुख़्तलिफ़ साइंसी सच्चाइयों का इशारा करते हैं, और जिनमें से कुछ का तो आज के ज़माने में पता भी लग गया है, और कुछ का पता चलने की उम्मीद है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नई साइंस पता लगा रही है, जैसा कि यक़ीनी तो नहीं पर दूसरे सैय्यारों (Planets) पर भी हमारे अपनी ज़मीन के अलावा ज़िन्दा मख़्लूक़ मौजूद है। आज के ज़माने के साइंसदानों को दूसरे सैय्यारों पर, बायोलॉजिकी (Biological) ज़िन्दगी के वुजूद का यक़ीन नहीं है, मगर वह कहते हैं कि ज़्यादा झुकाव इस ओर कि ऐसा ही हो!

दरअस्ल सच्चाई तो यह है कि जैसा कि एक रूसी साइंसदाँ ने दावा किया है कि उसने स्पेस से सिगनल (Signal) सुने हैं, और यह ख़याल किया है कि यह सिगनल (इशारे) ज़िन्दा जानों की तरफ़ से है, जो किसी दूसरे सैय्यारे में मौजूद हैं। साइंसदाँ आने वाले दिनों क़रीब में जल्द या देर हमारे सैय्यारे के ज़िन्दों के अलावा दूसरे सैय्यारों पर ज़िन्दों को ढूँढ निकालेंगे और उन से मुलाक़ात भी करेंगे।

हम इस साइंसी दौर में जो पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं, वह सब क़ुरआन पाक ने तेरह सौ साल से ज़्यादा पहले बता दिया हैः

(तर्जुमाः) ''और उसी की (क़ुदरत) की निशानियों में से ज़मीन व आसमान का पैदा करना और उन जानदारों का भी जो उसने ज़मीन आसमान में फैला रखे हैं और वह जब चाहे उन सबको जमा कर लेने पर भी क़ादिर (सकत क़ुदरत रखने वाला) है।''

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(सूरए शूरा, 42/29)

ऊपर वाली आयतें हमें बायोलॉजिकी ज़िन्दों के होने का पता देती है, जो अपने पैरों पर आसमानों में और ज़मीन में चलते हैं। यह मुमकिन है कि जो लोग हमारे इस सैय्यारे में मौजूद हों, वह आसमानों में मौजूद लोगों से एक दिन जा मिलें।

हमारे नए ज़माने की एक साइंसी खोज सैय्यारों और हमारी दुनिया में सेक्स (Sex) का होना है। साइंसदाँ कहते हैं कि गरदह (Pollen Grain) सेलों (Cells) से बना है, जिसमें क्रोमोज़ोम (Chromosome) की तादाद कम होती है। उनमें से दो सेल मर्द के होते हैं। नस्ल बढ़ने में काम करने के लिए गरदह (Pollen) को किसी फूल पर जा गिरना ज़रूरी है और इस तरह उसके नीचे एक नली है, जो और दूसरे रेशों के ज़रिये बैज़ों (अन्डों) तक पहुँच जाती है। मर्द के दोनों सेल इस निचली नली के ज़रिये, उमूमन जहाँ उसका उभरता हुआ बिन्दू सा होता है, उनमें से एक अन्डे को पहुँचा देता है और दोनों सेलों को मिलाकर एक परवान चढ़ता है। और मर्द का दूसरा सेल बैज़े के पास दूसरे दो सेल से जा मिलता है।

पौधों में भी 'नर' और 'मादा' का होना नई साइंस की तरक़्क़ी से पहले बिल्कुल पता नहीं था। लेकिन क़ुरआन ने पौधों में 'नर' और 'मादा' के होने का ज़िक्र किया हैः

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(तर्जुमाः) ''(वह हर खोट, बुराई से) पाक साफ़ है जिसने ज़मीन से उगने वाली चीज़ों और ख़ुद उनके लोगों और उन चीज़ों के, जिनकी उन्हें ख़बर नहीं, सबके जोड़े पैदा किये।'' (सूरए यासीन, 36/36)

मोहम्मद[स०] के ज़माने में किसी को स्पेस के हाल के बारे में कुछ नहीं मालूम था। लोगों का ख़याल था कि आदमी जितना आसमान की तरफ़ उठता जाएगा, उतनी ही ज़्यादा हवा उसे मिलेगी और वह उतनी ही ज़्यादा साँस ले सकेगा। मगर हमें अब मालूम हुआ कि स्पेस में हवा का वुजूद नहीं है। और यह भी कि अगर कोई आसमान की तरफ़ चला जाए तो उसे ऑक्सीजन (Oxygen) न मिलेगी और उसका दम घुट जाएगा।

क़ुरआन पाक इस हक़ीक़त को यह कहकर साफ़ तौर से बयान करता हैः

(तर्जुमाः) ''तो अल्लाह जिस शख़्स को सीधा रास्ता दिखलाना चाहता है, उसके सीने को इस्लाम (की दौलत) के लिए (साफ़) कुशादा (खोल कर देता है) और फैला देता है और जिसको गुमराही की हालत (बहकता) में छोड़ना चाहता है, उसके सीने को ऐसा तंग कर (सिकोड़) देता है, और कठोर कर देता है जैसे उसके लिए आसमान पर चढ़ना है। जो लोग ईमान नहीं लाते ख़ुदा पर उन पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बुराई को उसी तरह मुसल्लत कर (लाद) देता है।'' (सूरए अनआम, 6/125)

किसी शख़्स के सीने की सिकुड़न से, जबकि वह आसमान की तरफ़ ऊपर चढ़ रहा होगा मतलब यह होता है कि वह साँस लेने में अपने को बेबस पाता है, जो स्पेस के मुताल्लिक़ उस तसव्वुर के ख़िलाफ़ है कि जो मोहम्मद[स०] के ज़माने में था, (यानी जितना ऊपर जाओगे, ज़्यादा साँस लोगे, ज़्यादा हवा पाओगे)।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-18

इंजील (बाइबिल) मोहम्मद^{स०} की तस्दीक़ करती है

विल्सनः वह सुबूत, जिस पर हम ने बात की, दलीलों के साथ है कि वह मोहम्मद[स०] के नबी होने पर (बहस करने वाले को) क़ायल कर देता है। इस सच के साथ में क़ुरआन की बातों का ऊँचा ख़ुद एक बुनियादी सुबूत है, इस सच व हक़ का। इसके अलावा कई पेशीनगोईयाँ भी। मुझे नहीं मालूम कि नई व पुरानी इंजील में नबी -मोहम्मद[स०]- के मुताल्लिक़ कोई पेशीनगोई मौजूद है?

चिर्रीः इंजील में एक से ज़्यादा बयान मौजूद हैं, जो नबी -मोहम्मद[स०]- के दुनिया में आने (और मबऊस होने) के बारे में इशारा करते हैं। उनका ज़िक्र उनके नाम के साथ तो नहीं है, मगर जो तफ़सील दर्ज है, वह सिर्फ़ मोहम्मद[स०] के शान की है।

हमें किताब डेवेट्रोनोमी, में यह बयान मिलता हैः

"मैं इन (इस्राईलियों) के लिए एक नबी भेजूँगा, उन्हीं के भाईयों में से, और मैं अपने लफ़्ज़ उसके मुँह में रख दूँगा, और वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

उन से बात करेगा उन सब पर, जिसका मैं हुक्म दूँगा। और जो कोई भी मेरे इन लफ़्ज़ों पर तवज्जह न करेगा कि जिन्हें वह मेरे नाम पर अदा करे, (तो) मैं ख़ुद वह (उसकी तवज्जो) उस से ले लूँगा।''

यह बयान एक वादे का ज़िक्र करता है कि इस्राईलियों के भाइयों में से अल्लाह एक नबी को मुक़र्रर करेगा, जो ख़ुद मूसा[अ०] की तरह का होगा, और अल्लाह उनके मुँह से अपने लफ़्ज़ कहलवाएगा, और अल्लाह के वह लफ़्ज़ बताएगा, जिसने (वह लफ़्ज़) उसे अपने से कहने के लिए दिये होंगे।

इस तरह यह आने वाला अपनी तीन ख़ुसूसियतों के साथ आएगा, और यह ख़ुसूसियात तो किसी और पर नहीं, नबी मोहम्मद[स०] पर खपती हैंः

1- जिसका वादा किया गया, वह इस्राईलियों के भाईयों में से होगाः इस्राईलियों का रिश्ता तो सिर्फ़ अरबों ही से है। दुनिया के कोई दूसरे लोग नहीं, सिवाए अरबों के कि जिन्हें इस्राईलियों का भाई कहा जा सके, क्योंकि इस्राईलिया इस्हाक़ की नस्ल से हैं, और अरब इस्माईल की नस्ल से हैं, जो इस्हाक़ के बड़े भाई हैं।

2- नबी मूसा[अ०] की तरह होगा; मूसा[अ०] एक उम्मत के नबी थे, और वह किसी एक पार्टी की तरफ़दारी नहीं करते थे और साथ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ही लोगों के रूहानी पेश्वा (लीडर) थे। यह बयान सारे नबियों में, जो मूसा[अ०] के बाद मबऊस हुए थे, सिर्फ़ मोहम्मद[स०] पर खपता है, क्योंकि उन में से किसी भी नबी को ईसा[अ०] समेत नये उसूलों और क़ायदों के साथ नहीं मबऊस किया गया था। ईसा[अ०] ने मूसा[अ०] के उसूलों और क़वायद की तालीम दी और कोई नया दीनी उसूल व क़ायदा नहीं बताया। और न इस्राईलियों के लिए। वह एक ग़ैर जानिबदार (Secular) लीडर थे। इसके अलावा सभी नबी सिवाए मोहम्मद[स०] के इस्राईलियों में से मबऊस हुए, उनके अपने भाईयों में से नहीं।

3- बयान ने आने वाले नबी को यह कहकर (पहचनवाया कि) वह ख़ुद अपनी मर्ज़ी से नहीं बोलेगा। अल्लाह अपने लफ़्ज़ उसके मुँह में रख देगा।

सिवाए मोहम्मद[स०] के किसी नबी ने यह दावा नहीं किया है कि जो किताब में लाया हूँ, उसमें अल्लाह ही के लफ़्ज़ हैं। मूसा[अ०] पर वही आई। मगर उन्होंने ख़ुदा के पैग़ाम को (उम्मत तक) अपने लफ़्ज़ों में पहुँचाया। मूसा[अ०] की पाँचों किताबों में जो कुछ हम पढ़ते हैं, वह मूसा[अ०] ही के लफ़्ज़ों में है, अल्लाह के (वही के) लफ़्ज़ों में नहीं है। सभी पाँच किताबें, जिनको मिलाकर पुरानी इंजील (Old Testament) जमा हुई है, इंसानी लेखक के लफ़्ज़ों में लिखी हुई हैं,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और इसी तरह चारों गॉस्पल (Gospel तालीमात) भी। ईसा[अ०] ने हक़ बयान किया, जैसा कि उन पर वही हुई थी, मगर अपने लफ़्ज़ों में। इंजील को तो बस अल्लाह और बन्दे के बीच बातचीत समझा जा सकता है।

सिर्फ़ क़ुरआन में वह लफ़्ज़ दर्ज हैं, जिनको मोहम्मद[स०] ने पढ़ कर सुनाया अल्लाह के नाज़िल किये लफ़्ज़ों की सूरत में। मोहम्मद[स०] ने कभी भी क़ुरआन में मौजूद एक लफ़्ज़ को भी अपना लफ़्ज़ नहीं बताया। उन्होंने क़ुरआनी लफ़्ज़ों को अल्लाह के लफ़्ज़ बताया, कि जो मोहम्मद[स०] के मुँह से निकले।

इसलिए ऊपर वाला बयान सिर्फ़ मोहम्मद[स०] के लिए जचता है, किसी और के लिए नहीं। एक और बयान मोहम्मद[स०] के आने पर, इसी ड्योट्रोनॉमी (Deuteronomy) में मौजूद हैः

''यह वह बरकत है, जिस से मूसा[अ०], अल्लाह के बन्दे, ने इस्राईल के बच्चों को अपनी वफ़ात से पहले सरफ़राज़ फ़रमाया (मान-सम्मान दिया)। उन्होंने कहाः मालिक सनाई से आया और सिअर (Seir) से हम पर ज़ाहिर हुआ, उसने परान (फ़ारान) पहाड़ी से ज़ुहूर किया। वह दस हज़ार पाक लोगों से आया अपने हाथ में शोलों वाली आग के साथ।'' (ड्योट्रोनॉमी/33)

मालिक के आने के मायनी वही के आने के हैं। मूसा[अ०] ने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अल्लाह के तीन नबियों के सामने तीन जगहों पर ज़ाहिर होने को बताया: सुनाई में ज़ाहिर होना जो ख़ुद मूसा[अ०] की नुबुव्वत को ज़ाहिर करता है।

ज़ाहिर होने की दूसरी जगह वही का आना है, जो उन पर सिअर (Seir) में आई: यह उस वही का इज़्हार है, जो ईसा[अ०] पर नाज़िल हुई थी, क्योंकि सिअर उर्दुन (Jordon) की ज़मीन पर है।

ज़ाहिर होने की तीसरी जगह अल्लाह का नूर है, जो फ़ारान पहाड़ी पर ज़ाहिर हुआ था। यह मोहम्मद[स०] की नुबुव्वत को ज़ाहिर करता है। फ़ारान पहाड़ी हिजाज़ (अरब का हिस्सा) में है, वह मुल्क जहाँ मोहम्मद[स०] पैदा हुए और रहते थे। इस सच को नीचे के लफ़्ज़ और भी साफ़ करते हैं:

''वह दस हज़ार पाक लोगों से आए, भड़कती हुई आग अपने हाथ में लिये हुए।''

मोहम्मद[स०] वह नबी हैं, जो मक्का में आए, जो हिजाज़ की राजधानी है, दस हज़ार मुसलमानों के लश्कर के साथ, जिसके सरदार ख़ुद थे, जिन से उन्होंने मक्का के बुत के पुजारियों को नीचा किया।

नई बाइबल भी मोहम्मद[स०] के ज़ाहिर होने की बात यूँ करती है:

''ईसा[अ०] ने उन (इस्राईलियों) से कहा, क्या तुम ने पाक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

किताबों में कभी नहीं पढ़ा उस पत्थर के बारे में, कि जिसे (बिल्डिंग) बनाने वालों ने दरकिनार कर दिया था, और अब वही दो लोगों का अहम (जुज़) बन रहा है। यह मालिक का किया हुआ है और यह हमारी नज़रों में बहुत अच्छा है। इसलिए मैं कहता हूँ तुम से (कि) ख़ुदा की हुकूमत तुम से छीन ली जाएगी और एक ऐसी उम्मत को दे दी जाएगी, जो उन से फल पायेगी। और जो कोई भी उस पत्थर पर गिरेगा, वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, और जिस किसी पर यह (पत्थर) गिरेगा, उसे यह पीस कर रेज़ा-रेज़ा (चूरा-चूरा) बना देगा।'' (मैथ्यूस, 21/42-44)

ऊपर का बयान एक पेशीनगोई है यहूदियों को यह बताते हुए कि अल्लाह की (दी हुई) हुकूमत उन से छीन ली जाएगी, और उसे किसी और उम्मत को दे दिया जाएगा। किसी दूसरी उम्मत ने सिवाए अरब (इस्लामी) उम्मत के ईसा[अ०] के बाद ख़ुदा के पैग़ाम (के आने) का दावा नहीं किया, जिसने दुनिया को इस्लाम का पैग़ाम दिया, जो मोहम्मद[स०] पर नाज़िल हुआ था। जो इस्राईलियों को अलग-थलग कर देगा, उस उम्मत के लिए ईसा[अ०] ने कहा ''वह पत्थर, जिसे (बिल्डिंग) बनाने वालों ने दरकिनार कर दिया था''। यह एक हवाला है उस क़रार का, जो इब्राहीम[अ०] के ज़माने में अल्लाह और इस्हाक़ के बीच हुआ था, जिस से इस्माईल को अलग रखा गया था।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पुरानी इंजीले सेः

''जहाँ तक इस्माईल का (ताल्लुक़ है), मैंने तुम्हें (कहते हुए) सुना। देखो! मैं उन पर बरकत नाज़िल करूँगा, और उन्हें नफ़ा देने वाला बनाऊँगा? और उन (की औलादों) को बहुत ज़्यादा कर दूँगा, वह बारह शहज़ादों के बाप होंगे, और मैं उन्हें एक महान उम्मत (समुदाय) क़रार दूँगा। मगर मैं अपना क़रार इस्हाक़ से करूँगा, जिसे सारह तुम्हारे लिए उठाएगी, इसी मौसम में अगले साल।'' (1:17/20-21)

इस्माईल[अ०] और उनकी औलादें, इस बयान की रौशनी में, इब्राहीम[अ०] के ज़माने में उस क़रार से अलाहेदा रखे गये, इसलिए ईसा[अ०] ने उन्हें 'पत्थर' कहा, जिसे (बिल्डिंग) बनाने वालों ने दरकिनार किया था। और अब ईसा इस्राईलियों को बता रहे हैं कि वही पत्थर, जिसे दरकिनार किया गया था, दो कोनों का अहम (जुज़) होगा।

मोहम्मद और (तमाम) अरब इस्माईल[अ०] की औलादों में हैं, और यह वह उम्मत हैं, जिनके लिए ईसा[अ०] ने कहा था कि यह इस्राईली उम्मत को पीछे छोड़ देंगे।

ईसा[अ०] ने आगे बढ़ जाने वाली उम्मत को चूरा-चूरा कर देने वाले पत्थर के जैसी बताया, कि जो भी उस पर गिरा चकनाचूर हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

गया, और जब यह किसी पर गिरेगा, तो उसे चूरा-चूरा कर देगा। इसका मतलब यह हुआ कि वह उम्मत, जो अल्लाह की हुकूमत की वारिस हो, (यक़ीनन) एक बहादुर और उम्मत होगी, साहेबे इस्तेदाद कि किसी भी दुश्मन को हरा देगी, जो उस पर हमला करे, और अगर यह (जायज़ तौर पर किसी पर) ख़ुद हमला करे, तो उसे कुचल के रख देगी। यह बयान सिर्फ़ अरब उम्मत पर खपता है, जो सारी उम्मतों में सरऊँची थी, अपने रूहानी पैग़ाम के पहुँचाने की वजह से, और बहुत बहादुर होने की वजह से अपने बचाव में और अपने दुश्मनों को हराने की वजह से। ईसा[अ०] के बाद हिस्ट्री में कई बहादुर उम्मतों को देखा गया है, मगर उनमें से कोई भी ख़ुदाई पैग़ाम की वजह से हिम्मत वाली (जियाली) न हुई, सिवाए मोहम्मद[स०] की उम्मत के।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-19

इस (ज़िन्दगी) के बाद

विल्सनः अब यह वक़्त है कि एक अहम मामले यानी अमर होने (Immortality) के बारे में भी ख़याल का लेन-देन करें। पुरानी बाइबल में आख़िरत के बारे में वाज़ेह तसव्वुर नहीं है। इसलिए मौत के बाद ज़िन्दगी पर ज़ोर नहीं देती है। नई बाइबल में इस मौज़ू पर बयान मौजूद है। वह साफ़ तौर पर ईसा[अ०] के बारे में बताती है, इसलिए ईसाई आमतौर पर उक़्बा पर अक़ीदे रखते हैं। मुझे मालूम है कि क़ुरआन पाक इस अक़ीदे पर ज़ोर देता है, मगर मुझे तो यह मालूम करना है कि क्या यह अक़ीदा उसूले दीन में शामिल है?

चिर्रीः मौत के बाद की ज़िन्दगी का उसूल इस्लामी अक़ीदे का एक अहम हिस्सा है। इस्लाम की किताब एलान करती है कि इंसानी नस्ल इस सैय्यारे (Planet) पर मौजूद रहना बन्द कर देगी, और यह कि एक ख़ास दिन में, जो अल्लाह का मुक़र्रर किया है और सिर्फ़ उसी को मालूम है, हर इंसान फिर ज़िन्दा किया जाएगा, और उसे जो कुछ उसने ज़िन्दगी में किया था, उसका हिसाब देना होगा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हर आदमी को उस दिन उसके अच्छे किये की जज़ा मिलेगी, और बुराई करने की सज़ा मिलेगी।

(तर्जुमाः) ''भला जब हम मर जाएंगे और (सड़ गल कर) मिट्टी और हड्डियाँ (ही हड्डियाँ) रह जाएंगे, तो क्या हमें दोबारा उठाया जाएगा या हमारे अगले बाप-दादाओं को फिर उठना है? (ऐ रसूल) आप कह दीजिए कि अगले और पिछले सब के सब मुअय्यन दिन की मियाद पर ज़रूर इकटठा किये जाएंगे।'' (सूरए वाक़िआ, 56/47-50)

विल्सनः यहाँ आख़िरत (Hereafter) का तसव्वुर इंसान के देखने में आने से दूर है। यह तसव्वुर करना आसान नहीं है कि एक इंसान, जो जिस्मानी तौर से मर गया है, रूहानी तौर से ज़िन्दा रहेगा, या यह कि बाद को वह ज़िन्दा हो जाएगा, अपनी मौत के बहुत बाद! साइंस यूँ तो मौत के बाद की ज़िन्दगी की गुन्जाइश को ग़लत तो साबित न कर सकी है, मगर इस तरह के तसव्वुर को कोई कुमक भी दे नहीं सकती।

चिर्रीः हालांकि आख़िरत का तसव्वुर हमारे इंसानी तजुर्बे से परे एक इलाक़ा है, कि यह अक़्ली नहीं तसव्वुर किया जा सकता। तसलसुल के लिए यह ज़रूरी है कि हम इस तसव्वुर के हमख़याल हों। हम अल्लाह के अद्ल (इन्साफ़) में यक़ीन रखते हैं। आदिल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अल्लाह, जो सबसे बड़ी ताक़त व इख़्तियार वाला है, उस से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह अच्छे काम के करने वाले को बग़ैर इनाम दिये छोड़ देगा, और न उस से यह उम्मीद भी है कि वह एक ज़ालिम को बग़ैर सज़ा दिये छोड़ देगा। लाखों-लाखों अच्छा काम करने वाले, जिन पर ज़ुल्म हुआ, ज़िन्दा रहे और मर गये बग़ैर किसी मुआवज़े के। (इसी तरह) लाखों-लाखों ग़लत करने वाले लोग, ज़ालिम, क़ातिल और सितमगर बनकर जिये और मर गये बग़ैर इस दुनिया में सज़ा पाए हुए। आदिल अल्लाह, जो कुल ताक़त वाला है, उन ग़लत करने वाले लोगों को अपनी सज़ा के बिना कैसे छोड़ देगा, और न अच्छे काम करने वालों को बग़ैर इनाम के। (इसलिए) एक और दुनिया होना चाहिए कि जहाँ बहुत वक़्त हो ख़ुदा के अद्ल को तामील करने के लिए।

क़ुरआन पाक यहाँ के बाद (की ज़िन्दगी) की ज़रूरत को ख़ुदा के अद्ल के तसव्वुर की बुनियाद पर क़रार देता है।

(तर्जुमाः) "उस दिन लोग गिरोह-गिरोह (अपनी क़ब्रों से) निकलेंगे, ताकि वह अपने आमाल को देख सकें। फिर जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की है, वह उसे देख लेगा। और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की है, वह उसे देख लेगा।" (सूरए ज़लज़ाल, 99/6-8)

विल्सनः आपकी दलील मौत के बाद ज़िन्दगी के तसव्वुर के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अपने आख़िरी मक़सद के सिलसिले में अधूरी है। यह एक अच्छी दलील है, मगर आख़िर में यह कहती है कि हमें एक आगे आने वाले ज़माने की दुनिया की उम्मीद करना चाहिए जिसमें अल्लाह अच्छे काम करने वालों को जज़ा और बुरे काम करने वालों को सज़ा देगा, मगर यह तो साबित नहीं होता कि हमारी आरज़ुएं पूरी होंगी। क्या होना चाहिए और क्या है में बड़ा फ़र्क़ है। हमारा मक़सद यह नहीं है कि हम यह बताएं कि बाद के ज़माने की दुनिया की ज़रूरत है, बल्कि यह साबित भी करना चाहिए कि ऐसी दुनिया हक़ीक़त में बन जाएगी।

चिर्रीः आगे आने वाले ज़माने में दुनिया के वुजूद को सीधे तरीक़े से और मैटर वाली दलीलों से साबित नहीं किया जा सकता है। यह हमारे तसव्वुर और तजुर्बे से परे एक इलाक़ा है, यह बाद का ज़माना है, हमारे हाल से ज़ाहिर में बे रब्त, और न तो वह उस से एक जानी-मानी वजह से जुड़ा है। माद्दी और सीधे सुबूत इस तरह के बाद के ज़माने के लिए मौजूद नहीं है, मगर इसमें बाद के ज़माने का सीधे तो नहीं पर घूम कर सुबूत मौजूद है।

अल्लाह के नबियों ने आने वाले ज़माने में दुनिया (की हालत) के बारे में पहले इत्तेला दी है, जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं। उन नबियों का भरोसा दिलाया सच (और फिर उनका

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

क़यामत का बयान करना) इस ज़िन्दगी के बाद की ज़िन्दगी होने का सुबूत है। हम एक नबी, जैसे कि हमारे नबी मोहम्मद[स०] के बयान पर भरोसा कर सकते हैं (और करना भी चाहिए) क्योंकि आप[स०] की नुबुव्वत की आँखों देखी गवाही मौजूद है। एक नबी कभी भी उम्मत को गुमराह नहीं करता, और न उसे कोई ग़लत बात बताता है। हमें उसके उस ज़माने से और आने वाले ज़माने से जुड़े बयानों को मान लेना चाहिए, क्योंकि उसकी नुबुव्वत को तो मानना, मगर उसकी दी हुई इत्तेला पर शक करना आपस में टकराता है।

विल्सनः क़ुरआन की रू से इस्लाम का यह उसूले दीन कितना अहम है?

चिर्रीः क़ुरआन पाक की अलग-अलग आयतों की रू से आख़िरत पर ईमान रखना अल्लाह पर ईमान रखने के बाद है। यह इस बात की ओर इशारा करता है कि आख़िरत पर ईमान रखना अहम है इस्लामी अक़ीदे के किसी दूसरे हिस्से के मुक़ाबले में के, अलबत्ता अल्लाह पर ईमान लाने के बाद।

(तर्जुमाः) ''बेशक! मुसलमानों और यहूदियों और ईसाइयों, साबियों, (ला-मज़हबों, तारों की पूजा करने वालों) में से जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और अच्छे-अच्छे काम करता है उन्हीं के लिए उनका अज्र व सवाब उनके ख़ुदा के पास है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और न (क़यामत में) उन पर किसी तरह का ख़ौफ़ (डर) होगा और न वह दुखी होंगे।'' (सूरए बक़रा, 2/62)

(तर्जुमाः) ''अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, अच्छे काम का तो हुक्म करते और बुरे कामों से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ पड़ते हैं और यही लोग तो नेक बन्दों से हैं।'' (सूरए आले इमरान, 3/114)

विल्सनः मोहम्मद[स०] ने इंसान जाति को आख़िरत के बारे में बतलाया है। उनकी इत्तेला साफ़ और पक्की है। आप[स०] से क़ब्ल ईसा[अ०] ने भी कुछ इत्तेला इस मौजू पर दी थीं। मूसा[अ०] उस मौजू पर पूरी तरह ख़ामोश नज़र आते हैं। इस से एक सवाल पैदा होता हैः इस मौजू पर मूसा[अ०] की किताबों में मालूमात का न होना एक पहेली है। अगर फिर से ज़िन्दा करने (Resurrection) का नज़रिया इतना ही अहम है, तो उसको मूसा[अ०] पर वही के ज़रिये उतारा जाना था, और मोहम्मद[स०] और ईसा[अ०] पर भी।

चिर्रीः मूसा[अ०] की किताबों में इस मौजू पर किसी बयान के न होने का मतलब यह तो नहीं है कि अल्लाह ने उन्हें आख़िरत के मुताल्लिक़ कुछ न बताया था, और यह भी नहीं कि मूसा[अ०] ने अपने लोगों को मौत के बाद की ज़िन्दगी के बारे में कुछ नहीं बताया था। शायद मूसा[अ०] की पाँचों किताबों में कुछ फेर बदल की गई है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

क़ुरआन पाक हमें बताता है कि मूसा[अ०] ने आख़िरत के बारे में बतलाया थाः

(तर्जुमाः) ''और जो शख़्स (दरपरदा) ईमानदार था कहने लगा कि भाइयो! मेरा कहना मानो मैं तुम्हें हिदायत के रास्ते दिखा दूँगा। भाइयो! यह दुनियवी ज़िन्दगी तो बस (चंद दिनों का) फ़ायदा है और आख़िरत ही हमेशा रहने का घर है।'' (सूरए ग़ाफ़िर (मोमिन), 40/38-39)

(तर्जुमाः) ''और मूसा ने अपनी क़ौम से हमारे वादा पूरा करने को तूर पहाड़ी पर ले जाने के लिए सत्तर आदमियों को चुना, फिर जब उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा, तो हज़रत मूसा ने कहा कि परवरदिगार! अगर तू चाहता कि मुझको और इन सब को पहले ही हलाक कर (मार) डालता। क्या हम में से कुछ बेवक़ूफ़ों की करनी की सज़ा में हमको हलाक करता है? यह तो सिर्फ़ तेरा इम्तेहान था, तू जिसे चाहे गुमराही में छोड़ दे और जिसको चाहे हिदायत करे। तू हमारा मालिक है। तू ही हमारी कमियों को माफ़ कर और हम पर रहम कर कि तू सारे बख़्श्ने (माफ़ करने) वालों में कहीं बेहतर है। और तू ही इस (मिटने वाली) दुनिया और आख़िरत में हमारे वास्ते भलाई को लिख ले। हम तेरी ही तरफ़ रुजू करते (पलट कर आते) हैं। ख़ुदा ने फ़रमाया जिसको मैं चाहता हूँ (मुस्तहक़/योग्य समझ कर)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अपना अज़ाब पहुँचाता हूँ और मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई हुई है, जिसे मैं तो इसे बहुत जल्द उन लोगों के लिए लिख दूँगा, जो (बुरी बातों से) बचते रहेंगे और ज़कात दिया करेंगे और हमारी निशानियों पर ईमान रखा करेंगे।'' (सूरए आराफ़, 7/155-156)

कुरआन पाक हमें यह भी बताता है कि इब्राहीम[अ०] नबी ने आख़िरत के बारे में साफ़-साफ़ बताया है, और उन्होंने अल्लाह से दुआ की वह उन्हें यह दिखाए कि वह (अल्लाह) मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करता है?

(तर्जुमाः) ''और (ऐ रसूल वह वाक़िआ भी याद करो) जब इब्राहीम ने (ख़ुदा से) दरख़्वास्त की कि मेरे परवरदिगार! तू मुझे भी तो दिखा दे कि तू मुर्दे को क्योंकर ज़िन्दा करता है? ख़ुदा ने फ़रमायाः क्या तुम्हें (इसका) यक़ीन नहीं? (इब्राहीम[अ०] ने) अर्ज़ कीः (क्यों नहीं) यक़ीन तो है, मगर आँख से देखना इसलिए चाहता हूँ कि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए। फ़रमाया (अच्छा अगर यह चाहते हो) तो चार पन्छी लो और उनको अपने पास मंगवा लो (और टुकड़े-टुकड़े कर डालो) फिर हर पहाड़ पर उनका एक टुकड़ा रख दो इसके बाद उनको बुलाओ (फिर देखों तो) वह सब के सब तुम्हारे पास दौड़ते हुए आते हैं और समझ रखो कि अल्लाह बेशक ग़ालिब (वर) है और हिकमत (समझ/सम्मति) वाला भी।'' (सूरए बक़रा,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

2/260)

विल्सनः आप ने हमें यह बताया है कि इस्लाम हमें सीख देता है कि हर इंसान एक ख़ास दिन, जिसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, फिर से दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा, (और) यह दिन हिसाब का दिन होगा। तो क्या मैं अब आप से यह पूछ सकता हूँ, उस लम्बी मुद्दत के बारे में, जो हमारी इस दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत के बीच में है, क्या इंसान अपनी मौत के बाद किसी शक्ल-सूरत में ज़िन्दा रहता है हिसाब के दिन तक या उसकी ज़िन्दगी बिल्कुल ख़त्म हो जाती है (उसकी) मौत की वजह से? क्या हमारी ज़िन्दगी या इसके ख़त्म होने पर कोई साफ़ बयान क़ुरआन में मौजूद है, हमारी मौत के बाद और हमारे दोबारा जी उठने पर?

चिर्रीः इस्लामी तालीमात की रू से इंसान की रूह मौत की वजह से नहीं मरती। (बल्कि) वह इस लम्बे अरसे में, जो हमारी जिस्मानी मौत और हमारे दोबारा जी उठने को अलग करता है, वैसे ही ज़िन्दा रहती है, इस तरह कि जो फिर से जीने के लिए ज़रूरी है।

हम इंसान के फिर से जी उठने के बारे में तसव्वुर भी नहीं कर सकते हैं, अगर इसकी ज़िन्दगी मौत के कारण बिल्कुल ख़त्म हो जाती, तो दुबारा जी उठना... क्या है जिसके मायनी यह हैं कि मरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुए शख़्स को फिर से ज़िन्दा करना। अगर मौत के बाद ज़िन्दगी बिल्कुल ख़त्म हो जाती है, तो उस शख़्स को फिर से जिलाना मुमकिन ही न होता, क्योंकि दो तरह के वुजूद का होना मुमकिन नहीं हैः एक मौत से पहले और दूसरा हिसाब के दिन, यह दो वुजूद एक पूरे 'नहीं होने' के बीच में आने से अलग-अलग हो जाएंगे। दूसरा वुजूद वैसा नहीं हो सकता, जैसा कि पहले वाला होगा। वहाँ एक नहीं दो अलग-अलग आदमी होंगे। दूसरा वाला पहले वाला जैसा न होगा, बल्कि वैसा ही होगा, (यानी उस से मिलता-जुलता)।

उसी शख़्स की वापसी तभी हासिल हो सकती है जब इंसान की ज़िन्दगी चलती रहे इसी तरह से उसकी मौत के बाद भी। वरना यह नया पैदा किया हुआ (इंसान) हिसाब के दिन कोई दूसरा आदमी होगा, उस से अलग, जिसकी ज़िन्दगी मौत की वजह से ख़त्म हो गई थी। और इस तरह फिर जी उठने (Resurrection) का असल मक़सद न मिल पाएगा, अगर इंसान की ज़िन्दगी मौत के बाद भी चलती न रहेगी।

आख़िरत का मक़सद अच्छे काम करने वालों को इनाम देने और बुरे काम करने वालों को सज़ा देना है। अगर इंसान मौत के बाद बिल्कुल नहीं रह जाता, तो उसे न तो इनाम मिलता और न सज़ा। हिसाब के दिन नया पैदा किया हुआ आदमी वह न होगा, जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पहले जीता था, इसलिए न वह इनाम का और न सज़ा का मुस्तहक़ (पात्र) है, क्योंकि उसका तो वुजूद पहले था ही नहीं; इसलिए उसने न तो अच्छा काम किया और न ही बुरा।

इसलिए हमें क़ुरआन की हर उस आयत से, जो आख़िरत के मुताल्लिक़ हैं, यह समझ लेना चाहिए कि हर इंसान हिसाब के दिन तक एक रूहानी ज़िन्दगी जीता रहेगा। मुक़द्दस क़ुरआन में इस बात पर साफ़ आयतें मौजूद हैंः

(तर्जुमाः) ''और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल हो जाते हैं, उन्हें कभी भी मुर्दा न कहना, बल्कि (वह लोग) ज़िन्दा हैं। मगर तुम (उनकी ज़िन्दगी की असलियत की) कुछ भी समझ नहीं रखते।'' (सूरए बक़रा, 2/154)

(तर्जुमाः) ''(यही वह लोग हैं) जो अपने (शहीद) भाईयों के बारे में कहने लगे काश हमारी बात पर चलते तो न मारे जाते! तो (ऐ रसूल[स०] उन से) कह दीजिए (अच्छा!) अगर तुम सच्चे हो, तो ज़रा अपनी जान से मौत को टाल दो। और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद किये गये हैं उन्हें हरगिज़ मुर्दा न समझना, बल्कि वह लोग जीते (जागते मौजूद) हैं अपने परवरदिगार के यहाँ से वह तरह-तरह की रोज़ी पाते हैं। अल्लाह ने जो-जो उन पर फ़ज़्ल व करम उन पर किया (वरदार दिया) उसकी ख़ुशी से फूले नहीं समाते

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और जो पीछे रह गये और उनसे नहीं आ मिले, उनके बारे में यह (ख़याल करके) ख़ुशियाँ मनाते हैं कि (वह भी शहीद हों तो) उन पर न किसी का ख़ौफ़ होगा और न दुखी होंगे।'' (सूरए आले इमरान, 3/168-170)

विल्सनः जो लोग आख़िरत के नज़रिये (Doctrine of Hereafter) को मानते हैं, वह भी आपस में एक-दूसरे से एक अहम पॉइंट पर एक राय नहीं हैं। उन में से कुछ का अक़ीदा है कि आख़िरत पूरी तरह से रूहानियत से मुताल्लिक़ होगी, जबकि दूसरे गिरोह का मानना है कि इंसान की ज़िन्दगी हिसाब के दिन जिस्मानी और रूहानी दोनों तरह की होगी। इस्लाम इस सिलसिले में क्या सिखाता है?

चिर्रीः इस नुक़्ते पर इस्लाम की सीख बिल्कुल साफ़ है। इंसान को हिसाब के दिन ज़िन्दा किया जाएगा, जिस्मानी और रूहानी दोनों रूप के साथ। इंसान सिर्फ़ रूहानी वुजूद नहीं है। इंसान के दोबारा पैदा किये जाने के लिए भी जिस्म और रूह दोनों दरकार हैं, वरना वह एक तरह का फ़रिश्ता होगा, इंसान नहीं।

एक और वजह है जिस्मानी और रूहानी वापसी कीः

वापसी का तसव्वुर इंसान के जिस्म के दोबारा बनाये जाने के बग़ैर अपना मक़सद पा ही नहीं सकता, जब तक कि इंसान का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जिस्म दोबारा पैदा न किया जाए। चूँकि इंसान अपनी मौत के बाद भी रूहानी तौर से ज़िन्दा रहता है, उसके फिर जिलाने का यह मतलब नहीं है कि उसकी रूह को फिर से पैदा किया गया है, (ऐसा क्यों होता कि उसकी रूह तो मरी न थी, इसलिए आख़िरत में सिर्फ़ रूहानी ज़िन्दगी की वजह से उसे फिर से पैदा होना नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह उसकी ज़िन्दगी में किसी चीज़ को नहीं बढ़ाती, कि जो रूहानी शक्ल में चलती है। फिर जिलाना तो फिर से पैदा किये जाने से मिलता है। इसके मायनी हुए मुन्तशिर (अज्ज़ाए) बदन के बिखरे टुकड़ों को जोड़ देना उस रूह से, जो अब भी मौजूद है। इस पॉइन्ट पर क़ुरआन का लिखा बिल्कुल साफ़ है, इसका कोई और मतलब निकालने की कोई गुन्जाइश नहीं है।

(तर्जुमाः) ''और जब (दोबारा) सूर फूँका जायेगा, तो उसी पल सब के सब अपनी क़ब्रों से निकल के अपने परवरदिगार की तरफ़ चल खड़े होंगे। और (दंग होकर) कहेंगे कि हाए अफ़सोस आख़िर यह (हम तो पहले सो रहे थे) हमें हमारी सोने की जगह से किसने उठाया है? (जवाब आयेगा कि) यह वही (क़यामत का दिन) है, जिसका ख़ुदा ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था। (क़यामत तो) बस एक कड़ी चिंघाड़ होगी। फिर एकाएकी सब के सब हमारे सामने हाज़िर (इकटठा) किये जाएंगे।'' (सूरए यासीन, 36/51)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(तर्जुमाः) ''तो (ऐ रसूल[स०]! आप[स०] भी) उन से किनारा किये रहें, जिस दिन एक बुलाने वाला (इस्राफ़ील) उन्हें एक अजनबी नागवार (अनचाही) चीज़ की तरफ़ बुलाएगा। तो (क़यामत में) वह आँखें झुकाए हुए क़ब्रों से इस तरह निकल पड़ेंगे, जिस तरह टिड्डियाँ फैली हुई हों। और बुलाने वाले की तरफ़ गर्दन बढ़ाये हुए दौड़ते जाते होंगे और काफ़िर (नास्तिक) लोग कहेंगे यह तो बड़ा कड़ा दिन है।'' (सूरए क़मर, 54/6-8)

विल्सनः जिस्म के फिर जिलाने की अपनी दिक़्क़तें हैं। फ़र्ज़ कीजिए कि किसी शेर ने एक इंसान के बदन को खा लिया, यह खाया गया (बदन) उसके खाने वाले बदन से मिलेगा। अब अगर आख़िरत में यह (खाया हुआ) बदन फिर से ज़िन्दगी के साथ ज़ाहिर होता है, तो यह मुमकिन न होगा कि यह पता चले कि यह बदन खाया हुआ ख़ुद बदन है या इसके खाने वाले का? फ़र्ज़ कीजिए कि एक इंसान का बदन किसी पन्छी या जानवर ने खा लिया। खाया गया बदन खाने वाले के बदन में जा मिलेगा। आख़िरत में कौन सा बदन उठ के सामने आयेगा? (और आयेगा तो) पन्छी का बदन या जानवर का बदन या फिर इंसान का बदन?

चिर्रीः कोई भी खानपान उसके खाने वाले बदन से पूरी तरह से नहीं जा मिलता है, और फिर यह कि फिर से जीने के लिए

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बदन के सारे हिस्सों का मौजूद होना भी ज़रूरी नहीं है। जब तक खाने वाली चीज़ या उसका कुछ हिस्सा ग़ैर मशरूत तौर पर खानपान करने वाले के बदन में मौजूद रहता है, तब तक हर बदन के परवान चढ़ते रह सकता है।

यह भी है कि अल्लाह, जो क़ुदरत (सकत) वाला है, हर चीज़ पर, खानपान करने वाले के बदन के असल हिस्से और जो बाद में किसी दूसरे के बदन से लाकर मिला दिया जाता है, दोनों को जान जाता है। वह उन दोनों को अलग कर सकता है और दो अलग-अलग शरीरों को पैदा करने की सकत रखता है। इसलिए फ़र्ज़ कीजिए कि उनको छोड़कर (अल्लाह) अलग-अलग हिस्सों से एक नया बदन पैदा कर सकता है। और उस पैदा किये गये नये बदन को हिसाब के दिन इंसानी रूह से जोड़ सकता है।

विल्सनः कुछ मज़हब हमें यह बताते हैं कि इंसान की रूह सादा और अटूट होती है और कुछ फ़लसफ़ी (फ़िलास्फ़र) इन ख़यालों की वकालत करते हैं। क्या इस्लाम भी ऐसी बात बताता है या कि वह इस सिलसिले में कोई अलग सी बात बताता है?

चिर्रीः इन बातों पर क़ुरआन ख़ामोश है। वह इंसानी रूह की सादगी, इसके अटूट होने या उसमें बदलाव का असर न होने का न तो हाँ करता है और न नहीं। और न तो वह यह बयान करता है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि इंसान की रूह एक मैटर है या कि यह एक मैटर वाली या मैटर से परे चीज़ है? वह इन सब पॉइन्ट पर पूरी तरह ख़ामोश है, वह दरअस्ल इस तरह के सारे सवालों की रद्द करता है (क्योंकि) वह इंसान की इल्मी हदों के बाहर हैं, और (इसलिए) इन में से किसी सवाल का जवाब दीनी मक़सद तक न पहुँचाएगा। क़ुरआन पाक में दर्ज है किः

(तर्जुमाः) ''और (ऐ रसूल!) पैग़म्बर[स०]! आप[स०] से लोग रूह के बारे में पूछते हैं, तो कह दीजिए कि यह मेरे पालने वाले के हुक्म से (पैदा होती) है, और तुम्हें बहुत थोड़ा सा इल्म दिया गया है।'' (सूरए असरा, 17/85)

विल्सनः कुछ मज़हब बताते हैं कि मौत के बाद इंसान की रूह किसी नये पैदा हुए बच्चे के बदन में जा सकती है या फिर वह किसी जानवर के बदन में भी जा सकती है। क्या इस्लाम इन ख़यालों (पुनजनम/Reincarnation और आवागमन/Transmigration) का हामी है?

चिर्रीः क़ुरआन पाक तसव्वुर Reincarnation और Transmigration का साफ़-साफ़ इनकार करता है? इंसान की रूह मौत के वक़्त इंसान के जिस्म को छोड़कर इस दुनिया में किसी भी फ़ार्म में दोबारा ज़िन्दा नहीं रह सकती। क़ुरआन पाक में है किः

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(तर्जुमाः) ''यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आई, तो कहने लगा कि ऐ पालने वाले! मुझे एक बार उस जगह (दुनिया में) जिसे मैं छोड़ आया हूँ फिर वापस कर दे ताकि (अबकी दफ़ा) अच्छे-अच्छे काम करूँ (जवाब में कहा जायेगा) हरगिज़ नहीं! यह एक लग़ो बात (बकवास) है, जो वह बक रहा है और इनके पीछे (आलमे) बरज़ख़ (बीच की जगह) है, (जहाँ) उस दिन तक कि दोबारा क़ब्रों से उठाये जायेंगे रहना होगा।'' (सूरए मोमिनून, 23/99-100)

इस तरह क़ुरआन पाक कहता है कि इंसानी रूह इस ज़मीन पर दोबारा नहीं रह सकती। इसलिए उसको यह इजाज़त नहीं है कि वह किसी भी ज़िन्दा बदन में, वह इंसान की हो कि जानवर की, घुल मिल सके।

जो भी हम सामने देखते हैं वह भी इसी बात के फ़ेवर में है। अगर इंसानी रूह (हर बार) नये इंसानी बदनों में घुलती मिलती रहे, तो आबादी न बढ़ेगी, क्योंकि एक इंसानी रूह सिर्फ़ एक बदन में जा के रह सकती है। दुनिया की आबादी पिछली सदी में एक अरब थी, (और) अब हम लगभग पाँच अरब हैं। इस तरह हम चार अरब की बढ़त को किस तरह समझा पाएंगे, अगर नयी रूहें पैदा नहीं हो रही हों तो!

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सच तो यह है कि अगर Transmigration का ख़याल सच होता तो आबादी की गिनती सिर्फ़ दो होना चाहिए थी, इस से ज़्यादा नहीं, क्योंकि शुरु में सिर्फ़ दो ही इंसानी रूहें थीं, आदम[अ०] और हौव्वा[अ०] की।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल–20

इस्लाम में पाक अहकामात (Commandments)

विल्सनः ईसाई और यहूदी दोनों मज़हब दस अहकामात की तालीम देते हैं, जो मूसा[अ०] पर नाज़िल हुए थे, और जो पुरानी इंजील में दर्ज है। क्या इस्लाम के भी अहकामात हैं, और अगर हैं तो वह (मूसा[अ०]) पर नाज़िल उन अहकामात जैसे हैं या उन से अलग हैं।

चिर्रीः यह दस अहकामात क़ुरआन में दिये हुए अहकामात के एक ही हिस्से के बराबर हैं।

इस्लाम अपने मानने वालों को बहुत सी बातों से बचने का हुक्म देता है, उनमें से कुछ ऐसी मना बातें हैं कि जो इन बातों की 'नहीं' करते हैं। इस पर मुसलमान को यक़ीन रखना चाहिए। (उनमें) कुछ ऐसी हैं जिन से मना किया गया है, क्योंकि यह अनैतिक (Unethical) हैं या फिर ग़ैर उसूली हैं या फिर वह ऐसी हैं, जो उसूल से हटने की वजह से ग़ैर मज़हबी हैं। इन मना बातों को अहकामात समझना चाहिए, कि जिन से बदअहदी (वचन देकर तोड़ देना) गुनाह है। एक मुसलमान को मना है किः

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(1) वह किसी को अल्लाह का साझेदार (Partner) ठहराये या किसी को उस से (बराबरी के साथ) जोड़े, कि (इस्लाम का हुक्म है): किसी दूसरे को अल्लाह का साझी न ठहराओ।

(2) नबियों पर वही के आने से इनकार करे।

(3) क़ुरआन ने जिन नबियों को पहचनवाया है, जेसे ईसा[अ०], मूसा[अ०], इब्राहीम[अ०] और नूह[अ०], इन में से किसी के भी मबऊस होने से इनकार करे या किसी भी (ख़ुदा के बनाए हुए) नबी की नुबुव्वत से इनकार करे। ऐसा करना इस्लाम से इनकार करना है।

(4) अल्लाह के (वुजूद) को न मानता हो और अपने को महफ़ूज़ समझे।

(तर्जुमाः) ''तो क्या यह लोग ख़ुदा की तदबीर (दांव) से ढीट हो गये हैं, तो (याद रहे) ख़ुदा के दांव से सिर्फ़ घाटा उठाने वाले ही निडर हो बैठे हैं।'' (सूरए आराफ़, 7/99)

(5) अल्लाह की रहमत में यक़ीन का खो देना (उसकी रहमत की आस छोड़ देना):

(तर्जुमाः) ''ऐ मेरे बेटो! (एक बार और फिर मिस्र) जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई को (जिस तरह बने) ढूँढ के ले आओ और अल्लाह की रहमत से काफ़िर लोगों के अलावा कोई नाउम्मीद (निराश) नहीं हुआ करता है।'' (सूरए यूसुफ़, 12/87)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(6) अल्लाह का नाम लेकर झूठी क़सम खानाः

(तर्जुमाः) ''क्या तुम ने उन लोगों की हालत पर ग़ौर नहीं किया है, जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं, जिन पर अल्लाह ने गज़ब (अज़ाब) ढाया है तो अब वह न तुम में से हैं और न उनमें से, यह लोग जानबूझ कर झूठी बातों पर क़स्में खाते हैं और वह जानते हैं।'' (सूरए मुजादिला, 58/14-15)

(7) जानबूझ कर (अल्लाह से) किये हुए वादे/वचन को तोड़ देनाः

(तर्जुमाः) ''और जब तुम लोग आपस में क़ौल क़रार कर लिया करो (वचन दे दिया करो) अल्लाह से अहद (वचन/वादे) को पूरा करो, और अपनी क़स्मों को उनके पक्का हो जाने के बाद न तोड़ा करो जबकि तुम तो अल्लाह को अपना ज़मानतदार (Guarantor) बना चुके हो। जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे ज़रूर जानता है।'' (सूरए नहल, 16/91)

(8) किसी इंसान को जानबूझ के क़त्ल कर देनाः

(तर्जुमाः) ''और जिस जान का मारना अल्लाह ने हराम क़रार दिया है उसको क़त्ल न करना मगर हक़ से (जो शरीयत में जायज़ किया गया हो)। जो शख़्स नाहक़ (अनर्थ) मारा जाय, तो हम ने उसके वारिस को (मारने वाले पर बदले का) क़ाबू दिया है तो उसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चाहिए कि क़त्ल (का बदला लेने) में ज़्यादती न करे (हद से आगे न बढ़ जाए) बेशक वह मदद दिया जाएगा कि क़त्ल ही करे और माफ़ न करे।'' (सूरए असरा, 17/33)

नबी[स०] ने फ़रमाया हैः ''तुम्हारी ज़िन्दगियाँ और जायदाद आपस में इज़्ज़त वाली हैं और ठुकराने वाली नहीं हैं, यहाँ तक तुम उसे अपने मालिक (अल्लाह) के यहाँ (उसके सामने) न पहुँचा जाओ।''

(9) ख़ुद अपने वतन के किसी जायज़ मक़सद से ग़द्दारी करना।

(10) जब किसी का मुल्क उस पर लादी गई जंग के ख़िलाफ़ बचाव में लगा हो, तो मुख़ालिफ़ की मदद करना, जंग के मैदान से भागना, ताकि मिलेट्री पस्पा हो और मुल्क हार जाए।

(तर्जुमाः) ''और (याद रहे कि) उस शख़्स के सिवा जो लड़ाई के लिए कतराए या किसी जत्थे के पास (जाकर) मौक़ा पाये जो शख़्स भी उस दिन इन काफ़िरों की तरफ़ पीठ फेरेगा, वह यक़ीनी (हिर-फिर के) ख़ुदा के ग़ज़ब में आ गया और उसका ठिकाना जहन्नम ही है। और वह क्या बुरा ठिकाना है।'' (सूरए अनफ़ाल, 8/16)

(11) चोरी करना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(12) ख़रीदने और बेचने में कम नापना या कम तौलनाः

(तर्जुमाः) ''नाप-तौल में कमी करने वालों की ख़राबी है। जो औरों से नाप कर लें, तो पूरा-पूरा लें और जब उनको नाप या तौल कर दें, तो कम कर दें।'' (सूरए मुतफ़्फ़िफ़ीन, 83/1-3)

(13) किसी (अनाथ) यतीम के माल को इस तरह ख़र्च करना, जो उसके हक़ में न होः

(तर्जुमाः) ''और यतीम (जब तक जवानी को पहुँचे उसके माल के क़रीब भी न जाना, मगर हाँ उस तरह पर जो (यतीम के लिए) बेहतर हो, और अपने अहदों (वचन) को पूरा करो कि अहद की ज़रूर पूछगछ होगी।'' (सूरए असरा, 17/34)

(14) ख़ुद अपने माँ-बाप की बेहुरमती करनाः

(तर्जुमाः) ''और आप[स०] के परवरदिगार ने तो हुक्म ही दिया (फ़ैसला किया) है कि तुम सब उसके अलावा किसी की इबादत (पूजा/भक्ति) न करना और माँ-बाप से नेकी (अच्छा बर्ताव) करना अगर तुम्हारे समाने उन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँचें (और किसी बात पर ख़फ़ा हों) तो, तो (ख़बरदार! उन के जवाब में) उफ़ तक न कहना और न उनको झिड़कना और (जो कुछ कहना-सुनना हो तो) बहुत अदब से कहा करो और उनके सामने ख़ाकसारी का काँधा झुकाए रखो और (उनके लिए दुआ करो कि) ऐ पालने वाले!

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जिस तरह इन दोनों ने मेरे बचपने में मुझे पाला-पोसा उसी तरह तू भी उन पर रहम फ़रमा।'' (सूरए असरा, 17/23-24)

(15) ज़िना (बलात्कार) करनाः

(तर्जुमाः) ''और (देखो) ज़िना के पास भी न फटकना क्योंकि यह बड़ी बेहयाई (बेशर्मी) का काम है और बुरा चलन है।'' (सूरए असरा, 17/32)

(16) लोगों की बेइज़्ज़ती करना, ख़ासकर औरतों कीः

(तर्जुमाः) ''जो लोग यह चाहते है। कि ईमानदारों में बदकारी का चर्चा फैल जाए, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में बड़ा दर्दनाक अज़ाब है, और अल्लाह ख़ूब जानता है तुम लोग नहीं जानते हो।'' (सूरए नूर, 24/19)

''बेशक जो लोग पाकदामन, बेख़बर और ईमानदार औरतों पर (ज़िना/बलात्कार की) तुहमत (झूठा आरोप) लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में अज़ाब होगा।''

(तर्जुमाः) ''बेशक जो लोग पाकदामन और बेख़बर और ईमानदार (मोमिन) औरतों पर (ज़िना/बलात्कार की) तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत (दोनों जगह) में (ख़ुदा की) लानत (की गई) है और उनके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब है। (क़यामत के) जिस दिन उनके ख़िलाफ़ उनकी ज़बानें और उनके हाथ-पाँव उनकी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कारिस्तानियों की गवाही देंगे उस दिन अल्लाह उनको ठीक पूरा-पूरा बदला देगा और जान जाएंगे कि अल्लाह बिल्कुल बरहक़ (सच पर/सच्चा) और हक़ का ज़ाहिर करने वाला है।'' (सूरए नूर, 24/23-25)

(17) अपनी मिल्लत (समाज) या ख़ुद अपने आपको महफ़ूज़ रखने के मक़सद के बग़ैर दूसरों की जासूसी करना।

(18) दूसरों की चुग़लख़ोरी (लगाई-बुझाई) करना! जिनको वह जानते भी नहीं, और उनके मज़म्मत के क़ाबिल (थुकेले) कामों को खुलकर साफ़ बयान करना।

(तर्जुमाः) ''..... और आपस में एक-दूसरे के हाल की टोह में न रहा करो और न तुम में से एक-दूसरे की ग़ीबत करे।'' (सूरए हुजुरात, 49/12)

(19) जुआ खेलना।

(20) नशा लाने वाली चीज़ों का इस्तेमाल करनाः

(तर्जुमाः) ''जिन लोगों ने ईमान क़बूल किया (ईमान लाए) और उन्होंने अच्छे (अच्छे) काम किये, उन पर जो कुछ खा (पी) चुके हैं, उसका कोई गुनाह नहीं है, जब उन्होनें परहेज़गारी की और ईमान ले आए और (अच्छे) अच्छे काम किये फिर परहेज़गारी की (परहेज़ किया) और ईमान ले आये, और अच्छे (अच्छे) काम किये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

फिर परहेज़गारी की और नेकियाँ कीं और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। ईमानदारो (ईमान वालो)! कुछ शिकार से जिन तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँच सकते हैं, ख़ुदा तुम्हारा ज़रूर इम्तेहान लेगा ताकि ख़ुदा देख ले कि उस से बे देखे भाले कौन डरता है, फिर इसके बाद भी जो ज़्यादती करेगा, तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है।'' (सूरए मायदा, 5/93-94)

(21) सुअर का गोश्त खाना, और उस से बनी कोई चीज़ खाना।

(22) ख़ून का खाना और पीना (इसमें ज़रूरत के वक़्त मरीज़ को ख़ून चढ़ाना शामिल नहीं है)।

(23) किसी ऐसे जानवर का गोश्त खाना, जो मर गया हो, और उस जानवर का भी, जिसे ज़बह करते वक़्त सिवाए अल्लाह के नाम के किसी और का नाम लिया गया होः

(तर्जुमाः) ''उसने तुम पर बस मुर्दा जानवर और ख़ून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जिस पर (ज़बह के वक़्त) अल्लाह के अलावा किसी और का नाम लिया गया, हराम किया है। फिर भी अगर कोई मजबूर हो और सर उठाने वाला और ज़्यादती करने वाला न हो (और इनमें से कोई चीज़ खा ले) तो उसमें गुनाह नहीं है। बेशक! अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।'' (सूरए बक़रा,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

2/173)

(24) जानबूझ कर झूठ बोलना, झूठी गवाही देना या अल्लाह के नाम को (मआज़ल्लाह) जानबूझ कर बिगाड़कर बोलनाः

(तर्जुमाः) ''झूट बोहतान (इल्ज़ाम) तो बस वही लोग बांधा करते हैं, जो अल्लाह की आयतों (निशानियों) पर ईमान नहीं रखते और (हक़ीक़त में बात यह है) यही झूठे हैं।'' (सूरए नहल, 16/105)

(25) किसी मुक़दमे में गवाही के लिए बुलाए जाने पर गवाही (में सच को) छुपा जानाः

(तर्जुमाः) ''और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न मिले, (और क़र्ज़/उधार देना हो) तो रहेन (गिरवी) या क़ब्ज़ा रख लो और अगर तुम में से एक का दूसरे पर एतेबार हो, तो (यूँ ही क़र्ज़ दे सकता है) मगर फिर भी जिस शख़्स पर एतेबार किया गया (क़र्ज़ लेने वाला) है, उसको चाहिए कि क़र्ज़ देने वाले की अमानत (क़र्ज़) पूरी-पूरी अदा करे (दे) और अपने पालने वाले ख़ुदा से डरे, (मुसलमानो!) तुम गवाही को न छुपाओ और जो छुपाएगा (तो बेशक) उसका दिल गुनाहगार है और तुम लोग जो कुछ करते हो ख़ुदा उसको ख़ूब जानता है।'' (सूरए बक़रा, 2/283)

(26) किसी अच्छे काम को जानबूझ कर रोकना।

(27) किसी शख़्स की कही हुई किसी की बुराई को उसको

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बताना (जिसकी बुराई की गई), ताकि दोनों में नफ़रत बढ़ेः

(तर्जुमाः) ''और तुम (कहीं) ऐसे के कहे में न आना जो बहुत क़समें खाता, औक़ात का ज़लील (कमीना), ऐबजू (दोष का टोहिया), आला दर्जे के चुग़लख़ोर (लगाई-बुझाई करने वाला), बहुत कन्जूस, हद से बढ़ने वाला, गुनाहगार, तुन्द मिज़ाज (चिड़चिड़ा) और इसके अलावा बदज़ात (हरामज़ादा) भी है।'' (सूरए क़लम, 68/10-13)

(28) किसी मरे हुए की वसिय्यत में मौजूद बातों की अन्देखी करनाः

(तर्जुमाः) ''फिर जो (वसिय्यत) सुन चुका है उसके बाद उसे कुछ का कुछ कर दे तो उसका गुनाह उन्हीं लोगों (की गर्दन) पर है जो इसे बदल डालें। बेशक अल्लाह सब कुछ जानता और सुनता है।'' (सूरए बक़रा, 2/181)

(29) लोगों पर ज़ुल्म (अन्याय) करना।

(30) किसी ज़ालिम (अत्याचारी) की मदद करनाः

(तर्जुमाः) ''अल्लाह ने जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम (भी) किये और ख़ुदा ने उन से वादा किया है कि उनके लिए (आख़िरत में) मग़फ़िरत (माफ़ी) और बड़ा सवाब है।'' (सूरए मायदा, 5/9)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(31) ग़ुरूर करना और लोगों को नीचा समझनाः

(तर्जुमाः) ''और लोगों के सामने (घमण्ड से) अपना मुँह न फुलाना और ज़मीन पर अकड़ कर न चलना क्योंकि अल्लाह किसी अकड़ने वाले और इतराने वाले को दोस्त नहीं रखता।''

(32) हसद करना, दूसरों की बुराई चाहनाः

''(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं सुबह के मालिक की हर चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की पनाह माँगता हूँ और अन्धेरी रात की बुराई से जब उसका अन्धेरा छा जाए और गन्डों पर फूँकने वालियों की बुराई से और (जब फूँके) और हसद (जलन) करने वाले की बुराई से जब हसद करे।'' (सूरह फ़लक़, 113/1-5)

(33) बे वजह अइज़्ज़ा अक़रबा की बुराई चाहनाः

(तर्जुमाः) ''(मुनाफ़िक़ों!) क्या तुम से कुछ दूर है कि तुम हाकिम (शासक) बनो, तो ज़मीन में फ़साद (बिगाड़/बवाल) बरपा करो (फैलाओ) और अपने रिश्ते-नातों को तोड़ने लगो।''

(34) रोज़ाना की पाँचों नमाज़ों में से किसी एक का छोड़ना।

(35) बिला किसी शरई उज़्र के रमज़ान में रोज़े का तोड़ना (कोई मजबूरी न हो जिस में शरीअत ने रोज़ा तोड़ने की इजाज़त दी है)।

(36) ज़कात दबा रखना, जो उस शख़्स की दौलत में ग़रीबों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

का हिस्सा है, जो ख़ुद कफ़ील (जो अपनी ज़रूरत के ख़र्चे पूरे कर सकते हों) है।

(37) मक्के में हज को न जाना, जिसे ज़िन्दगी में एक बार करना वाजिब है, हर उस शख़्स के लिए, जो जिस्मानी और माली तौर से इसे कर सकता है।

(38) लोगों को अच्छे कामों का हुक्म करने और बुरे कामों से रोकने की ज़िम्मेदारी का न निभाना, जबकि इस सिलसिले में राय ली जाए और वह कारगर भी हो।

ऊपर के आख़िरी पाँच नम्बर (34-38) की बातों का न पूरा करना गुनाहे कबीरा है, क्योंकि नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर क़ुरआन में लिखी अहम ज़िम्मेदारियाँ हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल-21

मुसलमानों के माबैन तफ़रक़ा

विल्सनः इस्लाम की तालीमात इसके मुख़्तलिफ़ पहलुओं के सिलसिले में बहुत ही साफ़ हैं। इसका कोई भी उसूल गोलमोल नहीं है, जिन से मुसलमानों के बीच बहस या तफ़रक़ा (अलगाव) पैदा हो सकता था। फिर मुसलमान एक से ज़्यादा गिरोहों, फ़िरक़ों/धड़ों (Sects) में बटे हुए हैं, जिनमें दो मशहूर गिरोह हैं, सुन्नी और शिया। इसके अलावा हर फ़िरक़े के अन्दर ख़ुद कई छोटे-छोटे फ़िरक़े मौजूद हैं। मुझे मालूम है कि मुसलमानों के बीच बटवारा इतना सख़्त नहीं है, जितना कि ईसाईयों में है। मुझे यह भी मालूम है कि अकसर शिया-सुन्नी दोनों एक ही मस्जिद में एक साथ नमाज़ पढ़ते हैं, और उन में आपस में शादी करना भी मना नहीं है। किसी भी मुस्लिम मर्द या औरत को किसी दूसरे गिरोह के मर्द-औरत के साथ शादी करने में अपने गिरोह छोड़ने की कोई ज़रूरत नहीं होती। फिर भी यह हक़ीक़त है कि आपस में बंटे हुए हैं और एक से ज़्यादा गिरोहों में (मुसलमानों के)।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस बटवारे (अलगाव) को सही ठहराया नहीं दिया जा सकता है। बहरहाल यह (बटवारा) हुआ। इसलिए मैं इस बटवारे की वजहों को जानना चाहूँगा।

चिर्रीः मुसलमानों के बीच अलगाव (बटवारे) को शायद दीनी रंग नहीं दिया जा सकता। इस्लामी क़ानूनों का मतलब निकालने में कुछ तो क़ुरआन के लफ़्ज़ों के मायनी और पैगम्बर[स०] की हदीसों के मतलब पर अलग-अलग राय (मतभेद) है, जिसकी वजह से अलग-अलग मसलक और फ़िरक़े पैदा हुए। असल में यह इख़्तेलाफ़ (अलग-अलग राय) सियासी है, इसके वाइरस पैग़म्बर[स०] की वफ़ात के बाद फ़ौरन आन पहुँचे थे।

यह एक ज़बान पर चढ़ा आम सच है कि इस्लाम इंसान की दोनों -रूहानी और माद्दी- ज़िन्दगियों से जुड़ा है। पैग़म्बर[स०] ने एक मुस्लिम स्टेट बनायी, जिसके हेड/सरबराह आप[स०] ख़ुद थे। उन्होंने हर मामले -दीनी, सियासी और समाजी- की इन्तेज़ामी (प्रशासनिक/Administrative) निगरानी की। उन्होंने कभी भी अपने सहाबा को दीन और हुकूमत के अलाहेदा होने की कोई बात नहीं बताई। उनकी तालीमात में लोगों की बेहतरी और अद्ल इन्साफ़ का चलन उतना ही अहम है, जितना की इबादत के मामले में, जिनका पूरा करना हर-हर आदमी के लिए ज़रूरी है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ग़ैर जानिबदाराना और रूहानी मामलात का एक-दूसरे से लगाव नबी^{स०} के दौर में इतना साफ़ और वाज़ेह था कि किसी मुसलमान ने एक मुस्लिम हुकूमत की बुनियाद और उसके चलते रहने पर कभी भी कोई शक ज़ाहिर नहीं किया। इसलिए जब 632 ईस्वी में नबी[स०] की वफ़ात हुई, तो किसी तरह का कोई सवाल किसी मुसलमान हाकिम (शासक) के होने (न होने) का पैदा ही नहीं हुआ। इस पर सबने एका किया, मगर अलगाव इस पर था कि (रसूल[स०] की वफ़ात के बाद) ख़लीफ़ा कौन बने?

जबकि अली[अ०], नबी के चचाज़ाद भाई, और कुछ हाश्मी (नबी[स०] के परिवार के लोग) मुक़द्दस तदफ़ीन के काम में लगे थे, उस वक़्त कुछ 'मुसलमान' एक जगह पर, जिसको सक़ीफ़ा बनी साअदा कहा जाता था, जमा हो रहे थे कि एक नये लीडर को चुनें।

उनमें मदीना, मुस्लिम हुकूमत की राजधानी के मुसलमानों में ख़ुद मदीने के रहने वाले और मदीने में हिजरत करके बसने वाले (मुहाजिर) शामिल थे। मदीने में बसने वालों में शामिल थे दो क़बीले, जिनके नाम थे 'ख़ज़रज' और 'औस'। इन मक़ामी (स्थानीय/Local) रहने वालों को 'अल-अंसार' (मददगार) कहा जाता था। इस तरह से बाहर से आकर बसने वालों और मदीने के रहने वालों के बीच मनमुटाव था। इसी तरह मदीने के दोनों क़बीलों के माबैन भी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

रिक़ाबत थी।

वह जमा होने वाले, जो ज़्यादा तर मदीने के रहने वाले थे, यह मक़सद ले के आए थे कि वह अपने में के किसी एक का चुनाव इस बड़े मंसब (पद) के लिए करें। साद बिन उबादा, ख़ज़रज के सरदार सबसे ज़्यादा उम्मीद में था। इस की ख़बर अबूबक्र, उमर और दूसरों को मुहाजिरों के ज़रिये पहुँच गयी। वह जल्द ही इस जमावड़े में पहुँच गये कि जाकर मदीने वालों के अपने मंसूबे को कारगर न होने दें। मदीने वालों के साथ बहस मुबाहिसे में उन्होंने पॉइन्ट पेश कियेः

नबी[स०] मक्के के रहने वाले थे, इसलिए मक्की लोग आप[स०] के रिश्तेदार हुए। इसलिए सिर्फ़ किसी मक्की को ही उनका ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी/Successor) होना चाहिए।

मदीने वालों के आपस में हसद की वजह से 'औसियों' ने साद बिन उबादा को छोड़ दिया और मक्का वालों की तरफ़ झुक गये। इस तरह अबूबक्र को फ़ौरन नामज़द किया गया और ज़्यादा तर लोगों ने उन से वफ़ादारी का एलान कर दिया, और इसी तरह ज़्यादा मुसलमानों ने, मुहाजिरों और मदीने वालों ने भी। इस तरह इस्लाम की हिस्ट्री में अबूबक्र पहले ख़लीफ़ा हुए।

ऊपर के तरीक़े से मदीने वालों और मुहाजिरों के बीच

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मामलात हमेशा के लिए तय पा गये। और इसके बाद से किसी मदीने वाले ने ख़िलाफ़त की दावेदारी पेश नहीं की। लेकिन मामला ख़ुद मक्की लोगों के माबैन तय होने से बहुत दूर रहा।

अली[अ०] जैसा कि हम ने बयान किया, मक्के वाले नबी[स०] के कफ़न-दफ़्न में लगे थे। इस अहम मसले में उन से कोई राय नहीं ली गई। उनको ख़ुद और बहुत से और दूसरों को यक़ीन था कि वह (अली[अ०]) दूसरों से कहीं ज़्यादा बेहतर थे। नबी[स०] के बाद (उनके ख़लीफ़ा होने में), और यह हुआ भी कि ख़ुद नबी[स०] ने उन्हें नामज़द (नामित) किया था ख़लीफ़ा की हैसियत से भी। उन्होंने ख़याल किया कि उन (मक्की) लोगों ने जल्दी से मामला तय कर दिया और इलेक्शन में ज़बरदस्ती की। अबूबक्र और उनके ग्रूप ने मदीने वालों को मात दी, यह कहकर मक्के वाले तो नबी[स०] के रिश्तेदार हैं। लेकिन अगर नबी[स०] से रिश्तेदारी किसी मक्की को यह हक़ पहुँचाती है कि वह नबी[स०] का ख़लीफ़ा बने, तो अली[अ०] को सबसे पहले इस मंसब की पेशकश (ऑफ़र) होना चाहिए थी। वह (अली[अ०]) नबी के पहले चचाज़ाद भाई हैं और फिर दामाद भी।

अली[अ०] ने अबूबक्र के हामियों (सपोर्ट करने वालों) का साथ देने से इनकार कर दिया, और कई महीनों तक घर बैठे रहे। (कहा जाता है) आख़िर में वह अकसरियत (बहुत लोगों) के साथ हो गये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और (इस्लाम की ख़ातिर) नयी हुकूमत से अपनी वफ़ादारी का एलान कर दिया। मुस्लिम हुकूमत की हालत उस वक़्त इतनी ख़राब थी कि अली[अ०] जैसा शख़्स हुकूमत की मुख़ालिफ़त करता, तो मुसलमानों के कई धड़े बन जाते। मदीने और मक्के के बाहर ज़्यादा तर मुसलमान मदीने की हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत में उठ खड़े होते, और उनमें से एक अच्छे ख़ासे तबक़े ने इस्लाम से किनारा कर लिया होता। इस्लाम का वुजूद ख़तरे में पड़ गया होता। निहायत पाकीज़ा अली[अ०] मुसलमानों की हुकूमत के बोहरान (Crisis) से फ़ायदा कैसे उठाते? इस्लाम के कुछ हुक्म के दरकिनार किये जाने की वजह से बहुत समझदारी से वह परेशान थे, (इसकी वजह से) इस्लाम को ख़तरा था। इसलिए उन्होंने यही नहीं किया अबूबक्र के हामियों के साथ हो गए, बल्कि (इस्लाम की ख़ातिर) हुकूमत की मदद की। मिसाल के तौर पर हुकूमत को बाग़ी लोगों के हमलों से बचाने के लिए।

जब अली[अ०] ने अपना दावा छोड़कर हुकूमत की मदद की, तो मुसलमानों के बीच अलगाव मिट गया, हालांकि वह अन्दर-अन्दर दो दहाइयों तक मौजूद रहा मुस्लिम हुकूमत अबूबक्र व उमर और उसमान के दौरान। उसमान की वफ़ात के बाद अली[अ०] का इन्तेख़ाब हुआ (चुने गये), और इसके साथ ही नबी[स०] के फ़ौरन बाद उनके पहले ख़लीफ़ा होने के हक़ की बात उजागर हो गई।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नबी[स०] के सहाबियों में अली[अ०] सबसे ज़्यादा होनहार भाग्यवान शख़्सियत रहे। बहुत से पाक चलन मुसलमानों की नज़र में अली[अ०] इतने गणमान (बड़े) थे कि उन्हें यक़ीन था कि नबी[स०] के बाद ख़िलाफ़त उनका अपना हक़ था (ख़िलाफ़त के तय किये जाने) के वक़्त उनकी मुख़ालिफ़त कई तत्वों ने की, और उन्हें अपनी कम मुद्दत (ज़ाहिरी) ख़िलाफ़त के दौरान तीन ख़ूनी बग़ावतों का सामना करना पड़ा।

अली[अ०] की (ज़ाहिरी) ख़िलाफ़त पाँच साल से कम मुद्दत की थी, और यह उनकी शहादत के साथ ख़त्म हो गई। इसके बाद सबसे ज़्यादा शान के चाहू उनके मुख़ालिफ़, मुआविया ने राज संभाला। उन्होंने मुसलमानों पर इस तरह हुकूमत की, जो इस तरीक़े से बिल्कुल अलग था, जिस पर चार ख़लीफ़ा ने मुस्लिम राज पर हुकूमत की थी। वह तक़रीबन दो दहाइयों तक राज में रहे, लोगों पर हुकूमत करते हुए तलवार और रिश्वत से, और अली[अ०] के मानने वालों को ज़लील करते हुए, और उन पर ज़ुल्म के साथ। उन्होंने हुकूमत के तरीक़े को जमहूरियत (गणतन्त्र/Democracy) से ख़ानदानी राज में बदल दिया। उनका ख़ानदान, बनी उमैय्या, उनके इन्तेक़ाल के बाद सत्तर साल तक हुकूमत करता रहा।

इस मुद्दत के दौरान अली[अ०] के मानने वालों ने शिया का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

लक़ब इख़्तियार कर लिया, जिसके मायनी हैं अली[अ०] के दोस्त।

अब्बासियों (अब्बास, नबी[स०] और अली[अ०] के एक चचा की औलादों) के 750 ईस्वी में राज में आने के बाद बनी उमैय्या की हुकूमत ख़त्म हो गई। अब्बासी अब नया ख़ानदान था जिसने मुसलमानों पर कई साल तक हुकूमत की, जिसके दौरान मुसलमानों की अकसरियत को सुन्नी कहा गया, ताकि उन्हें शियों से अलग पहचाना जा सके। इस तरह मुसलमान सुन्नी और शिया में बट गये।

विल्सनः ख़िलाफ़त के मसले में सुन्नी और शिया दोनों की क्या राय है ?

चिर्रीः सुन्नी यह मानते हैं कि अबूबक्र क़ायदे से ख़लीफ़ा थे, और उनके बाद तीन ख़लीफ़ा भी, जिन्होंने एक के बाद एक हुकूमत की, यानी उमर, उस्मान और अली[अ०]। वह (मानते हैं कि) सभी क़ायदे से ख़लीफ़ा थे। और यह कि नबी[स०] ने कभी भी किसी को अपने बाद के लिए ख़लीफ़ा नहीं बनाया, और यह कि उन्होंने ख़िलाफ़त का फ़ैसला अपने सहाबा के इख़्तियार में दे दिया था कि वह अपना हाकिम (शासक) आप चुन लें।

मगर चारो ख़लीफ़ा अलग-अलग तरीक़ों से चुने गये। अबूबक्र को मुसलमानों ने मदीने में चुना, उमर को अबूबक्र ने मुक़र्रर किया, उस्मान को सिर्फ़ छः लोगों की कमीटी से मुन्तख़ब कर लिया

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

गया। उन (छः) -अली, उसमान, साद, तलहा, ज़ुबैर और अब्दुर्रहमान- को उमर ने अपनी वफ़ात से क़ब्ल इस ऊँचे पद के लिए चुना था। इनके अलावा किसी को भी न तो चुनने और न तो अपने को चुनाव में पेश करने का हक़ था। उन लोगों में से बहुमत (Majority) को ख़लीफ़ा को चुन लेने का हक़ था। इन छः में से सिर्फ़ दो को ख़लीफ़ा बनाया जा सकता था, अली[अ०] और उसमान को। अली[अ०] को उन छः लोगों में से किसी की ताईद (सपोर्ट) न मिली, सिवाए ज़ुबैर के, और इस तरह उसमान इलेक्शन जीत गये।

बहरहाल उसमान की मौत के बाद मुसलमानों की बहुत बड़ी जमईयत (लोगों का जमा होना) ने अली[अ०] को चुन लिया।

शिया इस बात को मानते चले आए हैं कि सिर्फ़ यही नहीं कि अली[अ०] सबसे बेहतर थे, नबी[स०] के बाद उनकी विरासत के लिए, और वह इस ऊँचे बड़े मर्तबे (ख़िलाफ़त) के लिए नबी[स०] के नामज़द किये हुए थे। उनका इस पर ईमान है कि दरअस्ल नबी[स०] ने अली[अ०] को अपना वारिस (उत्तराधिकारी) मुक़र्रर कर दिया था, और यह कि अली[अ०] को भी हक़ था अपना वारिस मुक़र्रर करने का।

ऊपर की दोनों बातें इज़्ज़त वाली हैं कि अपनी दलीलें आप रखती हैं, और दोनों एहतिराम के क़ाबिल हैं, दोनों मान ली जाने के क़ाबिल हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

विल्सनः क्योंकि हर फ़रीक़ (पक्ष/Party) के नज़रिये को ज़िम्नन बयान किया जा चुका है, इसलिए अब हम आप से साफ़ तौर से हर पार्टी की सबसे ज़्यादा अच्छी (और दलील वाली) बहस के बारे में जानना चाहेंगे। चलिये हम सुन्नी दलीलों से इब्तेदा करते हैं।

चिर्रीः सुन्नियों के फ़ेवर में पहली दलील, आप याद करें कि मुहाजिरों ने मदीने वालों के ख़िलाफ़ एक जलसे में दी थी, जो अबूबक्र के ख़लीफ़ा मुक़र्रर किये जाने के साथ ख़त्म हुआ। दलील में यह कहा गया कि मक्का वाले नबी[स०] के रिश्तेदार हैं, इसलिए उनके बाद उनका ख़लीफ़ा भी उनके रिश्तेदारों में से किसी एक को होना चाहिए।

विल्सनः इस तरह की दलील हो सकती है और दरअस्ल हुई और इसे सुन्नियों के ख़िलाफ़ और शियों के फ़ेवर में बरूए कार लाया गया। अगर ख़ून के रिश्ते को मुस्लिम हुकूमत के बनाने के लिए बुनियाद के तौर पर लिया जाए, तो अली[अ०] को वारिस होना चाहिए, क्योंकि वह अबूबक्र से ज़्यादा नबी[स०] के क़रीबी थे। वह (अली[अ०]) उनके चचाज़ाद भाई थे और दामाद भी।

चिर्रीः इसके साथ ही यह भी है कि नबी[स०] से रिश्तेदारी मुस्लिम हुकूमत की क़ानूनी हैसियत के लिए एक मुनासिब और अच्छी बुनियाद नहीं हो सकती है। हमें मालूम है कि इस्लाम मज़बूती के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

साथ और खुले तौर से हुकूमत ख़ुदशाही या तानाशाही (Autocracy) और ख़ानदारी समाजी रिआयत के ख़िलाफ़ है। मुसलमान इस हक़ीक़त पर फ़ख़्र करते हैं कि इस्लाम में तबक़ाती (निज़ाम/वर्ण सिस्टम) नहीं है, और यह भी कि सभी लोग, चाहे वह किसी भी मुल्क या ख़ानदान के हों, बराबर हैं। क़ुरआन पाक का एलान हैः

(तर्जुमाः) ''लोगो! हम ने तुम सब को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और हम ही ने फिर तुम्हारे क़बीले और बिरादरियाँ (जाति) बनायीं, ताकि एक-दूसरे को पहचान लो। इस में शक नहीं कि अल्लाह के नज़दीक तुम में बड़ा इज़्ज़तदार वही है, जो बड़ा परहेज़गार है, और अल्लाह बड़ा जानकारी रखने वाला है।'' (सूरए हुजरात, 49/13)

नबी[स०] ने ख़ुद भी एलान किया है (कि)ः

''....... बेशक! इस्लाम के पहले के समाज में किये जाने वाले फ़ख़्र को अल्लाह ने दरकिनार कर दिया है और इसी तरह पुरखों पर फ़ख़्र करने को (भी)। किसी अरब को किसी ग़ैर अरब पर कोई ऊँचाई-बड़ाई नहीं है (इसी तरह किसी ग़ैर अरब को किसी अरब पर भी) बिला शुबह! अल्लाह की नज़र में तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है, जो सब से ज़्यादा मुत्तक़ी (उस से डरने वाला, संयमी) हो।''

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

यह तसव्वुर कि ऊँचाई-बड़ाई क़ुरैशी (मक्की) की यह एक हाश्मी की तमाम दूसरे लोगों पर दरअस्ल बराबरी से टकराव है बराबरी के इस जज़्बे से कि जिस पर मुसलमान ख़ुद फ़ख़्र करते हैं। (अगर नाबराबरी को बाक़ी रखा जाना होता तो) इसका मतलब होगा कि अल्लाह ख़ुद लोगों के बीच फ़र्क़ करता है और कुछ ख़ानदानों और क़बीलों को सारे इंसानों के मुक़ाबले में पसन्द करता है। इसलिए हमें कोई चारा नहीं है, मगर यह कि इस तरह के किसी तसव्वुर, फ़र्क़ और बेजा रिआयत को दरकिनार कर दें; यही नहीं, बल्कि उसे ग़ैर इस्लामी भी मानें। इसके लिए अज़ीज़दारी की दलील को पूरे तौर से दरकिनार कर देना चाहिए।

सुन्नियों के लिए दूसरी दलील इस तरह बयान की जा सकती हैः इस्लाम हर-हर फ़र्द के पैदाईशी हक़ों (Natural Rights) की क़द्र करता है और उसके पाकपन की भी। इन में से सियासी आज़ादी भी एक है। हर एक को हक़ है कि वह अपने गरोह में जनता से जुड़े मामलों में सीधे या किसी और के ज़रिये या फिर किसी को चुन के कि वह उसका नायब (उप) बनकर उसका काम करे, कि कोई भी किसी पर उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हुकूमत नहीं कर सकता है, और इसी तरह किसी आदमी की भी आज़ादी न (तो) कम की जा सकती है (और न छीनी जा सकती है) बग़ैर उसकी मर्ज़ी के। एक आदमी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

की क़ानूनी हुकूमत लोगों की इजाज़त से और उनके हक़ लेने के बाद ही बनायी जा सकती है।

अबूबक्र नबी[स०] के सहाबा की बहुत के चुने हुए थे। उन्होंने उन्हें ख़ुद अपनी मर्ज़ी से चुना था, ख़ुद अपने पैदाइशी हक़ की वजह से। इसलिए उनकी हुकूमत क़ानूनी भी थी और जनतन्त्र (Democracy) वाली भी।

विल्सनः आपकी यह दलील काफ़ी पक्की है, और इसका दारोमदार इस बात का मान लेना है, जिसे हम ''वह हक़ जिन्हें क़ब्ज़े में न लिया जा सके हुक़ूक़'' कहते हैं। अब हमें शियों की दलीलों की तरफ़ मुड़ना चाहिए।

चिर्रीः शिया और इसी तरह सुन्नी एकराय हैं कि एक क़ानूनी हुकूमत लोगों के चुनने के ज़रिये बनायी जा सकती है। सियासी आज़ादी और हर आदमी की निजी आज़ादी ख़ुद अपनी हुकूमत के चुनने की आज़ादी को हर मुसलमान और इसी तरह हर शिया जानता और मानता है। हालांकि शिया तसव्वुर करते हैं (और सुन्नी भी इसकी 'नहीं' नहीं करते हैं कि) सिर्फ़ लोगों के हाथों इलेक्शन ही वह तरीक़ा है, जिस से एक क़ानूनी हुकूमत बनायी जा सकती है। उमर को अबूबक्र ने अपना वारिस/उत्तराधिकारी (Successor) मुक़र्रर किया, और उसमान को सिर्फ़ 6 आदमियों के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़ायद वोट से ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया गया, और इन दोनों को सुन्नी हज़रात क़ायदे से क़ानूनी ख़लीफ़ा तसव्वुर करते हैं।

एक भरोसे के क़ाबिल क़ायदे की दलील शियों के लिए नीचे के पॉइन्ट्स के बयान के साथ बयान की जा सकती हैः

1- इंसान की आज़ादी को क़ानूनी तौर से कम किया जा सकता है या उसे महदूद किया जा सकता है, एक चुनी हुई हुकूमत को उसकी इजाज़त देकर कि वह क़ानून को ठण्डे बस्ते में डाल दे, जिस से इंसान आज़ादी को महदूद कर दे या फिर वह अपने पावर में से कुछ को बिदा कर दे।

(A)ः यह (आज़ादी) ख़ुद उसकी इजाज़त से महदूद की जा सकती है, और चुनी हुई गवर्नमेंट के ज़रिये उसकी इजाज़त से कि वह क़ानून को ठण्डे बस्ते में डाल दे, जो उस आज़ादी को महदूद कर दे या उसे इस पर आमादा कर दे कि वह ख़ुद अपने हक़ में से कुछ को छोड़ दे।

(B) या फिर उन्हें महदूद या ख़त्म कर दिया जाए, उस पैदा करने वाले की तरफ़ से, जिसने उसे आज़ादी और पैदाईशी हक़ दिये थे। वह अपने बन्दों पर वह उसूल लागू कर दे कि जो ख़ुद उन्हीं के फ़ायदे के लिए उनकी आज़ादी को कम कर दे। असल में किसी को नहीं मालूम कि उसके हक़ में क्या अच्छा है, मगर अल्लाह जानता है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि हमारे लिए क्या बेहतर है, आज-कल भी और आने वाले कल भी! हम अपनी आज़ादी, अपने सारे हक़, यहाँ तक कि वह ख़ुद अपने वुजूद के लिए उसके देने की गिरवी हैं। हमारे लिए वह जिस तरह की भी हुकूमत दे, वही (जायज़ व) क़ानूनी होगी।

2- एक हुकूमत, जो रब्बानी (ख़ुदा वाली) हो, नबी[स०] के जीवन में मुमकिन थी। नबी[स०] को, क़ुरआन पाक की रू से इख़्तियार है मुसलमानों के लिए एक के बाद चलने वाली हुकूमत के चुनने और उसे बनाने का। क़ुरआन पाक उन्हें इख़्तियार देता है कि वह मुसलमानों के लिए जो चाहें चुन लें कि वह उनके लिए बेहतरी का कारण हो। वह (नबी[स०]) मुसलमानों के मुरब्बी (तरबियत करने, परवान चढ़ाने वाले) हैं, और उन्हें ख़ुद मुसलमानों से ज़्यादा इख़्तियार है, उनके समाजी मामलों के करने काः

(तर्जुमाः) ''नबी[स०] तो मोमिनों से ख़ुद उनकी जानों से भी बढ़कर हक़ रखते हैं (क्यों वह जैसे उम्मत के बाप हैं) और उनकी बीवियाँ उनकी माएं हैं और मोमिनों व मुहाजिरों में से (जो लोग आपस में) क़रीबी रिश्तेदार हैं ख़ुदा की किताब से (ग़ैरों के मुक़ाबले में) एक दूसरे (तरके में) ज़्यादा हक़ रखते हैं, मगर जब तुम अपने दोस्तों के साथ (अच्छा) सुलूक करना चाहो (तो दूसरी बात है)। यह तो (ख़ुदा की) किताब में लिखा हुआ मौजूद है।'' (सूरए अहज़ाब,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

33/6)

मुस्लिम हुकूमत के सभी मामलात में नबी[स०] का फ़ैसला सभी मुसलमानों पर पूरी तरह से लागू होता है। उन्हें कोई हक़ नहीं है कि वह उनके किसी (फ़ैसले) को उलट दें या उसमें कोई बदलाव कर लें। क़ुरआन पाक में है किः

(तर्जुमाः) ''और न किसी मोमिन मर्द को यह मुनासिब है और न किसी ईमानदार औरत को कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी काम का हुक्म कर दें, तो उनको अपने उस काम (के करने न करने) का इख़्तियार हो और (याद रहे कि) जिस शख़्स ने अल्लाह और उसके रसूल[स०] की नाफ़रमानी (कहे पर न चलना) की वह यक़ीन है खुल्लम-खुल्ला गुमराही में मुब्तला है (भटका हुआ है)।'' (सूरए अहज़ाब, 33/36)

इस तरह जब भी किसी को अल्लाह व रसूल[स०] मुक़र्रर करते हैं या उसे नामज़द करते हैं अपने बाद के लिए, मुस्लिम राज पर हुकूमत करने के लिए, तो उनकी पसन्द का सबको दिल से वेलकम करना है, क्योंकि उनका फ़ैसला सब पर लागू होता है।

3- क्योंकि एक के बाद एक हुकूमत को बनाने के दो अस्ल में क़ानूनी तरीक़े हैं, इसलिए शिया दलील देते हैं कि नबी[स०] से उम्मीद है कि उन्होंने अपने ख़लीफ़ा को चुन लिया होगा और उसका

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

साफ़ इशारा भी कर दिया होगा, और इतने अहम मसले को मुसलमानों पर न छोड़ा होगा? (सच यह है कि) इस (मसले) को मुसलमानों पर तरक़्क़ी के लिए इतने पहले मरहले पर छोड़ना कितने ही ख़तरों वाला था?

मुस्लिम हुकूमत इस्लाही उसूलों पर खड़ी होती थी, जिसका मक़सद था लोगों के अक़ीदे और उनके जीवन के तरीक़े में बदलाव लाना इस नई आइडियालोजी के ज़रिये, जिसे बहुत ज़्यादा लोगों ने वेलकम कहा।

इसे बयान करने के लिए (यह भी कहना है कि) हुकूमत को समाज में चलते-फिरते कुछ तसव्वुरों और उसूलों पर, जो ज़्यादा तर लोगों के लिए मानने के क़ाबिल हों, टिका होना चाहिए। इस तरह की हुकूमत की बुनियाद को जनता के हाथों में छोड़ देना चाहिए। ऐसी हुकूमत के पास (तरक़्क़ी वाले) मंसूबे और प्रोग्राम हो सकते हैं, मगर उसका कोई भी मंसूबा या प्रोग्राम क़ानूनी न होगा, जब तक उन पर ज़्यादा लोगों की रज़ामन्दी न ज़ाहिर हो जाए। दरअस्ल यह (किसी भी मुल्क की) जनता ही हैं, जो सबसे ज़्यादा इख़्तियार वाली होती हैं, जो उन मंसूबों और तरक़्क़ी के कामों का जायज़ा लेती हैं। ऐसी हुकूमत बाक़ी रह सकती है, अपनी ताक़त के साथ, क़ानूनी तौर से ज़्यादा लोगों की चलती-फिरती हिमायत (सपोर्ट) के बलबूते पर।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इसी लिए अगर उसे इस तरह ज़्यादा लोगों की हिमायत न मिली हो, तो वह क़ानूनी तौर से गिर कर ख़त्म हो जाती है।

इस्लाही उसूल

एक और तरीक़े की हुकूमत होती है, जो कुछ इस्लाही (सुधार वाले) उसूलों की बुनियाद पर होती है, जिसका मक़सद लोगों की ज़िन्दगी के हालात को बदलना होता है, और साथ ही उनके अक़ीदों और किरदार में भी सुधार लाना होता है।

ऐसे उसूल अकसर लोगों की नज़र में जाने माने और पसन्द के नहीं होते हैं। यह उसूल आमतौर से किसी एक आदमी के ज़रिये लागू किये जाते हैं या फिर उन पर जनता में ज़्यादा लोग चलते है, जो पुराने नज़रियों से मुतमइन नहीं होते हैं, हालांकि ज़्यादा जनता उन्हें जानती मानती है। नई आइडियालोजी (नज़रिये) को पहचनवाने और उस पर चलाने के लिए, एक ऐसी हुकूमत की, जो ख़ुद भी उन्हीं उसूलों को मानती हो, बुनियाद होना चाहिए। ऐसी हुकूमत का फ़र्ज़ होगा कि वह इस नई आइडियालोजी को चलाए और उसे हर तरह के ख़तरों से बचाने के लिए चुस्त रखवाली रहे।

इस तरह की हुकूमत दरअस्ल अकसरियत/बहुमत (Majority) वाली हुकूमत होती है और यह अकसर ताक़त पा लेती है बग़ैर अकसरियत के सपोर्ट पाये हुए भी। अगर इस तरह की हुकूमत को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जाना पड़े तो यह उम्मीद रखना चाहिए कि अपने बाद अपनी बात चलाने और काम करने के लिए नई हुकूमत बनवा दे, न कि उसे आज़ादाना इलेक्शन पर उठा रखे।

बात को और साफ़ करने के लिए, फ़र्ज़ कीजिए कि एक सरमाया दाराना (पूंजीवादी) अक़लियत (अल्पमत/Minority) किसी ऐसे मुल्क में हुकूमत संभालने में कामयाब हो जाती है, जहाँ पर कम्युनिस्ट सिस्टम चलता हो और जिसे सच्चे दिल से माना जा रहा हो। इसलिए जब इस तरह की हुकूमत पहले के सिस्टम को अपने सिस्टम से बदलेगी, तो उसे ज़रूर ही कोशिश करना होगी कि उसकी (सरमाया दाराना निज़ाम की) आइडियालोजी आगे चले और बाक़ी रहे। अगर ऐसा न हो तो अक़लियती हुकूमत का क्या हाल होगा, जब उसे हुकूमत से किनारा करना पड़ रहा होगा ?

इन हालात में हुकूमत से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह नई हुकूमत बनाने को आज़ादाना इलेक्शन के नतीजे पर छोड़ देगी। (फिर यह कि) चूँकि नया सिस्टम ऊपर से लादा गया है, इसलिए उसे ज़्यादा तर लोगों ने मजबूर होकर बेदिली से ही मन्ज़ूर किया होगा। इस तरह आज़ादाना इलेक्शन के नतीजे में इस आज़ादाना नये सिस्टम को नुक़सान पहुँच सकता है। जब लोगों को अपनी पसन्द की हुकूमत को आज़ादाना चुनने की इजाज़त होती है,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तो (आमतौर से) वह पुराने सिस्टम के सराहने वालों ही को चुनते हैं। (यही सच होगा, अगर कम्यूनिस्ट नज़रिये की तरफ़दार अक़लियत सरमाया दाराना (निज़ाम वाले) मुल्क में हुकूमत क़ायम कर लेती है।

इसलिए एक हुकूमत की ज़िम्मेदारी है कि नये सिस्टम की हिफ़ाज़त करे और सिर्फ़ ऐसे ही लोगों पर भरोसा करे और उनकी तायनाती करे, जो इस आने वाली हुकूमत के नज़रिये की सरबराह की हैसियत में के बड़े ख़ुलूस के साथ हिफ़ाज़त करें।

बाद में आने वालों की पोस्टिंग जारी रहना चाहिए, यहाँ तक कि इसी नज़रिये को लोग सच मानने लगें, और उसका सिलसिला चलता रहे। नये नज़रिया तभी चलता रह सकता है, जबकि वह जनता के लिए एक ज़िन्दगी के नेचुरल तरीक़े में दाख़िल हो जाते हैं। और ऐसा होना मुमकिन नहीं है, जब तक इस आइडियालोजी (Ideology) को आने वाली नस्लें अपना वरसा (Heritage/धरोहर) न समझें।

फ़र्ज़ कीजिए कि इस नये सिस्टम को दिखावे के लिए आमतौर पर जनमानस गले लगा लेते हैं, और यह भी कि जनमानस के ख़यालों को बदल कर उन्हें इस नये सिस्टम से लगाव कर दिया जाता है। ऐसे में हुकूमत को एहतियात से रहना होगा, बग़ैर किसी नुक़सान को उठाए, उनके हालात जो उसके मिले हुए नतीजों को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़त्म कर दें। (इसलिए) हुकूमत की ज़िम्मेदारी होगी कि वह हुकूमत चलाने की ज़िम्मेदारी ऐसे लोगों को सौंपे, जिनका ख़ुलूस और क़ाबिलियत शक से दूर हो। नई हुकूमत बनाने के लिए मामलात को अकसरियत के हवाले कर देने का मतलब होगा ख़तरों से खेलना! और आज़ादाना इलेक्शन के नतीजे तो अच्छे या फिर बुरे भी हो सकते हैं। एक नई आइडियालोजी का पालने वाला तरक़्क़ी की पहली स्टेज में ऐसा ख़तरा मोल नहीं लेता।

इस्लाम एक इस्लाही (सुधार वाली) आइडियालोजी है

4- इस्लाम ने एक नई आइडियालोजी दी, जो (शुरु-शुरु में) अरब समाज में आम पसन्द न थी। इस नई आइडियालोजी का मक़सद लोगों के अक़ीदों और ज़िन्दगी के तरीक़े को बदलना था। वह बुत, जो उनको प्यारे थे और जिनकी वह पूजा करते थे, तोड़े जा रहे थे। और सिर्फ़ उस अल्लाह की, जो एक है और जो सब संसारों का पैदा करने वाला है, उसकी इबादत करना है। (और करना चाहिए)। अब ज़िद्दी और घमण्डी अरब को अल्लाह के लिए रुकू में झुकना और दिन में कई बार सजदे करना है। (अख़्लाक़/Moral से) गिरी हुई चाहतों, बलात्कार, क़त्ल, लूट-खसोट, जुआ और शराब अब ज़िन्दगी के उसूली व क़ानूनी तरीक़े न रह गये थे। निराज और अफ़रातफ़री अब क़ायदे और डिसिप्लिन वाले सिस्टम में बदल गये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

थे। ख़ुदग़र्ज़ी और एक-दूसरे से नफ़रत अब कड़ी मेहनत और बेग़रज़ ख़िदमत और समाज कल्याण के लिए क़ुर्बानी देने में बदल चुके थे। हर शख़्स की आमदनी का एक हिस्सा समाज के ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों के हालात बदलने के लिए हुकूमत के चलाए गए प्रोग्रामों के लिए देना था। सही तरीक़े वाले (प्रोग्रामों) को बनिस्बत ग़लत प्रोग्रामों के सराहना चाहिए था, चाहे यह (ग़लत प्रोग्राम) किसी के रिश्तेदार ही क्यों न चला रहे हों।

इन सुधार के प्रोग्रामों में से कोई भी प्रोग्राम उस वक़्त के समाज के लिए क़ुबूल करने के क़ाबिल न था, कि जिसको इस्लाम पहचनवाया गया था। इन छा जाने वाले उसूलों की अकसरियत ने पूरी ताक़त के साथ मुख़ालिफ़त की। आख़िर इस्लाम की जीत हुई, हालांकि बहुत ही आँसुओं और ख़ून के बह जाने के बाद।

(ऐसे में) हम मुश्किल से उम्मीद कर सकते हैं कि नबी[स०], जिन्होंने तीस साल की क़ुर्बानियों, ग़रीबी और तकलीफ़ों के बाद अपने जतन में जीत पा ली थी, कि वह इस दुनिया से चले जायेंगे इस्लाम के उसूलों को बग़ैर किसी मुहाफ़िज़ (रखवाले) के और अपने मानने वालों में से बग़ैर किसी बेहतरीन आदमी को मुक़र्रर किये हुए, जो उन सब का इन्तेज़ाम करे।

5- वह ख़तरा जो हर दौर में आने वाली हुकूमत (बनाने)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

को जनता की पसन्द पर छोड़ दिये जाने में पैदा होता है, इन सच्चाइयों से समझा जा सकता हैः जज़ीर–ए–अरब में बड़ी तादाद में रहने वाले लोगों में से बहुत कम लोग ऐसे थे, जो लिख पढ़ सकते थे। उनमें से एक बड़ी तादाद बिल्कुल जाहिल अनपढ़ थी। उन्होंने इस्लाम को उसके फैल जाने के बाद क़ुबूल किया था। जैसे ही उन्होंने नबी[स०] की वफ़ात की ख़बर सुनी, तो उनमें से ज़्यादातर बग़ावत पर उतर आए और जाहिलों की एक बड़ी तादाद ने अपने अक़ीदे को छोड़ दिया। ऐसे में इस्लाम का फ़्युचर बज़ाहिर अन्धेरे में नज़र आया, और अक़ीदों वाले मुसलमान डावांडोल हो गये।

ख़ुद नबी[स०] को भी इस सूरते हाल का अन्दाज़ा था। उन्होंने अपनी वफ़ात से क़ब्ल यह कहाः

''अक़ीदे के इम्तेहान का संकट काली रात के जैसा आन घेर रहा है।''

यह समझना मुश्किल है कि इन हालात में नबी[स०] कोई कोशिश न करेंगे कि बेहतरीन रहबरी (Leader-ship) का इन्तेज़ाम अपनी इस परवान चढ़ी इस्लामी ममलकत के लिए, अपने इस दुनिया से जाने से पहले न कर दें?

विल्सनः मैंने यह मान लिया कि यह पॉइन्ट्स ठीक हैं, मगर यह ज़रूरी नहीं है कि यह निकाले हुए नतीजे तक पहुँचा दें। यह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सच है कि मदीने से बाहर रहने वाले मुसलमानों में ज़्यादा तर लोग इस्लाम लाने में न तो क़ाबिले भरोसा थे और न मुख़्लिस (खरे)। मगर नबी[स०] के वह सहाबा जो इस्लाम के मक़सद के मददगार थे, और जिन्होंने इसके फैलने में बहुत सी क़ुर्बानियाँ दी थीं, क़ाबिले भरोसा और मुख़्लिस थे। वह नबी[स०] के साथ बहुत दिनों तक रहे और (इस वजह से) अपने अक़ीदे इस्लाम में बहुत कुछ सीख चुके थे। नबी[स०] ने आने वाली (इस्लामी) हुकूमतों का बनाना शायद उन पर छोड़ दिया हो। यह नई आइडियालोजी से जुड़े थे। वह उसके सच्चे तरफ़दार थे। उन पर भरोसा करने में कोई ख़तरा भी न था।

चिर्रीः नबी[स०] के सहाबा में से ज़्यादातर का ख़ुलूस माक़ूल शक शुब्हों से से ऊपर है। यह फ़र्ज़ करना मुनासिब होगा कि अली[अ०], अबूबक्र, उमर, उसमान, सलमान फ़ारसी, अबूज़र और बहुत से दूसरे हज़रात मुहाजिरों में से और मदीने वाले इस्लाम के मक़सद के ख़ुलूस के मददगार थे। उन्होंने इसके प्रचार के लिए बहुत दिनों तक बहुत सी क़ुर्बानियाँ दीं। यह इस्लामी शिक्षाओं से ख़ूब वाक़िफ़ थे और वह पाक नबी[स०] के अच्छे शागिर्दों में थे। शिया कहते हैं कि यह बात बाक़ी रह जाती है कि इनमें से ज़्यादातर सहाबा पूरी तरह पाक न थे, अपने पुराने ख़ानदानी लगाव से।

इस्लाम का मक़सद न कि तंग नज़र ख़ूनी रिश्तों को बल्कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुसलमान के बीच आम भाई चारे और बराबरी को परवान चढ़ाना था। मगर उन लोगों के लिए अपने पिछले दिनों को भूल जाने और अपने मिसाली अक़ीदे के लिहाज़ से ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए बहुत कम समय था। ख़ानदानी रिश्ते उन सोचों पर छाये हुए थे। मदीने में जो जमावड़ा हुआ था, उस ने ख़ानदानी कलह को उजागर तरह से पेश किया। उनका मक़सद था कि किसी मदीने वाले को हाकिम (शासक) की तरह चुन लिया जाए, और मक्के के लोगों को रहबरी से रोक दिया जाए। दूसरी तरफ़ मक्के के लोगों ने तय कर रखा था कि रहबरी ख़ुद अपने हाथों में रखेंगे।

(इस तरह) दोनों तरफ़ वालों ने बराबरी और भाईचारे के उसूलों की अनदेखी की, जिसकी बुनियाद के लिए नबी[स०] ने कोशिश की थी। इस कठिन वक़्त में उनमें से किसी ने भी रहबरी के लिए सबसे ज़्यादा मुनासिब शख़्स की तलाश में कोई कोशिश न की। अगर यह सब इस्लामी तालीम के सच्चे मानने वाले होते, तो उन्होंने अपने ज़मीरों (अन्तःकरण) को तौला होता और सबसे अच्छे रहबर की तलाश करते, सभी इलाक़े और क़बीले के रिश्तों से ऊपर उठकर। यह अहम बात भुला दी गई और इसकी अनदेखी की गई। मक्के वालों के लिए मक्की सहाबा होना और मदीने वालों के लिए मदनी सहाबा होना, बेहतर समझा गया।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़र्ज़ कीजिए यह सब ख़ानदानी तास्सुब से पाक होते (तो भी) उन्हें मालूम होना चाहिए था कि सभी सहाबा इस्लाम समझने में बराबर तो न थे, और न तो इसका मतलब यह था कि उनमें से ज़्यादातर ऐसे थे कि जो असल व मुनासिब रहबर को इस कड़े वक़्त में चुन सकती थी। मिल्लत में बहुत से जाने माने लोग थे और शायद सहाबा में ज़्यादातर इन सब को काम करने वाला रहबर भी तसव्वुर करते थे। इनकी जानकारी उन लोगों के बारे में कम थी, और उनमें से कोई भी उनके बारे में इस क़दर नहीं जानता था कि उनमें से किसी सबसे अच्छे को चुन लिया जाता। सिर्फ़ नबी[स०] जानते थे कि उनमें से किसे किस दर्जे में रखें, और इस तरह वही उस दौर के लिए रहबरी के लिए सबसे ज़्यादा अच्छे फ़र्द को चुन सकते थे।

आइन्दा आने वाले संकट को देखते हुए नबी[स०] से उम्मीद थी कि वह इस नतीजे से छुटकारा दिलाएंगे, सबसे अच्छे रहबर को चुन कर, जो आप[स०] के बाद परेशानी के ज़माने में (बेहतरीन कारगर साबित हो)।

विल्सनः हम ने मान लिया कि आप ने जो पॉइन्ट्स (बयान किये), वह सब के सब दलील के साथ हैं, (लेकिन) यह तो यह साबित करते हैं कि नबी[स०] के लिए यह ज़रूरी था कि (अपने बाद के लिए) एक रहबर को मुक़र्रर कर दें। लेकिन इस से यह तो ज़ाहिर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नहीं होता कि उन्होंने दरअस्ल अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर भी कर दिया था। यह दलील देना यह बताता है कि नबी[स०] से यह उम्मीद थी कि वह मुसलमानों के लिए मुनासिब रहबरी का इन्तेज़ाम कर देंगे, और जैसा कि उम्मीद थी, उन्हें वैसा ही करना भी था। यह हमें यह नहीं बताता कि उन्होंने वाक़ई ऐसा किया भी। क्या होना चाहिए था और क्या हुआ, दोनों में साफ़ तौर से फ़र्क़ होता है।

यह भी है कि यूँ तो दलील पूरी तरह मज़बूत है, मगर यह हमें यह नहीं बताती कि नबी[स०] ने किसको (चुना और किसको) मुक़र्रर किया? यह अली[अ०] हो सकते हैं या अबूबक्र या फिर कोई और।

चिर्रीः शिया कहते हैं कि नबी[स०] ने दरअस्ल इस बड़े मर्तबे के लिए अली[अ०] को चुना, और उसका एलान उन्हें (अली[अ०] को) ईमान वालों का ''मौला'' कहकर कहा। अपने आख़िरी हज्ज से वापसी पर, नबी[स०] ने कई हदीसों के मुताबिक़ अपने सहाबा के बहुत बड़े मजमे को, जो उनके साथ-साथ था, बुलाकर एक बहुत ही ज़रूरी एलान किया (यह एलान जिस जगह पर किया गया उसका नाम ''ग़दीरे ख़ुम'' (ख़ुम का तालाब) था)। आप ने फ़रमायाः

''ऐ लोगो! वह वक़्त जल्द ही आया चाहता है कि मैं एक इलाही फ़रमान पाऊँगा, जिसका जवाब (मैं इस दुनिया से चले जाने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

से दूँगा) मुझ से सवाल किया जाएगा, और तुम से सवाल किया जाएगा। तुम क्या जवाब दोगे? उस मजमे ने जवाब दियाः ''हम गवाही देते हैं कि आप[स०] ने (अल्लाह का) पैग़ाम (हम तक) पहुँचा दिया और (इसके रास्ते में) जतन किये और यह कि आप[स०] अपनी कोशिशों में खरे और सच्चे थे, ख़ुदग़रज़ नहीं। नबी[स०] ने फ़रमायाः ''क्या यह सच नहीं है कि तुम गवाही दो कि कोई ईश्वर नहीं है सिवाए अल्लाह के (और) यह कि इसकी कि मोहम्मद[स०] उस (अल्लाह) के बन्दे और रसूल हैं, और यह कि उसकी जन्नत हक़ीक़त है, उसका जहन्नम भी हक़ीक़त है, और मौत बरहक़ है, मौत के बाद ज़िन्दा उठाया जाना भी सच है, हिसाब का दिन सच है, और अल्लाह उन लोगों को दोबारा ज़िन्दा करेगा, जो अपनी-अपनी क़ब्रों में हैं।''

मजमे ने जवाब दियाः ''जी हाँ! हम इसकी गवाही देते हैं।''

नबी[स०] ने फ़रमायाः ''ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना।''

इसके बाद नबी ने एलान किया अली[अ०] को मुक़र्रर करने का इस ऊँचे ओहदे पर। आप[स०] की तरफ़ से इस ऊँचे ओहदे पर मुक़र्रर करना एक क़ानूनी मंसब (पद) चाहता था। इसलिए आप[स०] ने उन्हें यह सच याद दिलाया कि क़ुरआन ने आप[स०] को मोमिनीन का सरपरस्त व वली (Guardian) होने का हक़ दिया है।

''ऐ लोगो! आप[स०] ने फ़रमाया ''अल्लाह मेरा मौला (वली) है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और मैं मोमिनीन का मौला हूँ, और मोमिनीन जानों पर ख़ुद उनके अपने हक़ से ज़्यादा हक़ रखता हूँ। जिसका मैं मौला हूँ, यह अली[अ०] भी (और उस वक़्त आप[स०] अली[अ०] का हाथ पकड़े हुए थे) उसका मौला है। ऐ अल्लाह! तू इसके (अली[अ०] के) दोस्त को दोस्त रखना, और इस (अली[अ०]) के दुश्मन से अपनी बरकत को हटा लेना।''

विल्सनः अगर नबी[स०] ने दरअस्ल अली[अ०] को मुसलमानों की रहबरी के लिए चुन लिया था, तो उन्हें मुसलमानों को इसके लिए (पहले से) तैयार करना चाहिए था, सिर्फ़ ज़बान से नहीं, बल्कि अपने इक़दाम से भी, ताकि उनके फ़ैसले को सब क़ुबूल कर लें। उन्हें माहौल को इस अहम मंसूबे के लिए तैयार करना चाहिए था। क्या नबी[स०] ने इस तरह का कोई काम किया था?

चिर्रीः शिया कहते हैं कि यही नहीं कि नबी[स०] ने अली[अ०] को मुक़र्रर (इस मंसब पर) कर दिया था, बल्कि अपने अमल/काम से भी आप (अली[अ०] के लिए इस मंसब को बताते रहे।

मुसलमान हिस्टोरियन इस बात पर एकराय हैं कि जब नबी[स०] सख़्त बीमार थे, तो आप[स०] को अपनी मौत आने का यक़ीन हो गया था। उस वक़्त आप[स०] ने मुस्लिम मुजाहिदों को उसामा इब्ने ज़ैद की अगुवाई में सीरिया (Syria) की सरहद की तरफ़ जाने का हुक्म दिया। अबूबक्र और उमर को भी हुक्म दिया कि वह उस फ़ौज के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

साथ जाएं। बड़े-बड़े सहाबियों में से सिर्फ़ अली[अ०] ही को मदीने में रहना था।

जबकि आप[स०] की हालत (मर्ज़ की वजह से) नाज़ुक होती जा रही थी, तो आप[स०] ने बार-बार दस्ता मुजाहिदों को हुक्म दिया कि वह मदीना छोड़कर जाएं। मगर अबूबक्र, उमर और दूसरे सहाबा मदीने ही में रहे, यह कहकर कि वह इस बात से नफ़रत करते हैं कि वह मदीने से बाहर जाएं, जबकि नबी[स०] इतने ज़्यादा बीमार हैं। नतीजे में सारा लश्कर मदीने ही के आसपास में रहा, यहाँ तक कि अबूबक्र ख़लीफ़ा चुन लिए गए। मुख़्तसर यह किः

ख़ुद नबी[स०] को अपनी वफ़ात के होने का एहसास हो गया था, उन्होंने अपने शान/राज चाहने वाले सहाबा से इस लम्बे सफ़र पर जाने को कहा, और अली[अ०] को अपने पास रखना चाहा। इन दोनों बातों को मिलाकर देखें तो यह ज़ाहिर होता है कि नबी[स०] यह चाहते थे कि आप[स०] के बाद अली[अ०] बिला मुक़ाबला मंसब (इमामत) पर आ जाएं।

विल्सनः बहरहाल यह मंसूबा कामयाब न होने दिया गया। अली[अ०] ने हुकूमत नहीं की, अबूबक्र ने हुकूमत की। उन्होंने सिर्फ़ हुकूमत ही नहीं की, बल्कि उमर को अपना वारिस (Successor) क़रार दिया। और फिर उमर ने उसमान को अपने बाद उनकी जगह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

लेने के लिए मुक़र्रर कर दिया। क्या हम इस वाक़िए से नतीजा निकाल सकते हैं कि सहाबा (में से कुछ ने) नबी[स०] की नाफ़रमानी (अवज्ञा) की और जानबूझ कर उनका कहना न माना?

चिर्रीः मेरा जवाब ''नहीं'' में है। अगर नबी[स०] की चाहत थी कि रहबरी को अली[अ०] के लिए महफ़ूज़ कर दें, और अगर इसको उन्होंने अपने सहाबा को साफ़ तौर से बता दिया था, तो हम यह कह सकते हैं कि सहाबा ने अनजाने में मामले की अहमियत को नहीं समझा, उन्होंने सोचा कि रहबरी एक वक़्ती मामला है, जिसमें उनको नबी[स०] की सिफ़ारिश को मानने और न मानने का इख़्तियार है और ख़ुद अपना फ़ैसले लेने का। नतीजतन उन्होंने (इस मामले में) अपना फ़ैसला ख़ुद किया.....

अब हमारा रवैय्या इस मामले की तरफ़ किसी भी तरह जज़्बाती नहीं होना चाहिए। हमें ''गिरे हुए दूध पर रोना नहीं चाहिए''। मामले का किसी सिम्त के साथ हो रहना कि कोई उसे वापस नहीं पलटा सकता। अली[अ०] और अबूबक्र दोनों वफ़ात पा गए और अपने मालिक से जा मिले, और उनकी ख़िलाफ़त का ज़माना पूरी तरह ख़त्म हुआ। इस पर कोई भी बहस इस से ज़्यादा नहीं कि इस्लामी हिस्ट्री के किसी दौर पर चर्चा हुई। ऐसी चर्चा मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम दोनों कर सकते हैं। इसका मक़सद किसी एक तरफ़ का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

साथ देने से नहीं है, बल्कि नतीजे तक पहुँचने या बिना किसी का पास लिए राय बनाने से है।

किसी भी तरफ़ (पार्टी) के लिए उलटा (निगेटिव) रवैय्या रखने से सिर्फ़ नफ़रत और मुसलमानों के बीच अलगाव पैदा होगा। यह बिला शक व शुब्हा अली[अ०] को बुरा लगेगा कि जिन्होंने अपना दावा छोड़ दिया और अबूबक्र की मदद की, ताकि मुसलमानों में अलगाव न हो। इस तरह का बटवारा अली[अ०] की ख़ातिर हुक्म लगाने वाला होगा, ख़ुद हाकिम से बढ़कर।

दूसरी तरफ़ ख़ुद सुन्नी भी पहले तीन ख़लीफ़ा की तरफ़ शियों के रवैय्ये से परेशान होने का हक़ नहीं रखते, क्योंकि इस्लामी तालीमात में से कोई भी इन तीनों में से किसी के मुख़ालिफ़ रवैय्ये पर रोक नहीं लगाती हैं। उनकी ख़िलाफ़त का क़ायदे से होना दीन में शामिल नहीं है, और इसका किसी का हक़ होना एक सियासी मामला है, दीनी नहीं। इस तरह के मामले में हर मुसलमान को अपना नुक़्त-ए-नज़र (Point of view) आप रखने का हक़ है, अलबत्ता बग़ैर इस्लामी तालीमात के ख़िलाफ़ जाते हुए.....

विल्सनः मुस्लिम राज्य (स्टेट) पर हुक्मरानी के मामले ने मुसलमानों के बीच सदियों तक चलने वाला एक बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा कर दिया होगा, मगर फिर भी जैसा कि आज मौजूद है, यह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इतना अहम नहीं है कि इस से मुसलमानों को फ़िरक़ों (Sects/धड़ों) में बाँटा जाए। सारा मामला सियासी लगता है, मज़हबी नहीं। यह तो उस वक़्त दीनी अलगाव हो जाएगा, जब दीन के बुनियादी उसूलों पर मुसलमानों के बीच अलगाव होगा, या फिर असल इस्लामी क़ानूनों पर। क्या सुन्नी और शिया इन बुनियादी उसूलों पर एकराय नहीं हैं? और क्या यह अलगाव इन सिम्तों में सियासी नुकत-ए-नज़र की वजह से है?

चिर्रीः सुन्नी और शियों में उसूले दीन पर कोई अलगाव नहीं है। वह सब क़ुरआन की सच्चाई और नबी[स०] की हदीसों पर यक़ीन रखते हैं, दीनी मामलात में अपने नज़रिये और नतीजे के लिए इन दोनों (क़ुरआन व हदीस) की तरफ़ जाते हैं। मगर इस्लामी क़ानूनों की कुछ तफ़सील पर दोनों में तालमेल नहीं है। ऐसे इख़्तेलाफ़ कुछ तो क़ुरआन पाक की कुछ आयतों के (मायनी) समझने और उनकी तफ़सीर में फ़र्क़ की वजह से हैं, और इसी तरह कुछ नबी[स०] की हदीसों को समझने और उनका मतलब निकालने में फ़र्क़ की वजह से हैं। इस्लामी क़ानूनों की तफ़सील में इख़्तेलाफ़ इन वजहों से हैः

1- क़ुरआन और हदीसों में हर बात के समझने के अलाहेदा-अलाहेदा बयानों का न होना।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

2- इन बयानों का साफ़ और वाज़ेह न होना, और इसकी वजह से उनका मलतब का एक से ज़्यादा तरीक़े से निकाला जा सकना।

3- दो हदीसों का एक-दूसरे से अलग होना और दोनों को नबी[स०] की हदीस कहा जाना।

क़ुरआन पाक की तफ़सीर में फ़र्क़ का एक नमूना, जिसकी वजह से नाइत्तेफ़ाक़ी होती है, यह हैः

सब मुसलमान में इस बात पर एका है कि नमाज़ के लिए वुज़ू किये होना ज़रूरी है और इस पर भी कि हमबिस्तरी (सेक्स) करने से वुज़ू टूट जाता है। मगर वह इस पर एकराय नहीं हैं कि सिर्फ़ जिस्म के मिलने से जैसे कि अगर मर्द व औरत एक-दूसरे से हाथ मिला लें, तो दोनों का वुज़ू टूट जाएगा या नहीं? इसकी वजह क़ुरआन की नीचे लिखी आयत की तफ़सीर में फ़र्क़ का होना हैः

(तर्जुमाः) ''ऐ ईमान वालो! तुम नशे की हालत में नमाज़ के क़रीब भी न जाओ, ताकि तुम जो कुछ मुँह से कहो समझो भी तो और न जनाबत की हालत में, यहाँ तक कि ग़ुस्ल कर लो मगर रास्ता चलने में (जब ग़ुस्ल मुमकिन न है तो अलबत्ता ज़रूरत नहीं है) बल्कि और अगर तुम बीमार हो (और पानी नुक़सान करे) या सफ़र में हो या तुम में से किसी को पाख़ाना निकल आए, या औरतों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

से सुहबत (सेक्स) की हो और तुम को पानी न मिल पाये (कि पाक हो जाओ), तो पाक मिट्टी पर तयम्मुम कर लो, (और इसका तरीक़ा यह है कि) अपने मुँह और हाथों पर मिट्टी भरा हाथ फेर लो। बेशक! अल्लाह माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है।'' (सूरए निसा, 4/43)

कुछ लोग ''मस'' (छू जाने) को लफ़्ज़ी तौर पर लेते हैं और यह समझते हैं किसी तरह से छू जाने से वुज़ू टूट जाएगा। जबकि दूसरे मसलक छू जाने को मुबाशिरत (सेक्स) के मायने में लेते हैं।

इस्लामी सोच के स्कूलों में इस्लामी क़ानूनों की तफ़सील में फ़र्क़ सिर्फ़ शियों और सुन्नियों ही के बीच नहीं है, बल्कि सुन्नियों में आपस में भी इस तरह का फ़र्क़ मौजूद है, और इसी तरह शियों में भी। मगर कुछ को छोड़कर कोई भी शिया नज़रिया ऐसा नहीं है, जो सारे सुन्नी नज़रियों से मुख़्तलिफ़ हो, और इसी तरह कोई सुन्नी नज़रिया नहीं है, जो सारे शिया नज़रियों से मुख़्तलिफ़ हो।

आप कोई भी सुन्नी नज़रिया या सोच लीजिए, तो ज़्यादा मुमकिन है कि आपको वही नज़रिया शिया नज़रिये के पल्ले का मिलेगा, और इसी तरह सुन्नी नज़रिया शिया नज़रिये का भी।

इस्लामी क़ानूनों की तफ़सील पर फ़र्क़ न होने ने मुसलमानों को फ़िरक़ों (धड़ों) में नहीं बाँटा, बल्कि उसने सोच के मुख़्तलिफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

स्कूल (School of thoughts) बनाए, जिन्हें हम ''मसलक'' या ''मज़हब'' कहते हैं। (मज़हब से मुराद राय या फ़तवा है, जिन्हें कोई क़ाबिल 'इमाम' देता है, जिसके अपने मानने वाले होते हैं, जो उसे इल्मे हुक़ूक़ (हक़ का इल्म) और इस्लामी क़ानून में एक बड़ा माहिर मानते और जानते हैं)। इन मज़हबों में हैं मालिकी, हनफ़ी, शाफ़ई, हम्बली, जाफ़री और ज़ैदी।

यह सब मज़हब क़ुरआन और नबी की हदीसों की बुनियाद पर फ़तवे देते हैं। ऊपर वाले मज़हबों में से पहले चार (मालिकी, हनफ़ी, शाफ़ई और हम्बली) सुन्नी कहे जाते हैं और बाक़ी दो (जाफ़री और ज़ैदी) शिया।

शिया और सुन्नी सोच के उसूलों में इतना फ़र्क़ नहीं है, जितना कि सुन्नियों में ख़ुद आपस में है। सियासी लगाव ने सुन्नी सोच के स्कूल को शिया सोच के स्कूल से दूर कर रखा है, और इसीलिए उन्हें भी।

विल्सनः आपकी बात ने यह साफ़ कर दिया कि दोनों (शिया-सुन्नी) में बहुत कम यानी थोड़ा सा फ़र्क़ है। कुछ तो कोशिश की जाना चाहिए उलमा की तरफ़ से, ताकि दोनों फ़िरक़े एक साथ आ जाएं और आपस में सुलह व अमन के साथ रहें।

चिर्रीः इस्लाम की हिस्ट्री में, जैसा कि है, कई बार यह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कोशिश की गई है कि फ़र्क़ को ख़त्म कर दिया जाए, मगर कोई चाहा नतीजा न निकला। इस नाकामी को मुख़्तलिफ़ वजहों से वाबस्ता किया जा सकता है। इनमें शामिल हैंः सदियों से चला आ रहा बेरवादारी का माहौल (बेलोच रवैया), ज़ालिम ख़लीफ़ा का वुजूद, जो एक फ़िरक़े को तो अपने क़रीब रखते थे लेकिन दूसरे पर ज़ुल्म करते थे, इसलिए कि वह उन ख़लीफ़ा के ख़िलाफ़ अपनी राय रखता था, और मामलात में उनकी सोच का ग़लत अन्दाज़ भी।

हमारा ज़माना एक दूसरा ज़ज़्बा रखता है, और ख़िलाफ़त बीस्वीं सदी के शुरु में ख़त्म हो चुकी है। हमारे लिए यह ज़रूरी है कि सोच का सही (पाज़िटिव) अन्दाज़ अपनाएं, और सारे मामलात का (सुलह व अमन और भाईचारे की ख़ातिर) नये सिरे जायज़ा लें।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस्लामी मेल के लिए लेखक की कोशिश

विल्सनः मैंने सुना है कि आप ने मध्य पूरब (Middle East) का सफ़र किया और 1951 में शेख़ुल अज़हर (अज़हर युनिवर्सिटी के चांसलर) से मुलाक़ात की और कोशिश की कि दोनों तरफ़ वालों में मेलमिलाप हो जाए। मैं चाहता हूँ कि इस अहम बात पर आप हमें कुछ और बताएं।

चिर्रीः पहली जुलाई 1959ईस्वी को मैंने शेख़ुल अज़हर, शेख़ मोहम्मद शलतूत (अल्लाह तआला उनकी रूह पर रहमत नाज़िल फ़रमाए) से मुलाक़ात की। इस मुलाक़ात का मक़सद मुख़्तलिफ़ इस्लामी सोच के स्कूलों के बीच दूरी और बटवारे के मसले पर बात करना था, (इसलिए कि) उनके बीच इख़्तेलाफ़ को मुस्लिम दुनिया में एक अहम मसला समझ जाता है। मैं जाफ़रिया मज़हब के मुताल्लिक़ उनके ख़याल को जानना चाहता था कि वह ख़ुद इस स्कूल से वाबस्ता न थे। मगर ख़याल था कि इस मज़हब के तईं उनके पाज़िटिव ख़यालों से दोनों मज़हबों (सुन्नी व शिया) के बीच नुक्ता मेल का पॉइन्ट हाथ आएगा, क्योंकि ज़्यादा तर शिया जाफ़री सोच

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

स्कूल से ताल्लुक़ रखते हैं।

मैंने जब उन से सवाल किया कि क्या वह जाफ़री तालीमात को ख़ुद अपनी तालीमात के बराबर समझते हैं, तो उनका जवाब हाँ में था। इस पर मैंने उन से निवेदन किया कि आप इस अहम मामले में मुस्लिम दुनिया को अपने नज़रिये से आगाह फ़रमा दें, क्योंकि जाफ़री और सुन्नी मज़हब में एके का एलान शेख़ुल अज़हर की तरफ़ से, मेरे अन्दाज़े के हिसाब से, कम से कम नज़रियाती तौर से एक अहम एलन होगा। मैंने उन से कहा कि इस तरह का एलन सुन्नी फ़िरक़े को एतेदाल (बीच का रवैया) की तरफ़ ले आएगा, क्योंकि आप उनकी नज़र में बहुत बड़े इख़्तियार वाले हैं। और इस एलान से शिया ख़ुश हो जाएंगे। शिया न तो कोई रिआयत चाहते हैं और न कोई बरतरी, वह चाहते हैं बराबरी का दर्जा।

यह एलन इस्लाम की हिस्ट्री में अपने तरीक़े का पहला था। यह उस सवाल के जवाब में हुआ था, जो उनकी ख़िदमत में पेश किया गया था, और जिसका एलान 6 जुलाई 1959 को हुआ था। इसको मुस्लिम मुल्कों में बहुत ख़ुशी से वेलकम कहा गया।

इस एलन (Declaration) का तर्जुमा, जो मिस्री और लेबनानी प्रेस में प्रकाशित (छपा) हुआ था, नीचे हैः

आली जनाब (महोदय) (शेख़ुल अज़हर, शेख़ मोहम्मद

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

शलतूत) से पूछा गयाः

कुछ लोग कहते हैं कि मज़हबी तौर से कामिलन मज़हबी दिलबस्तगी और आमाल के लिए मुसलमानों को चार (इस्लामी) मज़हब, हनफ़ी, शाफ़ई, हम्बली और मालिकी में से किसी एक को मानना चाहिए। उनमें दो शिया मज़हब -इमामिया(जाफ़री) और ज़ैदी- शामिल नहीं हैं। क्या आप इस नुक़्त-ए-नज़र से बग़ैर किसी शर्त के मुत्तफ़िक़ (एकराय) हैं, और (या क्या आप) मुसलमानों को राय देते हैं कि वह इस्ना अशरी इमामिया मकतबे (जाफ़रिया) का इत्तेबा (Follow) न करें।[6]

आली जनाब (शेख़ शलतूत) ने (नीचे लिखे पॉइन्ट्स को अपने फ़तवे में भूमिका (Preface) के तौर पर लिखा, जो उनके जवाबों का आख़िरी हिस्सा है):

1- क्या किसी ग़ैर मुजतहिद को (जो इसका इस्तेहक़ाक़ (पात्र होना) नहीं रखता कि इस्लामी क़ानूनों पर अपनी राय या अपना फ़तवा निकाले), इसकी इजाज़त है कि वह उलमा (इस्लामी विद्वान) में से किसी की राय को माने, जिसके इल्म और पाकी में यक़ीन हो, इस शर्त के साथ कि इस तरह की राय उसके मानने वालों तक सही

---

[6] यह उस मज़मून का तर्जुमा है, जो अल-कफ़ा (एक लेबनानी अख़बार) में जुलाई 1959ईस्वी में शाया हुआ था।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और तक़रीबन तय तरीक़े से, सीधे या वास्ते (माध्यम से) पहुँचती हो? हमें किताबों में दर्ज किसी इस ख़याल से वास्ता नहीं होना चाहिए, जो यह दावा करे कि (कि वह चारो मज़हब ही हैं, जिन पर अमल करना है, और यह भी कि इसकी इजाज़त नहीं है कि कोई शख़्स एक मज़हब को छोड़कर दूसरा अपना ले।

शेख़ इज़्ज़ुद्दीन बिन (सुपुत्र) अब्दुस्सलाम ने कहा हैः मुसलमान इस्लामी क़ानूनों की इत्तेला के बारे में पूछा करते थे, किसी भी आलिम (मुसलमान विद्वान) से, जिस से कभी भी वह मिलते थे, इस बात से नज़र हटा के कि वह किस सोच के स्कूल से वाबस्ता है? इत्तेला हासिल करने के इस तरह के तरीक़े को कभी भी (मुस्लिम विद्वानों ने) ग़लत नहीं ठहराया, यहाँ तक कि यह (चारो) सोच के स्कूल अपने मानने वालों के साथ ज़ाहिर हुए, जो इतने हो गये कि (कहा कि) एक मज़हब के मानने वाले अपने इमाम (रहबर) का कहा मानेंगे, हालाँकि उसकी राय किसी भी गवाही/दलील के न भी बनती हो (तो भी)। उन्होंने उसको माना, जैसे कि वह कोई रसूल हो या नबी। यह सच और हक़ से मुँह फेर लेना है। इसे समझदारों को (कभी) क़ुबूल न करना चाहिए।

2- लफ़्ज़ ''शिया'' जिस से अली[अ०] (बिन अबू तालिब) के फ़ालोवर (Follower) जाने जाते हैं, लफ़्ज़े ''मुशअ्-इया'' ये निकाला

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

गया है, जिसके मायनी हैं ''मानना'' (और अमल करना)। इसलिए वह शिया वह है, जो उनका मानने वाला और उनकी तालीमात पर अमल करने वाला हो। यह नाम (शिया) बहुत से गिरोहों को दिया गया है, जो इस्लाम के कई अक़ीदों और बुनियादी उसूलों से एक नहीं हैं। इस गिरोह की तालीमात पर अमल करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि वह इस्लाम के घेरे से बाहर हैं।

3- दूसरे गिरोह भी हैं, जो अली[अ०] से वाबस्ता हैं, और यह उनके पूरी तरह से सीख लिए हुए और हक़ पर बेहतरीन चलने वाले शिया हैं, जो बहके-भटके लोगों की मुख़ालिफ़त करते हैं और उनको बुरा कहते हैं। उनमें से अच्छे शिया भी हैं, जिनको बहैसियत एक गिरोह के ''जाफ़री'' या ''शिया इस्नाअशरी'' कहा जाता है।

4- यह मशहूर गिरोह उन उसूलों पर चलता है, जो अल्लाह की किताब (क़ुरआन) से और रसूल[स०] की तालीमात से निकाले गये हैं, जो उन तक उनके इमामों के ज़रिये, एतेक़ाद के बुनियादी उसूलों और इस्लामी क़ानून दोनों की सूरत में पहुँचे। जाफ़री और सुन्नी स्कूलों में फ़र्क़ इस से ज़्यादा नहीं है, जितना कि ख़ुद सुन्नी सोच स्कूलों के बीच है। वह (जाफ़री सोच स्कूल के चलने वाले) इस्लाम के बुनियादी उसूलों में एतेक़ाद (विश्वास) रखते हैं, जैसा कि उन्हीं पर ईमान क़ुरआन में और नबी[स०] की तालीमात में बयान किया गया

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

है। इसके अलावा वह उन तमाम उसूलों पर यक़ीन रखते हैं, जिनका शामिल होना दीने इस्लाम में ख़ुद से ज़ाहिर है, और जिनका मुसलमान होने के लिए जानना और मानना ज़रूरी है, क्योंकि उनके इनकार करने की सूरत में मुसलमान इस्लाम से ख़ारिज (बाहर) समझा जाएगा।

5- इस्लामी क़ानूनों की रू से इन जाफ़री शियों का मज़हब पूरे-पूरे तौर से दर्ज है, और जाना माना जाता है। इनकी अपनी किताबें हैं, रावी हैं, (जिन्होंने नबी[स०] व इमामों की हदीसों को बयान किया है), और उनका फ़ेवर की गवाहियों को भी। इन किताबों के लिखने वाले और उन किताबों के भी, जिन से उन्होंने (हदीस) ली हैं, जाने माने लोग हैं। और उनके आलिमाना और फ़िक़्ही मर्तबे की मुसलमान विद्वान (उलमा) इज़्ज़त करते हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

एलामिया (Declaration)

इन तावीलों (मतलबों) से यह ज़ाहिर होता है किः

1- इस्लाम अपने किसी मानने वाले से यह नहीं कहता कि किसी एक ख़ास इस्लामी मज़हब के चलने वाले (Follower) बन जाओ। इसके बरअक्स, वह हर मुसलमान को हक़ देता है कि वह शरा (इस्लामी क़ानून) से सही तौर पर बतलाया गया मज़हब इख़्तियार करे, जिसके फ़तावा उनकी अपनी किताबों में दर्ज हैं। हर एक के लिए इसकी भी इजाज़त है कि वह (अपने सोच के स्कूल को छोड़कर जिसे वह मानता है) किसी और सोच स्कूल को अपना ले (अगर अपना ले) तो इस अमल से वह कोई गुनाह नहीं करता है।

2- जाफ़री सोच स्कूल, जिसे इस्ना अशरी इमामी शिया की तरह भी जाना जाता है, एक पक्का मज़हब है। लिहाज़ा इसकी तालीमात की रू से अल्लाह की इबादत करने की इजाज़त है, उसी तरह से जिस तरह से दूसरे सुन्नी मज़हब में (इसकी इजाज़त है)।

3- मुसलमानों को इस मसले को जानना चाहिए और उन्हें किसी ख़ास मज़हब के मुताल्लिक़ अपनी कम-समझी को छोड़ देना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

चाहिए। अल्लाह का दीन और उसके बताए हुए क़ानून किसी ख़ास मज़हब की न तो पैरवी करते हैं, और न तो मजबूर हैं (कि ऐसा करें) कि किसी ख़ास मज़हब की पैरवी (Follow) करें। उन मज़हबों के सब बुनियादी मुजतहिद हैं (जो फ़तवा देने की सलाहियत रखते हैं), जो अल्लाह के इनाम पाने वाले हैं, जिन्हें वह पसन्द फ़रमाता है। ग़ैर मुजतहिद के लिए उनकी पैरवी करने की इजाज़त है, और उनकी तालीमात पर अमल करने की, चाहे वह अक़ीदत से (मानने वाली बात) हो या फिर मामलात (अमल करने वाली बात) की (अहमियत) की रू से।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

उर्दू मुतर्जिम के बारे में

प्रोफ़ेसर शाह मोहम्मद वसीम, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी में कामर्स फैकल्टी के डीन (Dean) और कामर्स डिपार्टमेन्ट के हेड रह चुके हैं। इसके अलावा आप Master of Tourism Administration (M.T.A) कोर्स के क्वारडीनेटर भी थे। इस से पहले आप लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में कामर्स डिपार्टमेन्ट के हेड थे। आप Economics के अलावा इस्लामियात मय इस्लामी इकानामिक्स पर लिखते रहते हैं। इन पर आपकी कई किताबें छप चुकी हैं, प्रोफ़ेसर वसीम ख़ासकर नहजुल बलाग़ा पर लिखते हैं। Socio-economic Justice with Reference to Nahjul Balaghah आपकी यह किताब इमामिया सेंटर, मेरीलैण्ड, अमेकिा से शाया हुई इसके अलावा आपके दो किताबें Trade with Reference to Nahjul Balaghah और Dignity of Labour in Nahjul Balaghah भी शाया हो चुकी हैं। नीज़ Good Governance: Message of Nahjul Balaghah छापे में है।

Presented by: https://jafrilibrary.com